मिथिला मिलन

मिथिला मिलन

(मैथिलीक पहिल संपूर्ण पत्रिका)

संपादक : डॉ. चन्द्र मोहन झा
प्रबंध संपादक : श्रीमती इन्दुरानी झा
कार्यकारी संपादक : सतीश वर्मा
सहायक संपादक : प्रेमशंकर झा 'पवन'

वर्ष : 1, अंक : 1

संपादकीय संपर्क
डॉ. चन्द्रमोहन झा
के-15ए, कैलाश कॉलोनी
दिल्ली-1100048

संपादकीय कार्यालय
ग्रैजुएट स्कूल ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन
एचएस-02, सेक्टर-अल्फा-2
ग्रेटर नोएडा-201308 उत्तर प्रदेश
ई. मेल : mithilamilan9@gmail.com

सहयोग राशि : एक प्रति 20 टाका
सदस्यता शुल्क : वार्षिक: 200 टाका (डाक खर्च सहित)
सदस्यता शुल्क: द्विवार्षिक : 400 टाका (डाक खर्च सहित)
सदस्यता शुल्क: आजीवन : 1000 टाका (डाक खर्च सहित)
समस्त भुगतान मनीऑर्डर/ मल्टीसिटी चेक/ RTGES/ NEFT/ गूगल पे/ फोन पे अथवा अन्य कोनो भी ऑनलाइन पेमेंट गेटवे सँ कएल जा सकैत अछि।

आवरण चित्र : इंटरनेट सँ साभार
रेखाचित्र साभार : अनुप्रिया, अपाला वत्स

प्रकाशक-मुद्रक : जीएसबीए, ग्रेटर नोएडा द्वारा प्रकाशित आ मुद्रित।

अनुक्रम




शुभकामना संदेश आ फेसबुकिया डाक

'मिथिला मिलन' पत्रिकाक योजना पैघ अछि। सफलताक कामना करैत छी।

-उदय चंद्र झा विनोद, रहिका (मधुबनी)

'मिथिला मिलन' पत्रिकाक प्रकाशनक समाचार के स्वागत आ अशेष शुभकामना!

- गंगेश गुंजन, नई दिल्ली

'मिथिला मिलन' पत्रिका के सफलतापूर्वक प्रकाशन के कामना करैत छी

-महेन्द्र, सहरसा

कोरोना महामारिक मध्य 'मिथिला मिलन' पत्रिका के प्रकाशनक साहसिक चेष्टा करबाक लेल संपादक महोदय श्रीमान चन्द्र मोहन झाजी के बहुत बहुत धन्यवाद। संगहि मिथिला मैथिलीक संवर्धन लेल हिनका द्वारा कयल प्रयास के सराहना करैत छी जे विपरीत कालो में प्रयासरत छथि।

- डॉ. ललन कुमार झा,
सेवा निवृत्त डिप्टी डायरेक्टर, शिक्षा विभाग, दिल्ली

बहुत प्रसन्नता के बात जे 'मिथिला मिलन' त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सँ भ' रहल अछि। एही लेल धन्यवाद के पात्र छथि श्रीमान चन्द्र मोहन झाजी जे मिथिला मैथिलीक लेल सतत प्रयासरत रहला संगहि समय-समय पर अपना माटि, अपन भाषा के विकासक लेल प्रयास करैत रहलाह। हमर शुभकामना जे एहिना मिथिला मैथिली के विकास लेल समर्पित रहथि जाहि सँ नवका लोक अपना भाषा के महत्व के बुझय आ मैथिली भाषा के सतत विकास होइत रहय। जय मिथिला जय मैथिली!

- शम्भू नाथ मिश्र, *संस्थापक, अध्यक्ष,*
मिथिला कोशी विकास समिति, हटनी, मधुबनी

पत्रिकाक योजना पढ़ल। योजना आ सपना, दुनू साकार हो, कामना अछि सतीश जी।

- बिभूति आनंद, *दरभंगा*

वाह! मान' पड़त जे योजना बहुत नीक आ स्वागत-योग्य अछि। मैथिलीक एखनुक कमी कें पूरा करयबला! स्वागत आ शुभकामना!

-रमेश, वाराणसी

'मिथिला मिलन' पत्रिकाक प्रकाशनक स्वागत अछि। पत्रिकाक प्रकाशन मे निरंतरता बनल रहय से कामना करैत छी।

-केदार कानन, *किसुन कुटीर, सुपौल*

पत्रिका योजना नीक अछि। सफल हो तकर शुभकामना। संगहि एकटा निवेदन सेहो जे एहि पत्रिका मे बाल कथा लेल सेहो स्तंभ देल जाय।

- नारायण झा, *मधुबनी*

पत्रिकाक योजना धमगज्जर अछि। योजना सफल हुअय, से कामना करैत छी।

- रमण कुमार सिंह, *गाजियाबाद*

'मिथिला मिलन' पत्रिकाक स्वागत अछि। हार्दिक शुभकामना।

- दिलीप कुमार झा, *मधुबनी*

'मिथिला मिलन' पत्रिकाक प्रकाशनक समाचार सुखद अछि। पत्रिकाक संपादकीय मंदल कँ हार्दिक बधाइ आ शुभकामना।

-विभा कुमारी, *मधुबनी*

वाह! 'मिथिला मिलन' पत्रिकाक योजनाक पाछाँ विजन बहुत पैघ अछि। विजन साकार होइ तेही लेल कामना करैत छी।

- रोमिशा, *नई दिल्ली*

संपादकीय



ई बड्ड प्रसन्नताक विषय अछि जे अपने सभक समक्ष 'मिथिला मिलन' मासिक पत्रिका प्रस्तुत क' रहल छी। मन मे ई बात बहुत दिन सँ अंकुरित छल, जे हम सब मिथिला वासी जे अपन परम पवित्र मिथिला भूमि छोड़ि आजीविका, पढ़ाई, व्यापार आदि जे भी कोनो कारणवश बाहर छी हुनका सभ केँ मिथिला स' संबंधित सब समाचार कम से कम मासो दिन मे भैटेत रहबाक चाही आओर जे सभ प्रवासी बनि गाम घर सँ दूर छी हुनका सभकँ एक-दोसरा के बीच संबंध, संपर्क बनल रहबाक चाही। संसार मे एहन कोनो समाज नहि अछि जाहि मे ओ सभ अपन जन्मभूमि (अपन समाज) सँ दूर भेल होथि आ हुनका सभक बीच पत्रिका, सामाजिक लेन-देन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, अपन आचार-विचार, संबंध जोड़नाइ, जन्म-मरण, उपनयन, विवाह आदि सामाजिक समारोह मे सम्मिलित वा संगठित नहि रहैत छथि। यानि सभ कियो कतबो दूर छथि तैयो मिलन बनल रहैत अछि। अपना सभ के जे कमजोरी हुअय ओहि मे एकटा इहो अछि जे अखबार या पत्रिका के माध्यम स' जुड़ल नहि रहैत छी। जखन कि हम सभ सामाजिक संबंधक निर्वाह करैत छी। फर्क एतबे अछि जे आब एहन तरहक सामाजिक कार्यक्रम मे हमर सभक जुड़ाव अपन दर-दियाद वा अपन दोस्त-महिम मे सीमित भ' क' रहि गेल अछि। हम सभ बाहरो मे एक-दोसर सँ जुड़ल रही तकर बड्ड आवश्यकता अछि। समाजक, देशक जरुरति हमेशा परिवर्तनशील छैक। कियो कतेको बड़का राजनीतिज्ञ, बड़का ऑफिसर भ' जाइत छथि तथा नौकरी करबाक दौरान सामाजिक आयोजन मे समय नहि द' पबैत छथि या समाजक लोक कँ हीन बुझैत छथिन या हमेशा डर बनल रहैत छनि जे कियो पैरवी वला आबि क' तंग करताह, जाहि मे घर अयनाइ, ऑफिस जेनाइ, पाइ मंगनाइ या हमर गाम-घरक स्थिति के दोसर के बतेनाइ, झूठ या सच कोनो उपकार के कहि जुड़य, दूरस्थ संबंध जोड़ब यानि अनेक तरहक बात होइत छैक जे हुनका सभ के पसिन्न नहि रहैत छैन्हि। जँ रिटायर भेलाक बाद कियो फेर सँ समाज सँ संबंध जोड़य के प्रयास करितो छथि त' ओ संभव नहि भ' पबैत छै। हुनक जीवन एकाकी भ' क' रहि जाइत छै आ विडंबना जे मृत्युक समय सिर्फ अपन धिया-पुता अथवा किछु दोस्त-महिम मदद लेल ठाढ़ रहैत छथि। ई बड्ड दयनीय आ विचित्र स्थिति अछि। जखन कि गाम-घर मे हम मैथिल एक-दोसर सँ ततेक घनिष्ठता सँ जुड़ल रहैत छलहुँ, जे ककरा घर मे आइ की भोजन, पनपियाइ बनतैक एक-दोसरा कँ बुझल रहैत छल आ सभक घरक सुआद एक-दोसर के कहियो ने कहियो भेटैत रहैत छलैक।

सामाजिक दूरी मोनक दूरी सेहो बनबैत अछि। आइ अपना समाज मे किछु विसंगति बढ़ि क' भयावह भ' रहल अछि। जाहि मे समय पर उपनयन संस्कार नहि होयब, बाहर शहर मे कोनो तरहें श्राद्ध-कर्म निपटा देब तथा ब्राह्मण भोज के बदला मे किछु दान करबाक चलन या जकरा-तकरा खुआ दियौक। महानगर मे एहि सभ नव चलन कँ कारणें परंपराक ह्रास त' भइये रहल अछि संगहि उनटा प्रभाव सेहो पड़ि रहल अछि। अहु स' बड़का समस्या आइ अपना समाज मे योग्य वर-वधुक विवाह समय पर नहि होयबाक, अयोग्य सँ विवाह वा अन्य जाति, वर्ण या अन्य वर्ग मे विवाहक बढ़ि रहल प्रचलन बड्ड दुखदायी भ' रहल अछि। जखन कि हमर कन्या सभ आइ बड्ड योग्य बनि नाम आ पाइ कमा रहल छथि। करियरक उच्च आयाम पर लड़का-लड़की अपन झंडा फहरा रहल छथि। मुदा महानगरक जिनगी मे एकटा व्यवस्थाक अभाव मे योग्य बर-कनियाक विवाह संभव नहि भ' रहल अछि। जखन कि हम सभ मिथिलावासी माँ मैथिली यानी सीताजीक धरणी छी जे हमर बेटी, बहिन बनि अहि समाज के सबसँ उच्च स्थान दियौने छथि, जे लक्ष्मी के अंश रहि साक्षात भगवान रामक (विष्णुजी) अर्धांगिनी बनि हमरा सभक मान बढ़ौने छथि। अपन समाज मे अनगिनत वैज्ञानिक, लेखक, कवि, दर्शनशास्त्री, महामहोपाध्याय, अधिकारी, राजनीतिज्ञ आ समाजसेवी भेलथि जे मिथिलाक मान बढ़ौने छथि जाहि मे मंडन-भारती मिश्र, अयाची मिश्र आ विद्यापति साक्षात भगवान सदृश भ' भगवान महादेव सँ सेवा लेने छथि।

मिथिलाक अपन परंपरा, अपन आचार-विचार, अपन संस्कृति, अपन प्रतिष्ठा बनल रहय ताहि सबके भागीरथ प्रयासक आवश्यकता अछि। जतेक बेसी सहयोग, अपनत्व बढ़ा सकी ताहि लेल मिथिला मिलन पत्रिका प्रकाशित भ' रहल अछि। जाहि मे (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली) के सभ मैथिल चाहे ओ कोनो वर्ण, वर्ग आ समाज के होथि से सब अपन सहयोग क' क' एहि पत्रिका मे प्रकाशित विषय वस्तु सँ फायदा उठाउ। अहि पत्रिका मे देसकोस, गामघर, लोकवेद, मिथिलाक कथा, कविता, गाम विशेष, स्थान विशेष, व्यक्ति विशेष, पाबनि-तिहार, ज्ञान-विज्ञान, हंसी ठठ्ठा आओर विशेष रुप सँ मिथिलांचलक प्रवासी जे दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र मे छथि, हुनक बालक-बालिकाक विवाहक लेल बर-कनियाक 10 टा परिचयक संग मेट्रीमोनियल संगहि मृत्यु, श्राद्ध कर्म, उपनयन संस्कार, विवाह आ धार्मिक आयोजन सभक सामयिक चर्चा संभव होयत। मिथिला सँ जुड़ल नेपालक विशेष समाचार एवं सामग्री के सेहो राखबाक प्रयास अछि।

ई मासिक पत्रिका अपने सभ के सुहायत आ पसिन्न पड़त त' अपन 'मिथिला आवाज' दैनिक समाचार पत्र सेहो भविष्य मे निकालबाक प्रयास कयल जा सकत। आशा अछि जे ई मासिक पत्रिका समयानुसार अपने सभ सुधी पाठकक हाथ पहुँचि जाय। ई पत्रिकाक मूल्य महज 20 रुपया राखल गेल अछि आ हमर प्रयास रहत जे भविष्यो मे कम से कम मूल्य पर पत्रिकाक पहुँचि संभव होय। ई एकटा नव मंच बनत जे भविष्य मे मिथिलावासी कँ संपूर्णता प्रदान करत।

अहींक

–डॉ. चन्द्रमोहन झा

देसकोस

कियैक क्रैश भेल सीडीएस बिपिन रावतक हेलीकॉप्टर?

क्रैश होबय सँ ठीक 8 मिनट पहिने की भेल छल?

देशक पहिल सीडीएस बिपिन रावतक हेलिकॉप्टर कियैक क्रैश भेल छल ओकर वजहक पता चल गेल अछि। तीनू सेनाक जांच रिपोर्टक नतीजा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह कँ सौंप देल गेल अछि आ पूरा घटनाक्रम बता देल गेल अछि। ओना आधिकारिक रूप सँ एहि जांच रिपोर्टक मादे नहि त' एखनि धरि सेना अथवा रक्षा मंत्रालय दिस सँ बताओल गेल अछि जे किछु जांच रिपोर्ट के बारे मे लिखल जा रहल अछि ओ मीडिया रिपोर्ट्स आ सूत्रक हवाले सँ लिखल जा रहल अछि। सूत्रक हवाले सँ जे बात सोझां मे आबि रहल अछि ओ ई बताब' लेल काफी अछि जे हेलीकॉप्टर क्रैश होबय सँ ठीक 8 मिमट पहिनेक अवधि मे की भेल छल।

सूत्रक हवाले सँ जे रिपोर्ट आबि रहल अछि ओकर मुताबिक कुन्नूर के पास प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) बिपिन रावत कँ ल' जाइत काल वायु सेनाक हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होबाक मामला मे कोनो तकनीकी गड़बड़ी अथवा साजिश नहि भेल छल। खराब मौसमक कारण कंट्रोल्ड फ्लाइट इनटू टेरेनक (सीएफआईटी) स्थिति कँ घटनाक मुख्य वजह मानल गेल अछि। बता दी कि 8 दिसंबर के भेल एहि हादसा मे सीडीएस रावत समेत 13 लोगक मौत भेल छल। गौरतलब अछि जे सीएफआईटी सँ आशय एहेन परिस्थिति सँ अछि जखन दुर्घटनाक काल विमान पर नियंत्रण त' रहैत अछि मुदा खराब मौसम अथवा पायलटक त्रुटि के कारण कोनो विमान जमीन, पानी या अन्य अवरोधक सँ टकरा जाइत अछि। सूत्रक मुताबिक जांचकर्ता सभ रूस मे निर्मित दू टा इंजन वला एमआई-17 वी-5 हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होमय के पाछां कोनो तरहक तकनीकी गड़बड़ी आ साजिश सँ सेहो इनकार करैत अछि। ई हादसा तखन भेल छल जखन आठ दिसंबर के सुलूर एयरबेस सँ वेलिंगटन के लेल हेलीकॉप्टर उड़ान भरने छल।

दुर्घटना से पहिने स्थानीय लोक सभ जे वीडियो बनौने छलाह ओहि स' पता चलैत अछि जे हेलीकॉप्टर कम ऊँचाई पर उड़ैत छल। हेलीकॉप्टर वेलिंगटन मे अपनी निर्धारित लैंडिंग से लगभग आठ मिनट पहिने दुर्घटनाग्रस्त भ' चुकल छल। सूत्रक मुताबिक जांच



दल संभावित मानवीय त्रुटि सहित दुर्घटनाक लेल सभटा संभावित परिदृश्यक जांच करने छथि। ई सेहो पता लगायल गेल अछि जे की ई चालक दल द्वारा कोनो चूकक मामला त' नहि थिक?

तारीख 8 दिसंबर, दिन बुधवार। ककरा पता रहे जे ई तारीख भारत के इतिहास के सबसे मनहूस तारीख बनि जाइत। सौंसे दुनिया स्तब्ध। देशक पहिल सीडीएस जनरल बिपिन रावत अपन पत्नीक संग बुधवार के सुलुर एयरबेस से वेलिंगटन लेल एयर फोर्स के डप-17अ5 हेलिकॉप्टर से उड़ान भरलक। किछु कालक बाद हेलिकॉप्टर कुन्नुर के नंजप्पाचतिरम में भीषण हादसाक शिकार भ' गेल. एही चॉपर क्रैश में रावत समेत हेलिकॉप्टर में सवार 14 लोगों मे से 13 लोगक मौत घटना स्थल पर भ' गेल। हेलिकॉप्टर के उड़ा रहल एयर फोर्स के ग्रुप कैप्टन वरुण सिंह अंत-अंत धरि अस्पताल में जिंदगीक जंग लड़ैत रहलाह आ अंतत ओह सेहो वीरगति क' प्राप्त भेल।

सीडीएस जनरल बिपिन रावत समेत कतेक क' उड़ान पर ल जाई वला एयर फोर्सक हेलिकॉप्टरक हादसाक शिकार भेलाक बाद बहुत रास सवाल सभ उठ रहल अछि। की सीडीएसक उड़ान सँ पहिने एयरफोर्स ने फ्लाइट्स रूट्स के रेकी करायल गेल छल? सुलुर एयरबेस सँ जुड़ल एक अधिकारी के मुताबिक, प्रोटोकॉल के तहत एयर फोर्स क दु टा छोट-छोट हेलिकॉप्टरों के नीलगिरी मे मौसमक जायजा ओहि रुट पर भेजल गेल छल। जाहि बाटे सीडीएस कँ उड़ान भरबाक छल। नाम जाहिर नहि केबाक शर्त पर एकटा अधिकारी अखबार टाइम्स ऑफ इंडिया के बतेलक जे हम निश्चित तौर पर नहि बता सकैत छी जे ओ दूनू टा हेलीकॉप्टर विलिंगटन हैलीपैड लैंड करलक या बिना लैंड कयने वापस चलि गेलि।

पैघ लापरवाही अथवा मानवीय भूल

एयर फोर्सक रिटायर्ड अधिकारी एस. रमेश कुमार के मुताबिक, आम तौर पर राष्ट्रपति या प्रधानमंत्रीक दौराक ऐन वक्त पहिने मुख्य हेलिकॉप्टर के संग-संग 4 हेलिकॉप्टर उडैत छै। कुमार एयर फोर्स के अपन अधिकारियों के जरिए एहि बातक पुष्टि क' लेने छल जे सीडीएस के हेलिकॉप्टर पहने रूटक रेकी के लिए कोनो अन्य हेलिकॉप्टर उड़ान भरल वा कि नहि. लेकिन एकर पुष्टि नहि भ' सकल । रमेश कुमार हादसाक पांछा मानवीय भूल के आशंका के बतबैत अछि। ओ कहैत छथि , 'Mi-17v5' कँ एकटा अनुभवी पायलट उड़ा रहल छल। हेलिकॉप्टर तकनीकी रूप सँ बहुत ही अडवांस्ड छल आ हमरा संदेह मानवीय भूलक वजह सँ एतैक पैघ हादसा भैलै। ओ कहैत छथि जे भ' सकैत छै कोहरा या बाल असामान्‍ से ज्यदा घना भ' गेल होय। मुदा एहन तरहक परिस्थिति मे पायलट के पलक झपकते फैसला ले पड़े छै। भ' सकैत अछि जे पायलट सँ फैसला लेबा मे गलती भेल हो।



दुर्घटना मे क्षतिग्रस्त भेल हेलीकॉप्टर

एयरफोर्स अधिकारी कुमार घोषणा कयने छथि जे हेलिकॉप्टरक ब्लैक बॉक्स मिल गेल अछि। आबि एहि सँ जानब आउर ज्यादा स्पष्ठ आ क्लीयर भ' जाइत जे अंतिम समय मे आखिर की भेल छल। ओ कहैत छथि कोहरा या बादल सामान्यसँ बेसी घना रहल हो। पायलट कँ पलक झपकैत फैसला लेबाक चाही से नहि लेल गेल। फैसला लेबा मे गलती भेल। एयरफोर्स अधिकारी कहैत छथि जे हेलिकॉप्टरक ब्लैक बॉक्स मिल गेले। आब एहि सँ जानब मुमकिन हैइत जे आखिरी वक्त मे हादसाक वक्त की भैल हैते।

'वीडियो सँ लगैत अछि जे मौसमक वजह से भेल हादसा'

रमेश कुमार हादसा के पांछा मानवीय भूल के आशंका के बता रहल अछि। लेकिन एविएशन सिक्योरिटी कंसल्टेंट मोहन रंगनाथनक आशंका एहि सँ अलग छै। रंगनाथन कहैत छथि, 'हम हेलिकॉप्टर के आखिरी समय के वीडियो को बड्ड ध्यान सँ देखने छियै।' रमेश कुमार हादसाक पांछा मानवीय भूल के कहतै छथि। मुदा एविएशन सिक्योरिटी कंसल्टेंट मोहन रंगनाथनक आशंका एहि सँ अलग अछि। रंगनाथन कहैत छथि जे हम हेलीकॉप्टर के आखिरी समयक वीडियो कँ काफी इत्मीनान सँ देखल गेल अछि। एहि वीडियो के कोनो टूरिस्ट रिकॉर्ड कयने छल। जे सोशल मीडिया पर खूब वायरल भेल। कोहरा बहुत घना छल आ हैलीकॉप्टर बहुत नीची नीचा सँ उड़ि रहल छल।

उपरोक्त स्टोरी सूत्र आ विभिन्न मीडिया आउटलेट्सक रिपोर्ट्स पर आधारित खबर सँ बनायल गेल अछि। उल्लेखनीय अछि जे सीडीएस बिपिन रावत हेलीकॉप्टर क्रैश जांचक कोनो आधिकारिक रिपोर्ट नहि त' सेना द्वारा आ नहि रक्षा मंत्रालयक अधिकारी द्वारा मीडियाक समक्ष पेश कयल गेल अछि।

❑ मिथिला मिलन डेस्क

देसकोस

दरभंगा एयरपोर्ट सँ भेटल मिथिला कें समृद्धि आ विकास के पांखि

दरभंगा एयरपोर्ट उड़ान सेवाक साल भरि पूरा भेल अछि। साल भरिक अंदर दरभंगा एयरपोर्ट नव कीर्तिमान स्थापित क' लेने अछि। पिछला साल 8 नवंबर क' एहिठाम स' उड़ान सेवा शुरू भेल छल। एतबा कम समय मे एहि एयरपोर्ट मे सभटा सुविधा सब उपलब्ध नहि होबाक बादो दरभंगा एयरपोर्ट अपन नाम कतेक रास उपलब्धि दर्ज क' लेने अछि। रीजनल कनेक्टिविटी स्कीमक अंतर्गत देश मे दरभंगा सहित 63 शहर मे एयरपोर्ट खोलल गेल छल। एहि 63 एयरपोर्ट्स में यात्रीक अयबा-जयबा के मामला मे दरभंगा हवाई अड्डा नंबर वन पर बनल अछि। दरभंगा एयरपोर्ट पैसेंजरक मामला मे देशक नव बनल तिरसठों एयरपोर्ट्स कें पाछू छोड़ देने अछि।

मोदी सरकार मे रीजनल कनेक्टिविटी स्कीमक अंतर्गत देश भरि मे कुल तिरसठ टा नवका एयरपोर्ट खुजल छल। दरभंगा एयरपोर्ट सँ 8 नवंबर 2020 के उड़ान सेवाक शुरुआत भेल छल। सभटा तिरसठ नव एयरपोर्टर्सक तुलना मे दरभंगा अयबा-जयबा वला यात्रीक संख्या सबसँ बेसी रिकॉर्ड केल गेल अछि। पिछला 11 महीना मे एहि एयरपोर्ट स' तकरीबन छह लाख यात्री टेक ऑफ आ लैंड कयने अछि। एहि एयरपोर्ट सँ प्रतिदिन 2000 स 2200 यात्री आबैत-जायत अछि। एहि एयरपोर्ट स' नॉर्थ बिहारक 18 जिला आ नेपालक यात्रीक



सेहो कनेक्टिविटीक सुविधा भेटैत अछि।

दरभंगा मे एकटा नव कमर्शियल हब एयरपोर्ट के आस-पास दिल्ली मोड़ पर विकसित भ' रहल अछि। एयरपोर्ट के दुई किलोमीटर के अंदर जमीनक भाव आसमान छू रहल अछि। दिल्ली मोड़क आसपासक जमीनक भाव प्रति बीघा चारि करोड़ पार क' गेल अछि। ई बदलाव डेढ बरिसक अंदर भेल अछि. एहिठाम जमीन दु सँ तीन बेर खरीदल आ बेचल जा रहल अछि। पांच बरिस पहले 14-15 कट्ठा वला जमीन 40 स 50 लाख मे बिकैत छल। एखनि ई इलाका नगर निगम मे शामिल नहि अछि। अधिकांश जमीन सभ मुजफ्फरपुर -दरभंगा हाइवे बनलाक बाद स्थानीय कारोबारी खरीदने छल। आब इयहे सभ कारोबारी बाहरी निवेशक सभ कँ ऊंचा दाम पर बेचि रहल अछि। आब छोट-मोट व्यवसायी ओहि इलाका मे दुकान बनेबाक लेल जमीन खरीदबाक स्थिति मे नहि अछि। दरभंगाक व्यवसायी अजय कुमार पोद्दार कहैत छथि जे दिल्ली मोड़ सँ सटल इलाका सभ में जमीनक दाम प्रति बीघा चार करोड़ धरि पहुंच गेल अछि। एहिठाम सबसँ ज्यादा प्रतिस्पर्धा होटल उद्योग स्थापित करबाक लेल भ' रहल अछि। एहिठाम पहिल पैघ होटल एहि बरिस खुजल अछि। पैघ होटल ग्रुप आ चेन एहिठाम सर्वे क' चुकल अछि। शहर मे अचानक सँ नव धनाढ्य वर्ग अस्तित्व मे आबि गेल अछि। दरभंगा एयरपोर्टक पूरा इलाका वासुदेवपुर पंचायत मे अबैत अछि। अलीनगर, झरियाही,रानीपुर, विशनपुर, आलमगंज, मौलागंज, शिवधारा, मद्दी बाजार, चक जमाल, भरियाही आदि इलाका सभ मे जमीनक कीमत बेतहाशा भागि रहल अछि।

दरभंगा सँ हवाई सेवा शुरू भेलाक बाद सिटी ट्रांसपोर्ट खास क' टैक्सी सेवाक बिजनेस मे 300 फीसद के बढ़ोत्तरी भेल अछि। एकदम ओला कैब एग्रीगेटर के तर्ज पर दरभंगा सँ शुरू कयल गेल 'आर्या गो' कैब सर्विस एकर बेहतरीन उदाहरण अछि। स्थानीय स्तर पर टैक्सी सेवा देबय वला कतेक छोट-मोट ब्रांड सभ खुजि रहल अछि। सभसँ बेसी रोजगार एहि सेक्टर मे बढि रहल अछि। ओहिठाम दरभंगा एयरपोर्टक आसपास स्टैंडर्ड थ्री स्टाइल आ फाइव स्टार होटल खोलबाक लेल सेहो कतेक रास आवेदन सभ आयल अछि। दरभंगा एयरपोर्ट पर करीब 80% कर्मचारी स्थानीय छथि आ एयर हॉस्टेस सेहो स्थानीय।

दरभंगा नगर निगमक उप महापौर रहि चुकल बदरे आलम कहैत छथि जे हवाई सेवा शुरू भेला स जमीनक दाम मे इजाफा स्वाभाविक अछि। ओ कहैत छथि जे दरभंगाक जतेक मातबर लोग सभ बाहर बसैत छलाह, धंधा करैत छलाह से वापस दरभंगा घुरि रहल छथि। ओ सभ एहिठाम रहि क' आब होटल, टैक्सी आ टूरिज्म इंडस्ट्रीज में पैसा लगा रहल अछि। कियो सोचबो नहि करने छल जे कहियो दरभंगा सन छोट शहर सँ हवाई सेवा शुरू भ' सकैत अछि। जँ शुरुओ होयत त' पैसेंजर मिलत की नहि मिलत एहि पर असमंजस बनल छल। मुदा सभटा अनुमान आ आशंका सभ ध्वस्त भ' गेल। दरभंगा स' नहि सिर्फ उड़ान शुरू भेल बल्कि दनादन चलि पड़ल। एकर सभसँ पैघ असर भेल जे दरभंगा अंचल के कारोबार मे 80 स 100 करोड़ रुपये प्रति मासक बढ़ोत्तरी भ' गेल। दरभंगा शहर आ ओहि आसपासक स्थानीय व्यापार मे सालाना 1200 करोड़ के बढ़ोत्तरी के अनुमान कयल गेल अछि। व्यापारक बढ़ोतरीक दर सालाना 15 सँ 20 प्रतिशत तक आंकल गेल अछि। व्यापारक जानकार आ मार्केट एनालिस्टक मोताबिक हवाई सुविधा शुरू भेला सँ पटना बाद अब दरभंगा प्रदेशक सबसँ पैघ ट्रेड हब के रूप मे विकसित होयत। जानकारक मोताबिक दरभंगाक अर्थव्यवस्था उपभोग आधारित अर्थव्यवस्था अछि। बाजार मे एतेक पैसा अयलाक बाद नहि सिर्फ रोजगार बढ़त बल्कि उद्यमी सभक लग निवेश करबाक लेल पूंजी सेहो आयत। दरभंगा एयरपोर्ट स' सिर्फ दरभंगे टा नहि बिहारक अन्य शहरक उत्पाद आ बाजार के सेहो लाभ भेट रहल अछि। प्रदेश मे भागलपुर सिल्क आ सूत्री वस्त्रक कारोबारक सबसँ पैघ सेंटर मुजफ्फरपुर अछि आ दरभंगा ई दुनू शहर के व्यापार के बढ़ेबा लेल हवाई रुट द रहल अछि। दरभंगा एयरपोर्ट खुजला सँ बिहारक आर्थिक तरक्की मे आब संतुलित विकास संभव भ' सकत।

50 हजार लोग हर मास रोजी-रोटीक लेल भरि रहल अछि दरभंगा सँ उड़ान

दरभंगा एयरपोर्ट सँ कॉमर्शियल फ्लाइट शुरू होयबाक बाद एखन धरि छह लाख से बेसी यात्री सफर क' चुकल छथि। एहि मे सँ 33 फीसदी यात्रीक संख्या ओहि युवक सभक छै जे विभिन्न शहर मे रोजी-रोटी आ नौकरी लेल फ्लाइट पकड़ैत छथि। यात्री सभ सँ कयल गेल बातचीतक आधार पर एकटा आकलन के मोताबिक हर दोसर युवक पहिल बेर धर सँ बाहर रोजी-रोटी लेल निकल रहल अछि। एहि तरहें देखी त' करीब सवा लाख जुबक मे करीब 50% जुबक पहिल बेर रोजी-रोटी कमेबा लेल फ्लाइट पकड़ने छथि। रोजी-रोटी कमेबा लेल बाहर शहर गेल जुबक प्रत्येक मास जँ अपन घर पांचो हजार रुपया पठाबैत छथि त' महीना मे करीब 30 करोड़ आ साल भरि मे लगभग 3.60 अरब रुपया बिहारक घर पहुंचत।

दरभंगा स' हवाई सेवा शुरू होयाबाक बाद मिथिला क्षेत्रक प्रसिद्ध स्थानीय उत्पाद कँ राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय बाजार भॉब शुरू भ' गेल अछि। उदाहरण के लेल मुजुफ्फरपुरक शाही लीचीक पहिल सीजन मे दरभंगा हवाई अड्डा सँ एहि साल 35 टन शाही लीची दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद आ बेंगलुरु भेजल गेल आ ओहिठाम सँ अंतरराज्ट्रीय बाजार सेहो। दरभंगा एयरपोर्ट अथॉरिटीक मुताबिक जेना ही कार्गोक अतिरिक्त सुविधा भेटे लागतै दरभंगाक प्रसिद्ध माछ आ ताराबाई पान के सेहो देश-विदेशक बाजार भेटब शुरू भ' जतै। एहि सँ सीधा तौर पर दरभंगा अंचलक हजारो-हजार परिवार के आर्थिक आय मे बढ़ोत्तरी होयबे लागतै आ हुनक कमाई बढि जयते।

भारत सरकार आ एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया जँ सही

तरीका सँ कार्य योजना बनाबै त' आबे वला दिन मे मिथिलांचल सँ मखानाक निर्यात सौंसे दुनिया मे भ' सकत। एहिठाम बता दी कि कोरोना काल मे नरेंद्र मोदी सरकार देशक अर्थव्यवस्था के मजगूत करबाक वास्ते कतेक आर्थिक प्रोत्साहन स्कीमक ऐलान कयने छल। जाहि मे 10,000 करोड़क खाद्य प्रसंस्करण उद्योग सेहो शामिल छल। फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री मे मखानाक नाम सबसँ उपर मे अछि। दरभंगा एयरपोर्ट शुरू भेला सँ मखानाक खेती आ कारोबार सँ जुड़ल लोग बड़ उत्साहित छथि। भुवन सराओगीक दरभंगा मे मखानाक फैक्ट्री अछि जाहिठाम मखानाक प्रोसेसिंग स ल क सफाई, पैकिंग आ सप्लाई धरि होइत छै। भुवन सराओगी पहिने बंबई मे काज करैत छलाह आ आब बंबई सँ वापस घर घुरि दरभंगा मे मखानाक एग्रो बेस्ड फैक्ट्री लगौने छथि। भुनव कहैत छथि जे पहिने दरभंगा सँ एयरपोर्ट नहि रहलाक कारणे मुंबई आ दिल्लीक पैकार आ व्यापारी कँ सीधा दरभंगा आबे मे काफी परेशानी होइल छल मुदा आब मुंबई आ आन पैघ शहरक व्यापारी सीधे दरभंगा उतरैत छथि आ मखानाक डील करैत छथि। मखाना आब देशे नहि विदेश सेहो भेजल जा रहल अछि। भवन कहैत छथि जे मखानाक 90 फीसदी खेती बिहार मे होइत अछि। बिहार मे खास क' मिथिलांचल आ सीमांचल मे। दरभंगा, मधुबनी, पूर्णिया, किशनगंज, सीतामढ़ी, कटिहार, सहरसा, सुपौल आ अररिया मे सबसे बेसी मखानाक खेती होइत अछि। मखानाक कारोबार सँ जुड़ल जानकार कहैत छथि जे प्रत्येक साल एहि इलाका मे 25 हजार मैट्रिक टन मखानाक उत्पादन होइत अछि। तकरीबन 300 करोड़ रुपये का सालाना कारोबार मिथिलांचल आ सीमांचलक मखानाक अछि।

दरभंगाक लेल शुरू भेल हवाई उड़ान सँ संपूर्ण मिथिलांचल मे मरीज सभ के आब बेहतर चिकित्सकीय सुविधा भेटे लागल अछि। दिल्ली आ गुरूग्राम सँ नामी-गिरामी डॉक्टर आब दरभंगा आबि रहल अछि। एखनि हुनक आयब-जायब मास मे एक बेर भ रहल अछि। ओना किछु निजी अस्पताल आ क्लिनिक बाहर सँ डॉक्टर महीना मे मरीज के हिसाब सँ दू सँ तीन बेर आबि रहल अछि। कठिन ऑपरेशन आ गंभीर बीमारीक इलाज आब दरभंगा आ मधुबनी मे आसानी सँ संभव भ' रहल अछि। हाले मे सुनीता नामक एकटा महिलाक कैंसरक इलाज पटनाक एक प्रतिष्ठित संस्थान मे चल रहल छल। हुनक अचानक हालत बिगड़ल त' दरभंगा मे स्थानीय चिकित्सक के सलाह पर गुडगांव स' आयल एकटा कैंसर स्पेशलिस्ट डॉक्टर हुनक इलाज कयलनि त' पता चलल कि महिला क कैंसरक बीमारी नहि छल। परीक्षण मे पता लागल जे हुनका टीबीक बीमारी छल। दरभंगाक डॉक्टर डॉ. मृदुल कुमार बतबैत छथि जे कठिन सँ कठिन रोग मे आब परामर्शक लेल बाहर शहर सँ स्पेशलिस्ट डॉक्टर सभ कँ बुलायब आसान भ' गेल अछि।

दरभंगा यूनेस्को क्लबक पूर्व अध्यक्ष आ मिथिलांचल चैंबर ऑफ कॉमर्स के सचिव विनोद कुमार पंसारी कहैत छथि जे दरभंगा मे एम्सक स्थापनाक कवायद शुरू भ' गेल अछि। एम्स बनलाक बाद दरभंगा शहरक एरिया 17 स 20 किमीक दायरा मे आउर बढि जायत। एहि तरहे ई शहर आब दु टा नदी बागमती आ कमलाक बीच मे आबि जायत। पंडासराय स' एयरपोर्ट तक के कुल लंबाई 17 किलोमीटर अछि। वर्तमान मे लहेरियासराय स' दिल्ली मोड़क एरियल दूरी 13 किलोमीटर अछि। जौं नगर दरभंगा आ लहेरियासराय के बाद आब एयरपोर्ट बनला सँ आब दरभंगा मे तेसर उपनगर बसि रहल अछि।

दरभंगा सँ एहि शहर के लेल अछि हवाई सेवा-अहमदाबाद, बेंगलुरु, हैदराबाद, दिल्ली, कोलकाता आ मुंबई।

आबे वला समय मे एहिठाम नाइट लैंडिंग समेत ओ तमाम सुविधा उपलब्ध होयत जे इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर रहैत अछि।

❑ **मिथिला मिलन डेस्क**



कथा

मोनक पार न पयलहुँ

बिभूति आनंद



कथा-उपकथाक अंतर्गत एहि बेर साहित्य अकादमी पुरस्कृत मैथिलीक शीर्ष कथाकार विभूति आनंदक कथा 'मोनक पार न पयलहुँ' मिथिला मिलनक पाठक लेल जा रहल अछि। बिभूति आनंद एहि बीच लगातार प्रेम कथा मे नव प्रयोगक लेल चर्चित भ रहल छथि। उम्रक ढलान पर हुनक अंतर्मन मँ अंकुरित होइत प्रेमक बीज हमरा सभ कँ आश्वस्त करैत छथि जे प्रेम सँ बढि क दुनिया मे आउर किछु न होइत अछि। प्रस्तुत अछि हुनक कथा-मोनक पार न पयलहुँ।

-संपादक

दोस्त चलि गेल। मोन नहि लगैत अछि। असलमे मोने चलि गेल, तँ मोनक गप ककरा सँ करितहुँ!

ओकरा गेलाक बाद नहि जानि किएक, सानिया मैडम बराबर फोन करैत छलीह, 'कहाँ छी?'

''एत्तै छी!''

''कोनो काज मे बाझल छी?''

''नै!''

''त'' आउ ने!''

''जी, आबै छी...''

आ हम चलि जाइ। मैडम असगरे बैसलि रहथि। ठोर पर मुस्की अनैत आँखि सँ बैसबाक संकेत करथि। मुदा हम हुनक आँखिकँ नहि पढ़ी, बिहुँसैत बैसि जाइ।

फेर हम अपन शैली मे पूछि बैसी, ''कोनो काज!''

''नै, कोनो काज नै, ओहिना मोन पड़ि गेलौं!''

''धन्यवाद!''

फेर किछु नहि। चुप। हम सोची जे तखन किए बजौलनि! ओना झूठ किएक कहब, आयब आ बैसब नीक लागय- ''त'' आइ-काल्हि की सभ चलि रहल छै!'' ओ एकाएक पूछि देथि।

''की चलत, दोस्ते नै रहल!'' हम बाजी।

''ठीके, हमरो केहनदन लगैए...''

बस। तकर बाद आर कोनो किछु नहि। ओ ओहिना बैसल रहथि। सोचथि। की सोचथि, पता नहि। हमहूँ सेहो ओहिना बैसल रही। आ से किएक, पता हमरो नै किछु बुझाय!''

फेर बैसल-बैसल किछु मोन पड़ि आबय आ सहसा उठि जाइ, ''चलै छी!''

''आँ!'' ओ जेना कतहु हेरायल सन रहथि। फेर बाजथि, ''ठीक छै।''

आ हमरा संग ओ सेहो उठि ठाढ़ भ' जाथि। हम टोकि दियनि, ''ओह नीक नै लगै छै, अहाँ बैसू मैडम!...''



ओ हमरा आँखि आ ठोर, भरिसक दुनू सँ मुस्किया क' देखथि। तैयो हम गौर नहि करी, आ बेलागि निकलि जाइ। फेर नीक लागय बाहरक फुलवारी, ओहि महक रंगबिरंगा फूल, फेर गाछ-वृक्ष...

आ हुनकर ई बजयबाक, फेर दुनू गोटेक चुप सन बैसल रहबाक क्रम, सतत चलैत रहल। हँ, जीवनक इहो एक अलग अनुभव रहल...

मुदा आइ कोनो काज नहि अछि। ओना काज सन काज

तहियो कहाँ रहय! मुदा नोकरी मे छी, ई बुझाइत रहैत रहय। आब तँ जगैत-सुतैत बस अपन अतीत केँ मोन पाड़बाक अतिरिक्त आर किछु नहि बँचल अछि। से एकबैग सानिया मैडम मोन पड़ि अयलीह, आ फेर वएह सभ सोच' लगलहुँ कि आखिर किएक बजबैत रहथि! आकि हमहीं किएक चलि जाइत रही!

फेर सोचलहुँ, अपन दोस्त सँ फोन क' क' मोनक एहि द्वंद्व केँ साफ क' ली! मुदा नहि कयलहुँ। सोचिये क' रहि गेलहुँ। ओ बहुत शक्की अछि। नहि जानि की-की सभ ने सोच' लागय...

मुदा बहुत समयक बाद आखिर ओकरा सँ भेंट करय ओकर घर पर चलि गेलहुँ। चाय-बिस्कुट सभ भेलै। एहि बीच गप-सपक क्रम सेहो चलैत रहलै। कि ताही बीच सहसा हमर मुँह सँ मैडमक प्रसंग निकलि गेल, ''अरे यार तोरे से एक बात पूछे के रहा...'

''का!'

''तुम्हरे जाने के बाद मैडम हमरे बरोबर बुलाबे। हम जाते भी रहे, पर हुआँ ऊ अकेली बइठी मिले! आँख के इशारे से बस बइठे के कहे। पर काम कुच्छो न...'

हमर बात सुनि ओ हँसय लागल। फेर बाजि पड़ल, ''तू सही मे सब दिन का बेलूरा रह गया...'

आ हमर मुँह सँ एकबैग निकलि गेल, ''का!...' आ फेर तँ हम अवाक् रहि गेलहुँ।



काफी देर धरि ओतय रहलहुँ। फेर निकलि पड़लहुँ। कनी-कनी फूही से होबय लागल रहै। मौसम एकाएक नीक भ' गेल रहै। अकास कारी-कारी मेघ सँ भरि गेल रहय। ओना कखनो-काल सूर्ज ओहि मेघ केँ हटाक' अपन अस्तित्वक बोध सेहो करा देल करय...

मुदा मौसमक एहि सुखद सौंदर्यकेँ देखितहुँ हम स्वयं केँ अंदर सँ खुश नहि राखि पाबि रहल रही। दोस्त तेना क' क' ने बुरबक बना देलक जे भरि रस्ता मोन संग मैडम घुरिआइत रहलीह।

फेर तँ हम घर पहुँचि बिना ककरो सँ किछु बजने अपन रूम मे आबि गेलहुँ। एतय, अपन एकांत मे आबि ई मोन मुदा बदलय लागल, आ सोचबाक लेल जेना विवश होब' लगलहुँ।

ई मोन बेस चंचल होइत अछि। तें एकर क्षेत्र काफी पसरल रहैत छै। हमरो मोन भावुक रहल अछि। कखनो, कनियों तँ बहकल होयत!

आ एना क' सोचैत अपन अतीतकेँ खँघारबाक कोशिश कर' लगलहुँ। हमरासँ कत'-कत' आ केहन-केहन गलती भेलय। ई गलती, की सही मे गलती रहय, आकि मोनक स्वाभाविक उड़ान रहै! आकि प्रेम करब अधलाह रहै! फेर सोचलहुँ, मनुष्य छी तँ किछु गलती भेले हैत। आ जँ नहि तँ ईश्वर होइतहुँ! मुदा हम ईश्वर नहि छी...

मैडम गौण भ' गेल छलीह आ मोन मे बहुत रास बिसरल दिन सभ आबि-जा रहल रहय। शुरू मे छब्बीस जनवरी पर प्रति वर्ष ''स्पोर्ट्स'क आयोजन भेल करय। छात्र-छात्रा सभहक द्वारा पूर्ण तन्मयता सँ ओकर तैयारी कएल जाय। सभहक-सभ ''प्रैक्टिस'मे जुटल रहय। सभ केँ पुरस्कार आ सर्टिफिकेटक ललक होइक।

वर्ष कोन रहै, मोन नहि अछि। तीन बहिनी छलि। दू इंटर आ एक ग्रेजुएशनक। जेना क्लासमे तेज स्टूडेंट पर टीचर सभक नजरि होइत रहनि, तहिना स्पोर्ट्स मे सेहो ट्रेनर आकि कोच केँ नीक खेलाड़ी सभपर ध्यान देबय पड़ै। एकटा लड़की छलि नेहा। नीक दौड़ैत छलि। स्वभाविके, हमर ध्यान ओकरा पर अधिक रहय।

ओना खेलाड़ी सभ मे सेहो आपस मे ईर्ष्या होइत छै। ओहि तीनू मे सँ सभ सँ छोट झीनी सतत हमर निकट रहय चाहय। ओ काफी मुँहफट आ चंचल छलि। ओना सही बात ई रहै जे हम ओकरा बच्ची बूझि किछु अधिक छूट द' देने रहिऐ।

एक दिन एना भेलै जे प्रैक्टिस शुरू भ' चुकल रहै। नेहा किछु विलम्ब छलि। से लगै जेना सभक नजरि ओकरेपर रहै। हम सेहो थोड़ेक चिंतित रही। समय बहुत कम बचल रहै.

कि झीनी केँ नजरि पर पड़लै। ओ हमरे लग चुलबुल-चुलबुलक' रहलि रहय, एकाएक एटम बम जकाँ ब्रस्ट क' गेलि, ''सर सर, आपकी हिरोइन!...'

एना भेलै कि तखन तँ हम अवाक् रहि गेलहुँ, आ झीनी केँ हल्लुक सन पीठ पर मारि डँटलहुँ, ''बेवकूफ लड़की, चल भाग हियाँ से! का-का बोल जाती है!...' चंचला ओ, ओकरा कोनो टा अन्तर नहि पड़लै, हँसैत अपन टीम दिस चलि गेलि...

मुदा झीनी जाइत-जाइत हमरा एना छूबि गेलि कि अनायास हम स्वयं केँ नेहाक निकट बूझ' लगलहुँ। लाग' लागल, बिनु ओकर हम अपूर्ण छी! हम पूर्णतया ''ट्रांस' में आबि गेल रही...

सोचैत रहलहुँ जे ई प्रेम केहन बोध छै, कि जाहि मे एक-दोसरक हृदय समान रूप सँ धड़कैत रहैत छै! मिलनक मनोरथ अधीर होइत

रहैत छै। प्रेमी केँ प्रेमिकाक अनुपस्थिति सहन नहि होइत छै। आ यदि ओ सोझा होइ, तँ फेर समयक होस नहि होइत छै...

फेर एहि मामिलामे अपनाकेँ राखि सोची जे हम कत' छी! प्रेमक रोग तँ भेल रहै हीर-राँझा, लैला-मजनूं, सिरीं-फरहाद आ नहि जानि आर कतेक केँ। हम सभ तँ मात्र वंशकेँ बढ़ब' वला प्रेम करैत छी!

तँ की नेहा? धत्! हम ई की सोचि गेलहुँ! हम तँ एहन डरपोक रहलहुँ जे ई सभ अंदरे-अंदर जीबैत रहलहुँ आ एखनो तकर प्रतिफल सोचैत घमा जाइत छी...

मुदा नहि तँ, भरिसक नेहाक मोन मे सेहो कतहु-किछु चलि रहल छलै! ओ जखन कखनो एसगर मे देखय, बिहुँसि उठय। से सहजे हमहूँ संग द' दिऐ, ''कैसी हो!'' आ फेर तँ मोन टीसय लागय, एकरा संग कतहु एकांत जीबितहुँ!

सच मे, ई प्रेम भला काल-पात्र कि लोक-लाज किएक सोचय। स्वयंकेँ कंट्रोल करब ओकर बस मे नहि होइत छै, प्रेम तँ बस एक-दोसर मे समा जाय चाहैत अछि। आब देखनिहार भले संकोच सँ ठिठुरि ने किएक जाय, प्रेम कयनिहार तकर परवाह नहि करैत अछि...

से नोकरीये एहन रहय कि जाहि मे एहि तरहक हवा-बयार बहिते रहैत रहै आ जकर कोनो लेखा नहि राखी। तखन एहने सन किछु...

ओ नेहा आइ हमरा दूर अपन पति संग स्वप्नक घर सजा चुकलि अछि। आब तँ हम मोनो नहि होयबै। एहि जीवन केँ तँ बचपना बूझि बिसरियो गेल हैत.

से आब सोचैत छी, ओ सभ मोन पाड़ि क' अपन एहि प्रेमी-हृदय केँ जरयबा सँ की लाभ! फेर सोचैत छी, अरे नः, ई लाभ-हानि सँ सर्वथा फराक विषय अछि!

सच कही तँ हमरा ककरो सँ ने तँ द्वेष रहय, आ ने तँ एहन काजे करैत रही। आ से ई हमरा बारे मे आम धारणा रहय! तें तँ हम सदिखन खुश रहल करी। हँ वएह बुरबकै वला खुशी! माने हम बुरबक रहि खुश रहल करी...

एही स्वभावक कारण शिक्षक सँ ल' क' लड़का-लड़कीक प्रियपात्र बनल रही। लड़की सभ तँ हँसिये-हँसी मे हमरा संग की सँ की क' देल करय, आकि कहि देल करय। आ हम लाचार, हँसि क' सभ केँ डँटैत अपन हृदय जुरा लेल करी...

जेना एकदिन ड्रेसक संग कबड्डीक तैयारी चलि रहल रहय। किछु तँ तैयारो भ' गेल रहय, तँ किछु ''फिनिशिंग टच'मे रहय। जे तैयार रहय, ताहि मे एक टा गीतांजलि रहय। ओना तँ ओ गंभीर रहय, मुदा ओहि दिन बाजि उठलि, ''सर आप बहुत स्मार्ट लगते हैं!''

, ''तो?' हम बिहुँसैत पुछलिऐ.

, ''मैं भी बनना चाहती हूँ!''

, ''तुम तो खुदे स्मार्ट हो!''

, ''सर आप जैसी नहीं!''

फेर हम की बजितहुँ, कान पकड़ि कहि उठलहुँ, ''पगलिया, भागती हो कि नै!...'

एहिना एक घटना आर मोन पड़ल। मैदानमे बैसल रही। सभ



खेला रहल रहय। ताही घड़ी मे एकटा नब लड़की पिहू हमर सोझा आयलि आ बाजलि, ''सर!''

, ''हाँ!''

, ''मैं भी प्रैक्टिस करूंगी! यहाँ आपका बहुत चलता है...'

हम हल्लुक मूड मे आबि गेलहुँ, बजा गेल, ''मेरे अंदर पहिया लगा है का!''

आ ओत' बैसल आर-आर स्टूडेंट्स हमर बात सुनि हँसि पड़लि, जाहि पर ओ सुंदर सन लड़की थोड़ेक खौंझा सन सेहो गेलि रहय...

खैर हम ओकरा ओकर ड्रेसक बारे मे पूछि, दोसर दिन सँ प्रैक्टिस लेल आब' कहि देलिऐ.

''सर मैं ठीक से खेलना भी नहीं जानती!'' ओकर जिज्ञासा बनले रहलै.

''अरे बाबा पहले तुम आओ तो पहले! फिर अच्छी तरह खेलने लगोगी!''

आ प्रैक्टिस मे दोसर दिन सँ ओ आबय लागलि। ओ पूर्णतः काँच रहय। से हम ओकरापर विशेष ध्यान देब' लगलिऐ। दस दिन बाद रिजल्ट आयब शुरू भ' गेल। नीक प्रदर्शन करय लागल छलि.

बाद मे तँ हम ओकर प्रसंशक बनि चुकल रही। सदिखन हमर ठोर पर पिहूक रंग रहय, आ जाहि सँ आन लड़की सभमे डाह सेहो शुरू रहै। मुदा ओ लड़की एहन कि ओकर सभक कोनो चिंता कएने हमरे संग जुड़लि रहय। पिहूक ई स्वभाव हमरो नीक लागय.

से सही मे अंदरे-अंदर हम पिहूक प्रति ''सॉफ्ट' होबय लागल

रही। मुदा हमर घरक परिवेश एहन रहय कि एहि सँ आगू बढ़ि पायब हमरा लेल संभव नहि छल। से अंततः घेरा सँ बाहर जा नहि सकलहुँ। आ जे नीके भेल।

किएकि ओही समय ओकरा प्रसंग एक असंभावित घटना सँ पाला पड़ि गेल रहय। कड़क केर ठंढ पड़ि रहल रहै। बहुत कम स्टूडेंट्स आबि सकल रहै।

ओही समयमे कोनो लड़का हमरा कान मे आबि बाजल, ''सर सर, रूम टेन मे कुछ गड़बड़ है!...'

हम तँ हड़बड़ा गेलहुँ आ ओकरा ओतहि रुकबाक लेल कहि संबंधित रूम दिस जेना दौगि पड़लहुँ। भरिसक अंदरक लड़का केँ भनक लागि गेलै। हम रूम तक पहुँचै वला रही कि ओ, जे एक नीक छात्र रहय, लड़का टीम मे नीक कबड्डी खेलय, हमर काते द' क' निकलि बहरा गेल...

पिहूक नजरि हमरा पर पड़लै आ डरे काँप' लागलि, ''सर! मेरी यह पहली और अंतिम गलती थी! सर मुझे माफकर दीजिए...'

हम ओकरा देखैत आ सोचैत रहि गेल रही। फेर तँ दुनूकेँ अनुशासनहीनताक कारणें खेलसँ निकालि सेहो देलिऐ। ओना आइ तँ सभ किछु गडमड भ' गेल छै। हवा बेलगाम छै...

अरे हँ, सीमा! ओ त' अद्‌भुत रहय। बेसीतर ''थ्री लेग्स' मे भाग लेल करय आ औअल सेहो आबय। ओना कबड्डी सेहो नीक खेलय।

एकबेर एना भेलै कि फाइनल रहै आ ओकर पार्टनर रेहाना कोनो कारण सँ ओहि दिन नहि आबि सकल रहै। सीमा बेचैन रहय। ओना तँ बेचैन हम सेहो रही। फाइनल प्रैक्टिस होबाक रहै...

सीमा रोज हमरा पान आनि देल करय। एकदिन टोकनो रहिऐ। ओ बाजि उठलि आ चढ़ि सेहो गेलि, ''तो आपकी मैं कोई नहीं?'

– ''अरे सुन न...'

– ''न न, पहले आप बोलिये, ''हाँ कि ना'!

– ''ओह...'

– ''ओह-आह कुछ नहीं, पहले...' आ ओ हमर हाथ ध' लेने रहय! खैर।

ओहि दिन ओ सही मे बहुत बेचैन रहय। हमरा किछु सूझि नहि रहल रहय। आकि ओ सहसा अपन प्रस्ताव दैत हमरा फाँसि देलक, ''आप तो मेरे ट्रेनर हैं सर! तो आइये आज आप ही के साथ प्रैक्टिस करती हूँ...'

– फेर जे स्टूडेंट्स सभ हमर गति करनाइ शुरू कयलक...

ओ आइयो संपर्कमे अछि। भोपाल मे रहैत अछि। हसबैंड आईटी इंजीनियर छै। नोकरीक अंतिम दिन मे केना-ने-केना आबि गेलि रहय। मुदा बदलल नहि छलि। ओहिना देखलिऐ। अबिते हाथ बढ़ा देलक रहय, ''सर पान! याद हूँ न?'

से ओमहर सहकर्मी सभक प्रेमिल मसखरी से मजा आनि देअय। किछु मैडम सभ तँ जखन-तखन मजाक कर' लागथि , ''सर आप तो बिरयानी खिलाते ही रह गये!...'

तँ दोसर तुरंत, ''सर कबाब बहुते लजीज बनाते हैं!''

तेसर सेहो, ''इस बार हमलोग ईद में आपके घर जाना चाहते हैं। बीबी मैडम से पूछकर बोलियेगा तो!...'

एमहर जेंट्स टीचर सभ सेहो पाछू नहि रहथि। किछु तँ नोकरीये प्रसंग चुटकी लैत रहथि, तँ क्यो इंटरव्यूक रनिंग कमेंट्री दैत नहि अघाथि...

आ ई सभ टा सुनैत-जीबैत एहिना हम अपन नोकरीक संबंध मे डूमल रहैत रही। किनको कोनो बातक उत्तर देबाक स्वभावे नहि रहय।

ओना एहि सभ सँ की लाभ छलै! तें सभक गप हँसी मे टारैत चैन सँ जीबैत रहलहुँ। आ जँ किछु बजबाक जरूरिये भ' जाय तँ एनाक' तोतरा जाइ जे अपने सेहो नहि बुझि पाबी जे की बजैत छी!...

बाद मे तँ जेना ई हमर स्वभाव सन भ' गेल रहय। घरक लोक सभ सेहो कहब शुरू क' देलक, ''की बोले हू, कुछ समझे मे न आबे हे!...'

मुदा ई तँ एक टा बातो भेल, मुदा सानिया मैडम केँ की काज रहनि! वर्षो गुजरि गेल, ओतय सँ मुक्त सेहो भ' गेलहुँ, मुदा मोनक ई प्रश्न अनुत्तरिते रहल। हमरा अपन दोस्त पर विश्वास नहि भेल। अर्जुन जकाँ ओकर नजरि मात्र चिड़ैयक पुतली पर ठिकल रहैत रहलै। खैर होयबो करैत होइ, मुदा से हम नहि मानी।

... कि तखने पत्नीक देसी टोन सँ सामना भेल, ''सून' हू कि न!''

– ''का?'

– ''की सोचिए रहा?'

– ''न कुछो!''

– ''हमरे से ऊड़' हू!''

– ''अरे ना रे, अब ऊ उमर कहाँ रहा...'

– ''से ही त हमरी लगी रहा! हम बगल बइठी हेंय आ ई कहीं अऊरे घुम रहले हे!''

– ''न रहे बदमेजादी औरत, हम अपनी बचपन के बदमस्ती सब जीता रहा...'

– ''का?'

– ''कुछो कुछो...'

– ''त हमरी से बोले मे सरम लग रहलू हे!''

– ''बेहुद्दी, तू भी न कुच्छो का कुच्छो जिद धर लेहू!''

आ हम अतीत सँ बहरा अयलहुँ। पत्नी बेसीकाल व्यंग्य करैत रहैत छथि, ''साँचो, सठिया गेलू हे...'

मुदा हमर मोन नहि मानय कि हम सठिया गेलहुँ अछि। मैडम जँ भेटितथि तँ पुछितहुँ जे की हम सही मे सठिया गेलहुँ अछि? एकर उत्तर हुनके लग होयत....

आ उत्तरक खोज मे हम पूब दिशा मे ठाढ़ छी....

संपर्क : लक्ष्मीसागर दरभंगा

मोबाईल : 7903228695

व्यंग्य

रात भर डीजे बजाएँगे...

वीरेन्द्र नारायण झा



शीर्षक देखि केहनो सज्जन पुरुष-महिला आ लेखक-पाठक मुह बिजका लेने हेताह, एतबा हमरा विश्वास अछि। अइ दुआरे जे ई हिंदी मे किए लिखल गेल? जहाँ धरि अर्थक प्रश्न अछि...से तं पक्का गुदगुदी लगबै वला अछि! कियो हमरा साबित कए दिए जे एहि तरहक हिंदी-भोजपुरी मिक्स गीत सुनला सं ककरो मोन तरे-तर हर्षित नहि होइत होय आ ओ मुस्किआइत नहि होएय। जकरा मुस्की नहि छुटैत होए आ ने गुदगुदिए लगैत होए, बुझू ओकरा कोनो तरहक मेंटल प्रोब्लेम छैक। वा नहि तं ओ अकान-बहिर अछि। ओना, एकर आलोचना कएनिहार पक्का साहित्य सेवी आ समाज सुधारक सेहो विद्यमान छथि समाज मे। आब कने एहि शीर्षक के दोसर पक्ष देखी। ई थोड़े आगि लगाओन अछि। कारण, मैथिली रचनाक शीर्षक अंग्रेजी मे मान्य भए सकैए, हिंदी मे कथमपि नहि। कतेको विद्वानक कहब छनि जे मैथिली केँ जतेक हिंदी सं खतरा अछि ओतेक अंग्रेजी सं नहि। किछु हो, अजुका समय मे अंग्रेजी ककरो इम्प्रेस करबाक संग मैथिलीक रोजगार सं जुड़ल अछि। मुदा हिंदी...ई तं मिथिलाक बोलिए केँ भोजन करबा पर तुलल अछि। ई बेसी गंभीर बात भेल मैथिली लेल। से वर्तमान परिस्थिति मे संपूर्ण साकांक्ष रहबाक आवश्यकता छैक। जेना कोरोना वायरस सं सावधान रहैत छी।

आब स्पष्ट भए गेल ने जे पाठकक मुह कोन कारण सं बिजकलनि, शीर्षकक अर्थ ल' क' नहि, अपितु एकरा हिंदी मे लिखबा आ बजेबा दुआरे। छै तं मुदा ई भोजपुरिया हिंदी मे, ई दोसर बात जे आनंद लैत छी हमरा सभ खांटी मैथिली मे। त' आर की...मैथिली लग एहन सुंदर-सुंदर गीत अछि? नहि ने। तखन मजा कतए सं लेब? गीतक मजा लेब लेकिन ओकरा हिंदी मे लिखबाक आनंद नहि लए सकैत छी। एतेक सपरतिभ यौ! ई तं वैह बात भेल ने जे अंग्रेजी मे 'लेग' खूब चूसब मुदा मैथिली आ हिन्दी मे ओकर नाम लेबा सं परहेज करब। यद्यपि, हमर ध्येय एतय ई नहि अछि जे हिंदी-मैथिली आ भोजपुरी मे पटका-पटकी होएय, हम तं सिर्फ गीत मादे कहि रहल छलहुँ जे संपूर्ण मिथिलांचल केँ आइ-काल्हि उद्वेलित-तरंगित-हर्षित केने अछि। जे एतेक पावरफुल अछि तकरा साहित्य सं कहिया धरि अप्रभावित (दुष्प्रभावित) राखल जा सकैए। आखिर समयेक लिखित दस्तावेज आ खतिआन भेल साहित्य ने। से कहलहुं मिथिलाक गाम-टोल एखन जं यज्ञ-हवन सं सदि घड़ी पवित्र होइत रहैत अछि तं दोसर दिस डीजेक ध्वनि सं दलमलित होइए। हवनक धुंआ जतय मिथिलावासी केँ कोरोना सं लड़बाक हिम्मति दैत अछि, ओहीठाम डीजेक भोजपुरी गीत कोरोनाक कीटाणु केँ भगेबा मे सहयोग कए रहल अछि।

हम जनैत रही जे हमरा सं चोटहि पूछल जायत, से कोना? जवाबो रेडीमेड रखले अछि, से एना... कि गीत सुनला सं सुननिहारक शरीर ऑटोमेटिक थिरकय-नाचय लगैत छैक। कि तुरते हिलम-डोलम शुरू भए जाइत छैक। अगले क्षण ओ गुनगुनाइयो-गाबइयो लगइए संगहि ओकर हाथ-पएरक मुद्रा सेहो बदलि जाइत छैक। ई सभ देखि कीटाणुक मजाल छियैक जे ओकरा देहो मे भीड़त आ कि मुह-हाथ मे सटत। धोखो से नहि। आइ धन्य डीजे जे लोक ताल ठोकि कहैत अछि, हमरा सभ केँ कोरोना किछुओ बिगाड़ि-उखाड़ि नै सकैए। जकरा डर छै से डराए। एकटा घटना सुनाबी अपने सभ केँ। मानी तं सेहो बढ़िया नहि मानी तं ओहो बढ़िया। हमरा की? एक बेर एक गोट आदमी अचानक बेहोश भए गेल, बड़बड़ाय लागल...। ओझा-गुनी बजाओल गेल। भगत सेहो पहुँचल। मुदा कारनीक बोली कियो बुझबे नहि करैक। मुह-नाक सं गाउजि-पोटा बहराए लगलैक तखन अंत मे जा क' बैग छाप डॉक्टर केँ आनल गेल। ताबत एमहर सगरो अनघोल भए गेल जे फलनमाक बेटा चिलनमा केँ कोरोना पकड़ि लेलकै! सुनिते मातर सभ यैह ले वैह ले दौड़ल आयल देखबा लए, मुदा गानि क' तीन डेग फराके सं। ओझा,भगत, डॉक्टर सभ छोड़ि-छाड़ि लंक ल' क' भागल। आब की होअय? घर वला सोच मे पड़ल 'राम नाम सत्य' नहि बाजि रहल छल, मुदा सत्ते मे राम नाम ल' रहल छल। कि तखनहि एक गोट डीजे धड़धड़ाइत जोर-जोर सं गीत बजबैत-हुरपेटैत...कान फाडैत पास केलकैँ कि ओ छौंड़ा एके बैग उठि क' बैसि रहल। एकदम स्वस्थ, जेना किछु भेले नहि रहैक। औ जी ई की भेलै यौ? तखन ओकर माय कहलकै, डीजे सुनलकै ने त बलू नीमन भ' गेलै। गीत छल, लवंडिया लंदन से लाएँगे...रात भर डीजे बजाएँगे...

तें ई मजाक नहि छी, सरकार आ डॉक्टर सं बेसी डीजेक प्रति जनताक विश्वास छी। यैह भरोस आ विश्वास एक दिन परम्परा आ परिपाटी बनत, एकर तं हम गारंटी लैते छी संगहि ईहो दावा ठोकि रहल छी जे ओहि वर्गक कवि-कोविद डीजे साहित्य रचब शुरू कए देलनि अछि। इ एक गोट नव साहित्य होयत, 'एम् लिट् फेव' जकाँ। साहित्यक गुप्तचरसूत्र सं अही लगन मे ज्ञात भेल अछि जे एकर नाम राखल जायत, 'एम् एच अंग भोजप लिट्'। बड़ा धाकड़ नाम हेतैक बाबू। से बूझि लिअ। आइ-काल्हि ओ लोकनि डीजे साहित्य रचबा आ समृद्ध करबा पर काज कए रहलाह अछि। ताहि लेल किसिम-किसिम क' भोजपुरी गीत सुनि रहल छथि। सिनेमा देखि रहलाह अछि। जाहि गीतक परोडी बनेताह, ओ सभ अइ बेरक लगन मे बिनाका गीत मालाक गीत जकाँ पाहिल सं दसम पौदान पर अछि...दिलबा ले गइल पियरकी फ्राक वाली, फलनमा छौंड़ा चुम्मा लेलकौ तीन बजे भोरहरियामे...(तीन बजे सं प्राती गएब आरम्भ भए जाइत रहए), ई छौंड़ी...ऊ छौंड़ी...मारै छै सभ कैँ जान..., गोरकी पतरकी रे लचके कमरिया...आदि! हरियाणवी सेहो सुनि ली जे मिथिला मे सभ सं बेसी सुनल जाइए, तेरी आगया का वो काजल मने करे से गोरी घायल...पल-पल आग लगावे से...! ई गीत सभ जखन ब्याह-मुड़न-छठिहार आ जन्मदिन पर जमि क' बाजि रहल अछि तखन एकरा सभ कैँ धर्म आ परम्परा में सन्हिआइत कतेक दिन लागतैक। बर आ कि कनियाँ जेतैक मंदिर आशीर्वाद लेबा लेल आ पाछाँ-पाछाँ डीजे ऊपरके गीत बोकरैत-भोकरैत नहुं-नहुं चलैत रहैत छैक। जेना बर-कनियाँक नहि, डीजेक परिछन भए रहल हो।

सभसँ मनोरम दृश्य तखन देखबा-सुनबा मे अबैत अछि जखन कियो ओहि दृश्य कैँ लग मे बैसि क' देखए किम्बा दूर सं सुनए। कोटाक राशन आ सब्सिडी मे कटौती भए सकैछ, एहि आनन्द मे कोनो कटौती नहि।... 'श्री गणेशाय नमः' गणपत्यादि पञ्चदेवताभ्यो नमः...' सुर्यादि पञ्चदेवताभ्यो नमः... ओही काल मे ओही घर सं सुनबा मे आओत, चल कबड्डी कबड्डी बोल के, यार सीना खोल के, पॉवर तू दिखा दे खोल के..., रानी हमके बना ले अपन मर्द, रोज हरत रहब दुःख दर्द..., सत्यनारायण भगवान की जय! विष्णु भगवन की जय! हरि! ई आनंद लूटबाक-भोगबाक समय थिक। जे एहि मे पछुएताह से बुझू कतौ के नहि रहताह...ने घरक आ ने बाहरक (घाटक)...। तें आजुक ज्ञानी-विज्ञानी-कामीक कहब छनि, लाउडस्पीकर, डीजे, ओर्केस्ट्रा आ नाच-गान पर दिमाग नहि, हृदय खोलि क' दान-दक्षिणा करैत रहब तं कोनो तरहक संक्रमण, खाहे ओ कोरोनाक हो वा साहित्य-संस्कृतक हो, मानवताक अथवा भाषा-जातिक हो... समाज कैँ दूषित कथमपि नहि कए सकैत अछि। लेकिन ताहू सं आवश्यक अछि राति भरि डीजे बजबैत रहू। एहि लेल कियो नहि रोकत ने टोकत चाहे ककरो कतबो मोन खराब होइ आ कि हृदये रोग किए ने हो। भगवान ने करथु, यदि कियो परलोको चल गेल तं ओकर मोक्ष ओतबे निश्चित छैक जतेक कि मृत्यु सुनिश्चित अछि। दोसर डायरेक्ट फएदा ई होयत जे चोर-चुहार सं इलाका बांचल रहत संगहि थाना वला बड़ प्रसन्न रहल करत। राति भरि ओकरा सभ कैँ सुतबाक मोका जे भेटतैक। दिन मे ओहो सभ गुनगुनाओत ...लवंडिया लंदन से लाएँगे... रात भर....

संपर्क : गाम-समया, पोस्ट-मेहथ, झंझारपुर

मोबाइल : 7903445262



कविता समवेत

कविता

कविता समवेतक अंतर्गत एहि बेर मैथिलीक शीर्ष आ स्थापित कवि विद्यानंद झाक दूटा टटका कविता आ मैथिलीक युवा आ चर्चित कवि रमण कुमार सिंहक दू गोट कविता जा रहल अछि। कवि विद्यानंद झाक अपन स्थायी भाव प्रेम, वैश्विक चिंतन आ नोस्टालजिया लेल जानल जाइत छथि आ मैथिलीक चर्चित युवा कवि रमण कुमार सिंहक काव्य चिंता जन सरोकार, महानगरीय संत्रासक जीवन व्यथा आ गाम-घरक चिंता सँ चिंतित रहय वला कविक रुप मे जानल जाइत अछि। प्रस्तुत अछि दुनू कविक चारि गोट टटका कविता। -**संपादक**



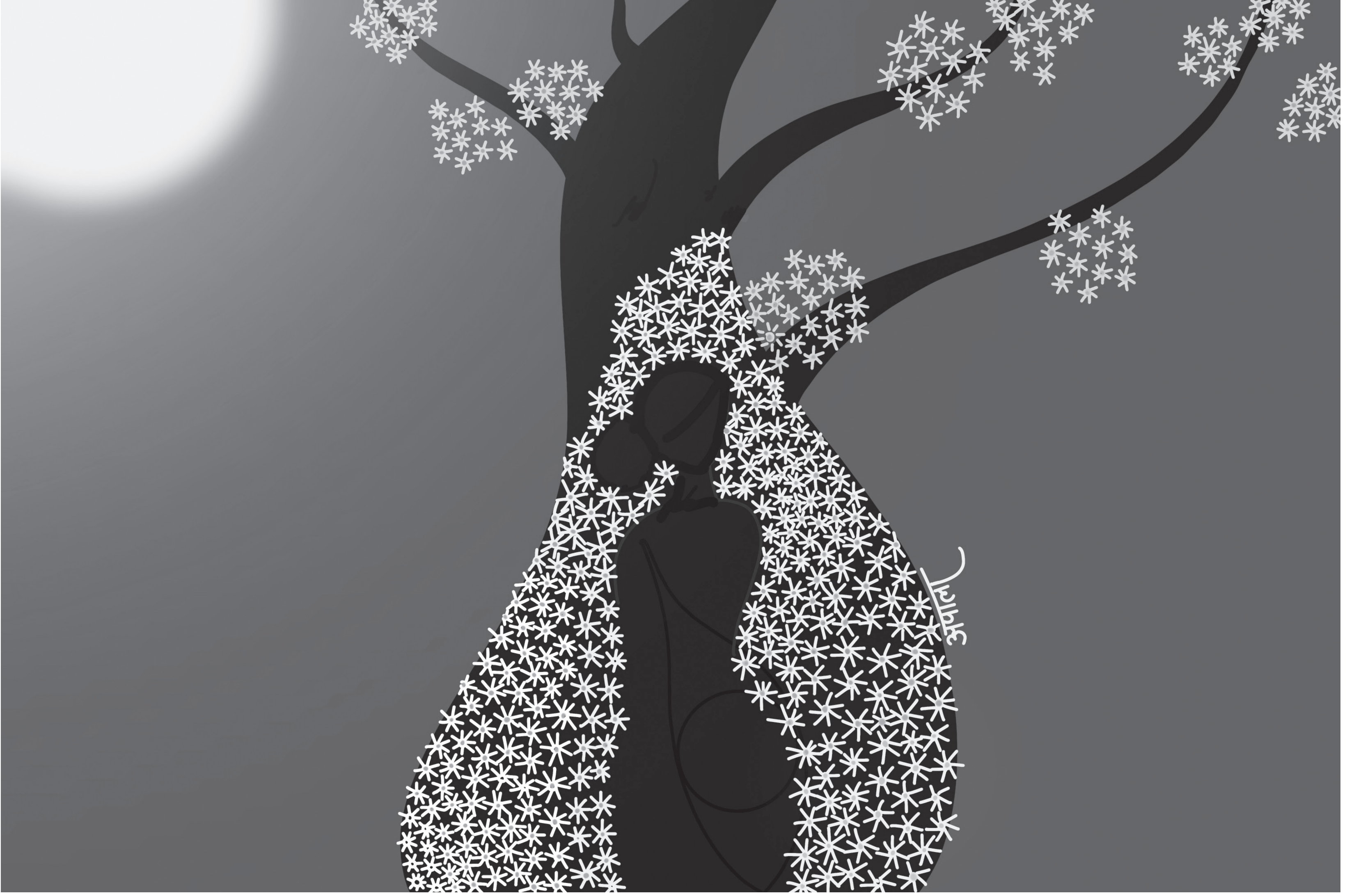
विद्यानंद झा

सालक अंतिम सिंगरहार

सालक अंतिम सिंगरहार फूल कँ देखि
मन पड़ल एकटा एहेन श्वेत श्याम मूक सिनेमाक अभिनेत्री
जकर मृत्यु हमर जन्म सँ पहिने भ' गेल छलैक
जे देखायल छल पहिल बेर हमरा
एकटा छोट कोनो कस्बाक
ढ़हैत एकटा हॉलक भोरुका शो मे
आ उधिया देने छल आधा फाटल परदा कँ
अपन मूक हँसी सँ
आ जकर संग कहियो कहियो सपना मे हम
पचीसी खेलाइत छी एखनहुँ
सालक अंतिम सिंगरहार फूल कँ देखि
सुगंध लागल कोनो अनभुआड़ कविक किछु पाँतीक
जे लिखि क' ओ कोनो कागत पर
अपनहिँ भेल छला निराश अपन कवित्व पर
आ फेंकि देने छलखिन्ह एकटा टूटल खिड़कीक बाहर
मोचरल ममोड़ल कागजक एकटा गोला मे
आ जे माटि पानि बसात मे पचि क' गलि क'
चतरल पसरल फुलायल हमर अतमा मे
आ एखनहुँ सुवासित करैत अछि हमर मन प्राण कँ कौखन
सालक अंतिम सिंगरहार फूल कँ देखि
गड़ियाअल आँखि हमर धुआँ सँ
जे बहरायल जखन जरौलहुँ अहाँ ओ चिठ्ठी सब
जे सेहन्ता रहय अहाँ कँ जे हम लिखी
आ कहियो नहिं लिखि भेल हमरा
लागल अपन घूर धुँआ मे
हमर सोनित सँ लिखल ओहि चिठ्ठीक
आखरक मोसि लाल सँ कारी होइत अछि
आ नोराइत अछि आँखि हमर
अगिला साल जखन फुलायत सिंगरहार
खोलब जखन हम एकटा बन्न साल भरि सँ बोइयाम
एतैक की ओहि मे गंध कोनो मरनैक सुखायल सेमारक
की हल्लुको सन सुवास हमरा सबहक संगक तखनहुँ बहरायत
ओहि सँ?

बीतल आर एकटा साल

बीतल आर एकटा साल
जखन प्रति मिनट सैकड़न बिरयानी मँगओलनि
अपन एप पर हमर देसबासी सब
आ जखन भुखले सुतला अपस्याँत भेल



बिरयानी पहुँचबैत कुब्बड़ सन किछु आर देसबासी सब
बीतल आर एकटा साल
जखन छैला राजा केलक स्वाँग ईश्वरक
कएलन्हिं व्यापार धर्मस्थल सब ईश्वरक
स्पेशल आ सुपर स्पेशल दर्शन दिआक' धनपति कँ
रोपलन्हिं गडाँस रोपलन्हिं भाला द्वेषक घृणाक
धर्मगुरु सब धर्मसंसद मे
बीतल आर एकटा साल
जखन मुइलीह घर सँ बाहर धरि
बुच्ची सब दाइ सब बलत्कृता भेल
आ करैत रहलहुँ विश्लेषण हमरा सब
हुनकर पहिरक हुनकर ओढ़क
हुनकर चालिक हुनकर चरित्रक
बीतल जाइत अछि साल पर साल
दु:स्वपनक अंत एखन धरि हेबाके अछि

संपर्क : इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेट, कोलकाता



रमण कुमार सिंह

नांघब

बरमहल कहल जाइत छैक
जे फल्लां चीज के नै नांघियै
दोख लागैत छैक
मुदा हम की करी
माइ केर गोदी नांघिये के
पहिल डेग देने रही एहि धरती पर
जिनगी भरि कतेको नियमक
कयल उल्लंघन आगू बढ़य लेल
गाम सं शहर आ
फेर शहर सं महानगर धरि
कतेको सिमान के नांघलहुं
तखन भेटल रोजी-रोटीक ठहार
कतेको नदी, पहाड़
अंध विचार आ मूर्खता कें
नांघि के पहुंचल अछि
मनुक्ख जाति आइ एतय
की बिना नांघने केओ
तय क' सकैत छल ई यात्रा
कतेक छान-पगहा के नांघि
आइ उड़ि रहल अछि
स्त्रिगण आकाश मे
नदी, चिड़ै, तितली, पहाड़
बसात, आ विचार कहां
मानैत छैक कोनो सीमा रेखा
हम तं कवि छी
माफ करब महराज



अहांक निरंकुश फरमान
नहि अछि पसिन्न हमरा
हम नांघबे करब ओकरा।

थूकब

थूकब एकटा सहज क्रिया थिक
मुदा भला लोक स्थान-कल देखि
फेकैत अछि थूक
यत्र-तत्र थूकब नहि मानल जाइछ नीक
बिना स्थान, कालक धियान रखने
यत्र-तत्र थूकब एकटा विकृति थिक
एना जहां-तहां थूकरब
बीमारीकेँ नौबत थिक
मुदा हुनका सभकेँ की कहल जाउ
जे अनकर कयल-धयल पर थूकैत छथि
आलोचना सं फराक नहि होइत अछि केओ
मुदा हरसट्टे केकरो खारिज करब आ
पुरखा लोकनिक प्रति कृतज्ञ हेबाक बदला
ओकर काज केँ कूड़ा कहब
थूके फेकब मानल जाइत
सुरूज पर थूकला सं केकर नोकसान!
आजुक जुग मे थूकब
एकटा फैशन बनि गेल अछि
लोक ई बात बिसरि जाइत अछि
जे अनका पर थूकैत काल
ओकर किछु छिटका
अपनो पर पड़ैत अछि
ओना थूकि के चाटनिहारो के
कमी नहि नहि अछि आइकाल्हि
जेम्हरे ताकब तेम्हरे भेटि जाइत
एहन लोक खाली राजनीतिमे मे नहि
जेना कि कहलौं, जे
थूकब एकटा सहज क्रिया थिक
थूकल बिन रहलो नहि जा सकैछ
मुदा थूकबाके अछि ते
अपन गुस्सा के थूकू
थुकरि दिय' ओहि घृणा केँ
जे दोसराक प्रति बनबैत अछि हिंसक
ओहि अहं के थूकरि दियौ जे कारणें
स्वयं के सर्वश्रेष्ठ आ दोसरा केँ
बुझैत छियै तुच्छ!

संपर्क : संप्रति-चीफ सब एडिटर, अमर उजाला, गाजियाबाद
मोबाइल : 9711261789

समाचार परिक्रमा

न्यूज डाइजेस्ट

लोकल न्यूज

मधुबनी हरलाखीक संप्रीति केँ गूगल सँ भेटल एक करोड़ 11 लाख के पैकेज वला नौकरी

मधुबनी: लक्ष्य तय क' सकारात्मक सोचक संग मेहनत कयल जाय त' सफलता निश्चित छै। एकरा चरितार्थ कयलनि अछि मधुबनीक हरलाखी प्रखंडक पंचगछियाक बेटी संप्रीति यादव। पढ़ाइ मे हमेशा अव्वल रहय वाली संप्रीति केँ दुनियाक सबसे पैघ टेक कंपनी गूगल एक करोड़ 11 लाखक सालाना पैकेज पर सॉफ्टवेयर इंजीनियरक नौकरी देलक अछि। संप्रति 14 फरवरी सँ गूगल मे काज करब शुरू करत। पंचगछिया कमतौलक मूल निवासी बैंक अधिकारी रामाशंकर यादव आ योजना विकास विभागक सहायक निदेशक शशि प्रभाक बेटी संप्रीति साल 2014 मे नोट्रेडेम अकैडमी स' 10 सीजीपीएक संग मैट्रिक कयने छलीह। दिल्लीक इंटरनेशनल स्कूल सँ 12वीं की परीक्षा पास करबाक बाद साल 2016 मे जेईई मेंस पास करलक आ साल 2021 के मई मे दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी से कंप्यूटर साइंस सँ बीटेक करलाक बाद कैंपस सिलेक्शन मे माइक्रोसॉफ्ट कंपनी मे 44 लाखक पैकेज पर एखन संप्रति काज क' रहल छथिन। एडोब, फ्लिपकार्ट आ एक्सपेडिया कंपनी सँ सेहो हुनका नौकरीक ऑफर भेटल छल।



अपन परिवारक संग संप्रति यादव

जयनगर स' जनकपुर के बीच जल्द दौड़त ट्रेन, सभ तैयारी भेल पूर्ण

मधुबनी : नेपालक सीमावर्ती इलाका मे रहय वला लोग लेल आ हजारोक संख्या मे आबय वला पर्यटक लेल सेहो ई बड्ड पैघ खुशखबरी थिक जे जल्दिये मधुबनीक जयनगर स' नेपालक जनकपुर धरि रेल सेवा शुरू होयत। गृह मंत्रालय आ भारतीय रेलवेक अधिकारी सभ जयनगरक दौरा क' सभटा तैयारीक जायजा लनै छथि। जयनगर सँ जनकपुर कुर्थाक बीच ट्रेन चलेबाक तैयारी लगभग पूरा भ' गेल अछि। ऐना मे ई संभावना जतायल जा रहल अछि जे मिथिलांचलक लोग केँ एहि साल यानी 2022 मे इंडो-नेपाल रेल सेवाक सौगात भेट जायत। बता दी की जे बिहार आ देशक अन्य क्षेत्र सँ सेहो काफी संख्या मे श्रद्धालु जनकपुर अबैत छै। ट्रेन सेवा शुरू भेलाक बाद पर्यटन केँ सेहो बढ़ावा मिलबाक उम्मीद अछि।



जनकपुर धाम रेलवे स्टेशनक तस्वीर

दरभंगा मे तैयार भ' गेल बिहारक पहिल फ्लोटिंग सोलर पॉवर प्लांट, बुझू कतेक पैदा होयत बिजली

दरभंगा: दरभंगाक तालाब मे बिहारक पहिल फ्लोटिंग सोलर पॉवर प्लांट बनि के तैयार भ' गेल. तालाबक पानिक ऊपर सोलर प्लेट लगेबाक काज लगभग पूरा भ' गेल। आब एकरा अंतिम रूप देबाक अछि. ओतै एहि सोलर प्लांट स' उत्पन्न होय वाला बिजली के आम आदमी धरि पहुंचेबाक लेल एकटा विद्युत उप केंद्र सेहो बनायल जा रहल अछि। एही सोलर प्लांट स' 1.6 मेगावाट बिजलीक उत्पादन कयल जायत। कादिराबाद मोहल्लाक जाहि तालाब मे ई प्लांट लागल अछि ओकरे बगल मे एक तरफ दरभंगाक तारामंडल बनि रहल अछि आ दोसर तरफ 1938 मे बनल उत्तर बिहारक पहिल पावर हाउसक

खंडहर अछि। खास बात ई अछि जे एहि तालाब मे जतेक बिजली उत्पन्न होयत, ओतेक बिजली ओहि पावर हाउस मे कहियो उत्पन्न नहि भेल छल। ऐना मे दरभंगा के एकबेर फेर इतिहास लिखवाक मौका भेटल अछि।



दरभंगाक पोखरि मे लागल सोलर प्लांट

दरभंगा एयरपोर्ट पर बढल यात्रीक भीड़, 14 स 16 भेल उड़ानक संख्या

दरभंगा: विंडर शिड्यूल जारी भेलाक बादो दरभंगा एयरपोर्ट पर भीड़ बढि रहल अछि। दरभंगा एयरपोर्ट पूरा कय के मौसम पर निर्भर अछि, एहिना मे एयरपोर्टक तरफ सँ देल गेल खबरि मे रविवार 26 दिसंबरक दरभंगा हवाई अड्डा पर आगमन आ प्रस्थान करय वाला यात्रीक कुल संख्या 2414 रहल। प्रस्थान आ आगमनक कुल उड़ान 16 रहल।



दरभंगा एयरपोर्टक तस्वीर

नेशनल न्यूज

पीएम मोदीक सुरक्षा मे भेल चूक वला मामलाक जांच आब सुप्रीम कोर्टक पूर्व जज करत

नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट मे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीक सुरक्षा चूक मामला मे लगातार सुनवाई भ' रहल अछि। बीतल दिन पंजाब सरकार आ केंद्र सरकारक पक्ष सुनलाक बाद सुप्रीम कोर्ट एहि मामलाक जांच लेल सुप्रीम कोर्टक एकटा पूर्व न्यायाधीशक अध्यक्षता मे एकटा स्वतंत्र समिति गठित करबाक लेल सहमत भेल। सुप्रीम कोर्ट समिति मे चंडीगढ़क डीजीपी, आईजी राष्ट्रीय जांच एजेंसी, पंजाब आ हरियाण ाा हाई कोर्टक रजिस्ट्रार जनरल आ पंजाब के एडीजीपी (सुरक्षा) कैं शामिल करबाक प्रस्ताव राखल गेल अछि।

एहि सँ पहिने मामलाक सुनवाई करैत चीफ जस्टिस कहलनि जे हमरा सभ कैं प्रधानमंत्रीक सुरक्षा सँ जुड़ल दस्तावेज सभ भेटल अछि। सुनवाईक दौरान सुप्रीम कोर्ट कहलनि जे एहि पूरा मामला मे भारी चूक भेल अछि। ओना ई बात पंजाब सरकार सेहो स्वीकारने अछि। आब सवाल उठैत छै जे जँ जांच कयल जाइत अछि त' एकर दायरा कतैक पैघ होयत। जँ केंद्र अधिकारी सभक खिलाफ खिलाफ कार्रवाई करै लेल चाहैत छथि त' एहि मामला मे सुप्रीम कोर्ट की करत।



भटिंडा हाइवे पर बीस मिनट धरि जाम मे फंसल रहल प्रधानमंत्री मोदी

खतरा अखनि टलल नहि अछि, ओमिक्रॉन के बाद आबि सकैत अछि नव वेरिएंट

नई दिल्लीः दुनियाक सभ देश ओमिक्रॉन वेरिएंट के कारण कोरोना वायरस संक्रमणक चपेट मे अछि आ एहि पर नियंत्रण करबाक कोशिश मे लागल अछि। लेकिन एहि बीच वैज्ञानिक सभ दावा करैत अछि जे ई वेरिएंट कोरोना वायरसक आखिरी वेरिएंट नहि होयत। कियैक त' आगां सेहो एहेन तरहक वेरिएटंस अयबाक संभावना अछि। शुरुआती संक्रमणक वजह सँ एहि वायरस कैं म्यूटेट होयबाक मौका मिलत। वैक्सीन आ नेचुरल तरीका सँ मिलल इम्युनिटी होयबाक बावजूद ई लोग के संक्रमित क' रहल अछि। एकर मतलब अछि जे अधिक स' अधिक लोग सभ मे ई वायरस आगां सेहो विकसित भ' सकैत अछि। विशेषज्ञ सभक कहब अछि जे हम ई नहि जानैत छी जे अगला वेरिएंट केहन दिखत आ ई महामारी कैं केहन आकार द' सकैत अछि, लेकिन एहि बातक कोनो गारंटी नहि अछि जे ओमाइक्रोनक सीक्वेल स' मामूली बीमारी होयत आ मौजूदा वैक्सीन ओकर खिलाफ काम क' सकत।

यूपी मे 19 सालक बाद चुनाव लड़ि रहल अछि कोनो मुख्यमंत्री, गोरखपुर नगर सँ ताल ठोकि रहल अछि योगी

लखनऊ : यूपी विधानसभा चुनावक तारीख के घोषणाक बाद सँ राजनीतिक सरगर्मी बढ़ि गेल अछि। एहि कड़ी मे उत्तर प्रदेशक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गोरखपुर नगर सँ चुनाव लड़ताह। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक प्रदेश मे 19 साल बाद कोनो मुख्यमंत्री विध ानसभा चुनाव लड़े लेल जा रहल अछि। एहि सँ पहिने 2003 मे तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव गुन्नौर सँ चुनाव लड़ने रहथिन। ओकर बाद प्रदेशक मुख्यमंत्री बनल राजनाथ सिंह, मायावती, अखिलेश यादव आ योगी आदित्यनाथ विधान परिषद सदस्य चुनल गेल छलाह। गौरतलब अछि जे विधानसभा चुनाव के लेल भाजपा

107 उम्मीदवारक पहिल सूची जारी क' देने अछि। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अयोध्या स' चुनाव लड़बाक चर्चा पर आब विराम लागि गेल अछि। योगी आदित्यनाथ गोरखपुर नगर विधानसभा सँ उम्मीदवार बनायल जेबा पर प्रसन्नता व्यक्त करैत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डाक प्रति आभार व्यक्त करलैनि।



गोरखपुर मठ मे आरती करैत योगी आदित्यनाथ

नव वर्ष मे भीषण हादसा, वैष्णो देवी मंदिर मे मचल भगदड़ सँ 12 तीर्थयात्रीक मौत

जम्मूः जम्मू-कश्मीरक माता वैष्णो देवी मंदिर मे मचल भगदड़ मे 12 तीर्थयात्रीक मौत भ' गेल जखन कि 14 श्रद्धालु घायल भ' गेलाह। अधिकारीगण के कथनानुसार श्रद्धालुक भारी भीड़क कारणे भगदड़ मचल। ई घटना त्रिकुटा पहाड़ पर स्थित मंदिरक गर्भगृह के बाहर भेल। हादसा भोरहरवा मे करीब 2.45 बजे भेल। अधिकारीगण कहलथि जे भगदड़ ओहि समय भेल जखन नव वर्षक शुरुआतक मौका पर श्रद्धासुमन अर्पित करबाक लेल पहुंचल श्रद्धालुक भारी भीड़ वैष्णो देवी गर्भगृह के बाहर जमा भ' गेल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी भगदड़क घटना पर दुख जतेलनि। ओ उप राज्यपाल मनोज सिन्हा आ केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह आ नित्यानंद राय स' बात कय हालातक जानकारी लेलथि।



वैष्णो देवी मंदिर मे दर्शन लेल उमड़ल भीड़

इंटरनेशनल न्यूज

बोरिस जॉनसन पर इस्तीफाक दबाव, 'भारतीय' मूलक ऋषि सुनक भ सकैत छथिन ब्रिटेन के नव पीएम

लंदनः ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के मुश्किल बढ़ल जा रहल अछि। साल 2020 मे कोरोना महामारीक समय लॉकडाउन मे डाउनिंग स्ट्रीटक गार्डन मे पार्टी करबाक कारणे हुनका पर इस्तीफाक दबाव बनि रहल अछि। विपक्ष जॉनसन सँ प्रधानमंत्री पद छोड़बात मांग क' रहल अछि। एहि बीच ब्रिटेनक एकटा प्रमुख सट्टा कंपनी 'बेटफेयर' दावा करैत छथि जे संकट सँ घिरल बोरिस जॉनसन जल्दिये प्रधनमंत्री पद सँ इस्तीफा द' देताह. एकर बाद भारतीय मूल के वित्त मंत्री ऋषि सुनक ब्रिटेनक नव पीएम भ' सकैत छथि। 'बेटफेयर' कहैत छथि जे मई 2020 मे कोविड-19 लॉकडाउन के समय प्रधनमंत्री कार्यालय डाउनिंग स्ट्रीट मे भेल ड्रिंक पार्टी क' ल' भेल खुलासाक बाद जॉनसन पर नहि सिर्फ विपक्षी दल बल्कि हुनक अपन पार्टी के नेता सभ सेहो इस्तीफा देबय लेल दवाब बना रहल छथि। 'बेटफेयर' के सैम रॉसबॉटम 'वेल्स ऑनलाइन' क' बताबैत छथि जे जॉनसन के हटलाक बाद ऋषि सुनक के प्रधानमंत्री बनबाक सबसँ बेसी संभावना छै।



भारतीय मूलक ऋषि सुनक जे ब्रिटेनक सरकार मे
वित्त मंत्री छथि बनि सकैत छथि ब्रिटेनक नव पीएम

लॉकडाउन मे एहि देश के पीएम क' रहल छथि ड्रिंक पार्टी के एंजॉय! एहि फोटो के देखि उड़ि जायत होश

लंदनः कोरोनाक कहर सौंसे दुनिया मे बरकरार अछि, लेकिन जँ अहां के ई पता चलय जे अपन देशक जनता के लेल कड़ा प्रतिबंध लगबै वला देशक मुखिया खुद कोरोना नियम क' रहल अछि तखन अहां के कहन लागत। स्वभाविक छै जे अहां के बुरा लागत आ तामस सेहो उठत। किछु एहने हालत ब्रिटेनक पीएम बोरिस जॉनसन के अछि। एक रिपोर्ट मे दावा कयल जा रहल अछि जे ओ लॉकडाउन के समय ड्रिंक पार्टी अटेंड करने छलाह। एकरा ल' क' कतेक मीडिया वेबसाइट आ न्यूज चैनल पर खबर छपल आ देखायल गेल अछि। बोरिस जॉनसन के पूर्व सहयोगी डोमिनिक कमिंग्स दावा करैत छथि जे डाउनिंग स्ट्रीट गार्डन मे लॉकडाउन नियम के उल्लंघन करय वला पार्टीक आयोजन भेल छल। डोमिनिक अपने ब्लाग पर एकर एकटा

फोटो सेहो पोस्ट कयने छल। एहि फोटो मे ब्रिटेनक पीएम बोरिस जानसन पार्टी मे ड्रिंक करैत नजर आबि रहल छथि। एहि फोटो के लाथे ओ दावा करैत छथि जे ई फोटो 15 मई 2020 के छै। एहि दौरान ब्रिटेन मे लॉकडाउन लागल छल, लेकिन ई फोटो देखाबैत छथि जे बोरिस जानसन रूल बेक्रिंग पार्टी मे शामिल भेल छलाह।



लंदन मे लॉकडाउनक दौरान शराबक पार्टी एंज्वाय करैत इंग्लैंडक पीएम बोरिस जॉनसन

पाकिस्तानः बर्फबारी मे गाड़ी के अंदर कतेक सवारीक जान गेल, 23 गोटेक मौत

लाहौरः पाकिस्तान के प्रसिद्ध पहाड़ी पर्यटन स्थल मरी मे भीषण बर्फबारी के कारणे 23 लोगक जान चलि गेल। एकटा बच्चीक गंभीर जुकाम आ निमोनियाक कारणे जान सेहो चलि गेल। ओकरा समय पर अस्पताल नहि पहुंचायल जा सकल। पंजाब प्रांतक रावलपिंडीक मरी शहर मे काफी संख्या मे सैलानी सब पहुंचल छल आ एही बीच भीषण बर्फबारी होमय लागल जाहि मे हाइवे पर सभटा गाड़ी बर्फ मे दबि गेल आ फंसि गेल। एहि घटना मे दसटा बच्चा समेत 23 लोगक जान चलि गेल अछि।



पाकिस्तानक भीषण बर्फबारी मे सड़क पर फंसल गाड़ी सभ

तीन सालक बाद जेल स' रिहा भेलखिन एहि देशक राजकुमारी, बिना आरोप के काटलखिन सजा

दुबईः सऊदी अरब के शाही घरानाक एकटा राजकुमारीक समर्थक सभ दावा करैत छथि जे हुनक राजकुमारी कें करीब तीन साल जेल मे रखबाक बाद प्रशासन हुनका रिहा क' दने छथि। राजकुमारी बस्माह बिंत सऊद सऊदी अरबक दोसर राजा के बेटी छथिन जे मार्च 2019 मे लापता भ' गेल रहथिन। ओ अपन सोशल मीडिया पर दावा करने छलखिन जे हुनका बिना कोनो आरोप कें सऊदी अरब के एकटा जेल मे कैद क' देल गेल अछि। राजकुमारीक गिरफ्तारीक कोनो स्पष्ट कारण एखनि धरि सोझां नहि आयल अछि।

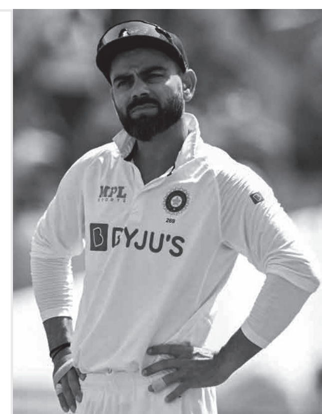


जेल स रिहा होबाक बाद राजकुमारी बस्माह बितक तस्वीर

<u>स्पोर्ट्स</u>

विराट कोहली टेस्ट कप्तानी सेहो छोड़लक, टीम के साथी खिलाड़ी कें लिखलाह इमोशनल लेटर

जोहान्सबर्गः साउथ अफ्रीका मे टेस्ट सीरीज मे भेटल हारक बाद विराट कोहली टेस्टक कप्तानी पद सँ स्वंय कें अलग करबाक घोषणा कयलनि अछि। कोहली ट्वीट क' एहि बातक जानकारी साझा कयलनि अछि जे ओ टेस्टक कप्तानी पद सेहो छोडि रहल छथिन। कोहली लिखनै छथि जे , 7 साल सँ भारतक टेस्ट टीमक कप्तानी करब शानदार रहल। बता दी जे टी-20 वर्ल्ड कप के बाद कोहली टी20 टीमक कप्तानी सेहो छोड़ि देने छलाह। ओहिठाम साउथ



अफ्रीकाक खिलाफ टेस्ट सीरीज सँ पहिने बीसीसीआई कोहली कें वनडे टीमक कप्तानी पद सँ हटा देने छल। गौरतलब अछि जे 2014 मे विराट कोहली के टेस्टक कप्तानीक जवाबदेही भेटल छल। धोनी के टेस्टक कप्तानी छोड़लाक बाद कोहली कें टेस्ट टीमक कप्तान बनायल गेल छल।

टीम इंडियाक पूर्व सेलेक्टर के कोच द्रविड़ से मांग : एहि 2 क्रिकेटर्स क' कयल जाय टीम सँ 'OUT'

नई दिल्ली: टीम इंडियाक पूर्व सेलेक्टर भारतीय टीम स' दूटा खिलाड़ी के हटेबाक मांग क' रहल अछि। ई दूटा खिलाड़ी सभ मैच मे टीम इंडियाक लेल विलेन बनल जा रहल अछि। आब एहि दुनू खिलाड़ी कें टीम इंडिया मे जगह नहि बनैत अछि। ई दुनू खिलाड़ी आब नासूर बनि गेल अछि। टीम इंडिया के पूर्व सेलेक्टर आ विकेटकीपर सबा करीम भारतीय टीमक एहि दूटा कमजोर कड़ी चेतेश्वर पुजारा आ अजिंक्य रहाणे कें प्लेइंग इलेवन से 'आउट' करबाक मांग कयने अछि।



राहुल द्रविड़

एहि कारणे बुमराह के पंत आ अय्यर स बेसी तबज्जो द' बनायल गेल वनडे टीमक उपकप्तान

नयी दिल्ली: दक्षिण अफ्रीका दौरा के लेल बीसीसीआई जाही 18 सदस्यीय टीम के ऐलान कयने छल ओहि मे सबसँ चौंकाबे वला बात छल जसप्रीत बुमराह कें उपकप्तान बनेबाक घोषणा। खास क' ई घोषणा तखन होई छै जखन टीम मे एहि पदक लेल मजबूत दावेदार ऋषभ पंत के चर्चा सबसँ बेसी छल। बहरहाल, आब बुमराह कें कप्तान बनेबाक पांछाक थ्योरी सोझां आबि रहल अछि।

चयन समिति सँ जुड़ल सूत्रक मुताबिक बुमराह के उपकप्तान बना क' पंत आ अय्यर दुनू कें मैसेज देल गेल अछि जे दुनू खेलक तीनू फार्मेट मे बेहतर परफॉरमेंस दिखाबू। ओना सूत्र ईहो कहैत छथि जे बुमराह कें मात्र एकटा सीरीज लेल उपकप्तान बनायल गेल अछि।



भारतीय क्रिक्रेट टीम के वनडे टीमक उप कप्तान जसप्रीत बुमराह

लोकवेद

कोन बिरड़ो मे उधिया गेल? कतअ हरा गेल मिथिला के नटुआ नाच?

किशन कारीगर



हौ कतए के नटुआ एलैइए? फलां ठाम के. इ कहू जे थेहगरीये टा की लटकियो नटुआ सब अएल छै? एह जेबै देखै ले तब ने? थेहगरही, लटकी, छमकी सबटा नटुआ एलैइए, ततेक नीक नचै जाइ हइ से छौंड़ा मारेर सब मारते रूपैया लूटबै जाइ छै आ नटुआ सब नाचै के त थैह थैह केने रहै छै. हं तब त हमहूँ जेबै नाच देखै लै एमकी मने नीक नटुआ सब एलैइए?

मिथिला के लोक संस्कृति मे रचल बसल रहै नटुआ नाच जे लोक मनोरंजक रूपे बेस प्रचलित रहै. मूरन, उपनेन, बिआह दान, नाटक, नाच, छकरबाजी, अल्ला रूदल, दिवाली, छैठ जे कोनो उत्सव होउ ओइ मे नटुआ नाच अब्बसे होइ. आ लोक नटुआ के साज सिंगार, लटक झटक, अदाकारी देख के ओकर नाचब देखै, नटुआ संगे नाइच के आनंदित होइत रहै आ लोक मनोरंजन के नीक साधन रहै.। हमरा मोन परैए जे हमर गाम मंगरौना के दुर्गा पूजा मे भटचैरा के नाटक पार्टी, विरदाबोन के नाच पार्टी सब अबै. दुनू के नटुआ सब तेहेन लटक झटक वला, रोल खेलै वला नटुआ सब रहै जे अपन अदाकारी स देखनिहार के मोन मोहि लै. आ लोक खुशी स झूमि के नटुआ के इनाम दैत रहै. अनदिना त मूरन, बिआह, सब मे बाबूबरही के फूल हसन बैंड पार्टी अबै . उ बैंड वला बेस नामी आ तेकर नटुआ उसमान हुसेन खूब नीक नटुआ रहै ओकर नाचब देखै ले त लोक सौंसे गामक लोक सब अबै.

नटुआ नाच के प्रचलित प्रकार

1. रोल खेलिनहार नटुआ

एकरे सब के बोल चाल मे लोक सब थेहगरी नटुआ कहै जाइ छै. इ सब अनुभवी आ उमेरगर कलाकार सब होइ जे अपना नाचब अभिनय आ बेहतर संवाद स लोक के बेस प्रभावित करै जाइ. नाटक देखनिहार लोक सब एकरा मे अपना समाजिक संबध माए, बहिन, भौजाइ, आदि के छवि देखै जाइत रहै. पाठ (रोल) खेलाएब शुरू करै स पहिने इ नटुआ सब मेकअप, सैज धैज के स्टेज पर अबै आ कहै जाइ हे बाबू भैया सब, हे माता बहिन, अहाँ सब अशीरवाद करै जेबै. लोक इ संवाद सुनि के जोड़दार थौपड़ि तालि बजबै जाइ आ मोने मोन नटुआ के अशीरवाद दै लोक सब जे आइ नीक रोल खेलेतै. नीक नाटक, नाच देखब सुनै जाएब.

रोल खेलाइत खेलाइत उ थेहगरही नटुआ सब दर्शक बीच मे अशीरवादी मंगै ले अबै आ लोक सब के दस, बीस, पचास जे जुड़ै से नटुआ के चाबस्सी रूपे दै.

2. लटकी नटुआ

नामक अनरूपे इ सब तेहेन सजल धजल रहै आ नचैत काल तेहेन लटक झटक करै जे छौंड़ा मारेर सब त एकरा पर फिदा भऽ जाइत रहै. एतेक फिदा जे नटुआ के कोरा मे उठा लेब, ओकर गाल छूअब, नटुआ के चोली मे आलपिन लगा रूपैया खोंसि देब आ लटकी नटुआ संगे छौंड़ा मारेर के खूब नाचब बेस रमनगर लगै. बूढ़ पुरान सब सेहो तरे आंखि नटुआ सब पर मोहित होइत रहै आ छौंड़ा मारेर सब पर झूठो खिसियाइ जाइ जे हे तूं सब नटुआ के बेसी नंगो चंगो नै करै जाहि की ताबे छौंड़ा सब नटुआ के बुढ़ पुरान दिस हुलका दै आ खूब पिहकारी होइ. बुढ़ो पुरान सब नटुआ के नीसा मे डूबल देह हाथ डोला के थोड़ बहुत नाचै आ नटुआ के बक्शीस दै. अइ लटकी नटुआ सबहक साज सिंगार, इनाम भेटला पर शुक्रिया अदा करब के आगू त फिल्मी कलाकार सब फिका बूझना जइतै.

जिन बलमा ने दिया रूपैया मैं रखूंगी चोली मे सम्हाइर के,



अठ्ठनी हमरा गाल पर आ रूपैया हमरा माल पर.आ तेहेन ने लटक झटक स लोक के मोन मोहि लै जे नवयुबक सब फिदा भऽ जैत रहै. छौंड़ा मारेर सब त अइ लटकी नटुआ सब मे अप्पन प्रेमिका, बहुरिया, भौजाइ आदि के छवि देखै आ बेस लोक मनोरंजन मे डूबल रहै. इ नटुआ सब नाटक, नाच, बैंड पार्टी मे रहैत रहै जे सब गेबो करै आ खूब नचबो करै जाइ.

3. छमकी नटुआ

इ छमकी सब त रेकार्डिंग डांस कला फिल्मी गीत पर तेना छमा छम नचै जे लोक सब सुइध बुइध बिसरा जाइ. एना एकटिंग करै जे लोक के होइ फिलिम देखै छि. कोठे उपर कोठरी उस पर रेल चला दूंगी, बस एक को कुंवारा रखना, मैने जो घूंघरू बांध लिए सब पर तेहेन रिकार्डिंग डांस होइ से छौंड़ा सब सेहो नचै लगै, खूब पिहकारी सिटी बजै आ लोक रूपैया इनाम दै.शेरो शायरी. रेकोडिंग डांस के जमाना एला पर छमकी नटुआ सब बेस लोकप्रिय भेल रहै. इ सब सब तरहक गीत पर मनमोहक डांस करै जाइ छलै.

4. नटुआ

इ नटुआ सब बैंड पार्टी, छकरबाजी, नाच पार्टी, ढोल पिपही पार्टी, अल्ला रूदल सबमे रहैत रहै जे पारंपरिक वेश भूसा, पारंपरिक नाच लेल बेस प्रचलित रहै. सजल धजल मेकअप केने चोली पर रूपैया टंगने समाजिक लोक मर्यादा के मान रखने इ नटुआ सब नचै आ लोक के मनोरंजन करै जाइ. हमरा मोन परैए स्कूलि जीवन मे गाम घर दिस प्रसिद्ध नटुआ सब जेना रामउदगार, रामदुलार पासवान (दुनू सहोदर रहै), सीरिदेब पंडित, उसमान हुसैन, बनैया राम, बबलू मंडल आदि लोक कलाकार सब जेकर नटुआ नाच देखै लेल लोक दूर दूर स अबै. कतेक कलाार सब त आब अइ दुनिया मे नै रहलै तइयो जे कलाकार सब बांचल छै हुनका प्रति आदर दिर्घायु हेबाक कामना करैत छि. गाम घर मे नटुआ त सब के मन मोहि लै जेना? नटुआ सबके मेकअप करैत काल धिया पूता के हुलुक बुलुक करब, छौंड़ा मारेर सब के नटुआ मेकअप रूम के पहरेदारी करब, बुढ पुरान सब तकतान करै मे जे नटुआ सबके बेसी नंगों चंगो नै करै जाही, फेर पिहकारी हंसि ठहक्का जे लोकरंग रहै से नटुआ नाच के आरो जीवंत बना दै.

मिथिला समाज लोक कलाकार प्रति सब दिन उदास रहल. बात बात मे दुत्कारि देब जे पढबें लिखमै की नचनीया बजनिया बनमैं? त एना मे के अइ कला सबके जियाअ कए के राखत? भोजपूर वला सब नटुआ नाच (लौंडा डांस) के जियाअ के रखलक त देखियौ जे रामचंद्र मांझी के पद्मश्री अवार्ड भेटलै. आ अपना मिथिला वला सब नटुआ के हेय दृष्टिये देखलक ओहेन प्रोत्साहन नै देलक त आब नटुआ नाच कलाकार नैंहे भेटत? बड्ड भेल त नेपाल,बंगाल,यू पी स बाई जी मंगा के लोक नचा लैइए सैह टा? नटुआ नाच के पारंपरिक रूप आ उत्सव बला सुआद डीजे, बाई जी मे किन्नौ ने भेटत? असली आनंद त नटुआ नाच मे देखाएत यदि तकियौ त? मिथिला समाजक लोक चिंता कए के देखियौ जे नटुआ नाच के जिआ के राखै परत. नटुआ कलाकार के प्रोत्साहन देबाक अभाव मे, बड्ड दुखक आ चिंता के गप जे एहेन लोकरंग वला नटुआ नाच आब कतौ हेरा गेल जेना? डी जे, अरकेसरा बाइ जी के बिरड़ो मे कतौ उधिया गेल नटुआ नाच?



संपर्क : संप्रति-संपादक मिथिलांचल टुडे, नई दिल्ली

गाम घर

उच्चैठ भगवती स्थानक ऐतिहासिक आ धार्मिक महत्त्व



प्रेमशंकर झा 'पवन'

इक्यावन शक्ति पीठ में शामिल उच्चैठ भगवती स्थान मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी अनुमंडल स मात्र पांच किलोमीटर दुर उच्चैठ थूम्हानी नदी क किनार पर अवस्थित अछि। ओना त मिथिला आदिकाल स देवी भूमि रहल अछि आ एहीठाम देवी के उपासक, उपासना करैत रहला, मुदा वर्तमानो में जागृति रूप स मिथिला में अनेको स्थान में स एक अछि प्राचीनतम उच्चैठ भगवती स्थान। उच्चैठ बासिनी मैया मन्दिर के बगल उत्तर पूब में पोखरि आ पोखरि के पूब में श्मशान अछि। मान्यता अछि जे एहिठाम कालिदास के ज्ञान प्राप्ति भेल छलनि।

कहल जाइत अछि जे एहि मन्दिर के पूर्व दिशा में एकटा पाठशाला छल। पाठशाला आ मन्दिर के बीच एकटा नदी छल। महाकवि कालिदास अपन पत्नी विदुषी विधोत्मा स तिरस्कृत भ मां भगवती के शरण में उच्चैठ आवि गेलाह आ ओहि आवासीय पाठशाला में रसोइया के कार्य करय लगलाह। एक बेर भयंकर बाढ़ आयल आ नदी के बहाव एतेक तेज भ गेल जे मन्दिर में दीप जरेबाक काज जे विद्यार्थी नित्य करैत छल असंभव भ गेल। कालिदास के आदेश भेटलनि जे आजुक संध्या दीप कालिदास जरायत आ कोनो निशान मन्दिर में लगा के आयत। फेर की छल महामूर्ख कालिदास तुरंत नदी में फांगि गेलाह नदी पार क मन्दिर पहुंच दीप जरा पूजा अर्चना केलथि आब बात छल निशान लगेबाक त कालिदास के किछु नहि सुझलानि त दीप के कालिख मां के स्वक्ष मुख पर लगा देलथि। मां भगवती हुनकर हाथ पकरि पुचलखिन तू के छें जे एतेक विकराल समय में अपन जान जोखिम में डालि एहन मूर्खता वाला काज केले। कालिदास अपन पत्नी द्वारा तिरस्कृत होयबाक घटना मां के सुना देलथी। मां प्रसन्न भय वरदान मंगवाक लेल कहलखिन। कालिदास महामूर्ख स विद्वान बनवाक वरदान मांगलथि। मां कहलखिन जे जो आई राति में तू जतेक किताब के स्पर्श करमें ओकर ज्ञान तोरा भ जयतौक।

फेर की छल कालिदास रातिये भरि में पाठशाला के सब पुस्तक के स्पर्श कय महामूर्ख स परम विद्वान बनि गेलाह। भगवती के कृपा स कालिदास महाकवि भेलाह आ अनेक किताब के रचना कयलनि जाहि में कुमार संभव आ मेघदूत प्रमुख अछि। जाहि कारण मंदिर प्रांगण में अखनो कालिदास मंडप अछि, जाहिमे कालिदास क जीवन स संबंधित सब जानकारी चित्रांकित अछि।

उच्चैठ भगवती मन्दिर में प्रतिमा कंधा तक छनि ताहि कारण स हिनका छिन्नमस्ता कहल जाईत छनि। मस्तक कटल हेबाक कारण एहिमें महालक्ष्मी, महाकाली आ महासरस्वती के सम्मिलित शक्तिक बास छनि। आदिकाल स एहिठाम ऋषि मुनि आ साधक उच्चैठ बासिनि मैया के दर्शन करक लेल आबैत रहलाह, जाहिमें स्वयं भगवान श्रीराम सहित महर्षि कपिल, कणाद, गौतम, जेमिनी, पुंडरीक आ लोयस के नाम प्रमुख अछि। संगही अनेक साधक एहि स्थान अवि अपन साधना कय भगवती स मनोवांछित फल प्राप्ति कयने छथि। कोनो समय में एहि जगह पर विशाल जंगल छल जाहि कारण भगवती के वन दुर्गा सेहो कहल जाइत छनि।

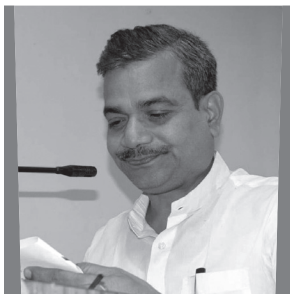
मन्दिर में अखन जे प्रतिमा अवस्थित अछि, ताहिमे अति प्राचीन शिलाखंड पर चारिटा भुजा वाली भगवती शंख, चक्र, त्रिशूल आ कमल लेने बिराजमान छथि। वाम तरफ नीचा में बजरंगबलीक क मूर्ति आ दहिना तरफ मां कालीक क मूर्ति अछि। मां भगवती के पैर लग माछ के चित्र सेहो अछि। शारदीय नवरात्रा में एहिठाम भारी मेला लगैत अछि, जाहि में दूर दूर स लोक आवी मां भगवती के दर्शन कय मनोकामना करैत अछि आ मनोकामना पूरा भेला पर पुनः अबैत अछि। चैती नवरात्रा में सेहो सिद्धपीठ उच्चैठ भगवती स्थान श्रद्धालु के लेल आकर्षण के केंद्र रहैत अछि। मां दुर्गा देवी क दरबार में दिव्य आलौकिक आ शांति के अनुभव होइत अछि। अगल बगल के गांव क लोक नित्य आवि मां भगवती देवी क पूजा अर्चना करैत छथि। साफ मन स जे भक्त एताय अबैत छथि, ओ मां के दरबार स खाली हाथ नहि जाइत छथि।

मुदा दुखक बात ई अछि जे अखन तक उच्चैठ भगवती स्थान के प्रयटक दर्जा नहि भेट सकल एहि के प्रति सरकार सेहो उदासीन अछि नहि त एतेक प्रसिद्ध स्थान जे ऐतिहासिक महत्व लेल जानल जाईत अछि, जहिठम नेपाल, बंगाल आ पूरा बिहार के लोक अबैत अछि ओकरा विकसित करबाक जरूरत अछि!

आलोचना

गुलोक अस्तित्व : मैथिली समाजक आलोचना

रमेश



2015 में पुस्तकाकार रूप मे आ ताहि सं पूर्व 'मिथिला दर्शनश्क 'साहित्य विशेषांक' (दिसम्बर 2014) मे प्रकाशित डॉ. सुभाष चन्द्र यादवक 'गुलो' पाठक कें कए कारणें आन्दोलित क' क' राखि देलक अछि। प्रेमचन्द जाहि शताब्दी मे साहित्य कें 'समाजक दर्पण' कहने छलाह, से कहिया ने बीति गेल। साहित्य आइयो 'दर्पणक भूमिका' (अतिरिक्तरूपेण) मे अछि। मुदा आइ साहित्य समाजक आलोचना आ प्रेम, दुनू एकहि संग क' रहल अछि, दर्पण-टाइप प्रतिबिम्बन तं करितहिं अछि। मुदा तहिया सं भारतीय समाज आ साहित्य, पैघ दूरी तय केलक अछि, से विश्वास करबाक अनेक आधार अछि।

मुदा मैथिली समाजमे ई सर्वविधि बहुमुखी भूमिका मे आबि सकल अछि की? मैथिली-समाज आ साहित्य किरणजी, यात्रीजी, राजकमल चौधरी, हरि मोहन झा आदिक उपरान्त, कतेक दूरी तय केलक अछि? की मैथिली समाज आ मैथिली साहित्य आइयो ओतहि अछि, जत' मैथिली साहित्य मे सम्पूर्ण समाजक प्रतिबिम्ब आ चेहरा नहि समा पबैत हो? जं सम्पूर्ण समाजक विविधताक आंशिक प्रतिबिम्ब आबियो रहल हो, त' से 'साहित्यक दर्पण' मे आंशिक भ'क', खण्डित आ विकृते भ' क' अबैत हो, सेहो संभव! निश्चितरूपेण, मैथिली साहित्यक यात्रा काफी अग्रतर भेलाक बावजूद,ओइ मे सम्पूर्ण समाजक आ समस्त मिथिलाक सभ क्षेत्रक प्रतिबिम्बन आ सम्पूर्ण साहित्यिक प्रतिनिधित्व पूर्णरुपेण एखनहुं धरि नहि भ' सकल अछि। आ तें मैथिली साहित्यक हैसियति एखनहुँ धरि समाज लेल दर्पण सं आगू बहुत मोसकिल सं बढ़ि पाबि रहल अछि, जखनकि साहित्य समाजक हित मे, नीक आलोचना-कर्म मे लागल अछि। एकटा समय छल, जे प्रेमचन्दक 'गोदानश्क होरी, सोनियाँ आ गोबरक चरित्रक दर्पण मे भारतीय समाज अपन मुखड़ा देखैत छल। बाबा यात्री, किरणजी, राजकमल आ रेणुक जनवादक संग आधुनिकता आ प्रगतिवाद, भाया किसुनजी -ललित, सोमदेव,डा.धीरेन्द्र, कीर्त्ति नारायण, रमानन्द रेणु, मैथिली समाज आ साहित्य मे एकटा नवीन संवेदनाक संचार त' केलक,मुदा ओ भारतक सीमान्त कृषक आ पशुपालकक दु:ख-दर्द छल। कृषक मजदूरक दु:ख-दर्द सेहो छल ।



मुदा 'गुलो' त' वर्गेविहीन अछि। ओकर ने त' कोनो संवर्ग छै आ ने वर्ग। ओइ दिशाहारा पर त' कोनो सुभाषचन्द्र यादवेक नजरि पड़नाइए छलै । 'गुलोश्क जीवनमे आ उपन्यास मे डूबबाक योग्यतो मैथिलीक सभ लेखक मे संभव नहि छलैक। जेना राजमोहन झा कोनो जनम मे ई उपन्यास नहि लिखि सकैत छलाह, यद्यपि ओ उपन्यास लिखियो नहि सकलाह! ई सुभाषेजी लिखि सकैत छलाह। 'गुलो' कें तं घराड़ीयो अपन नहि छै। ओकर पिते सं भागिन प्रपञ्च रचि गोंठ-सिपौलक घरारी लिखबा लेलकै। मैथिल-जन लेल मसोमातक घराड़ी आ इज्जति लुटनाइ वामा हाथक खेल रहल अछि। से 'जीवन्त' परम्परा 'गुलो' लग आबियो क' मरि नहि सकल! तें ओ गोंठ-सिपौल सं उपटि क' पूर्वी कोसी नहरि -अवस्थित पुनर्वास लग, बिहार सरकारक सड़कक कात खोपड़ी-एकचारी ठाढ़ क' घर आ दोकानक माध्यमे जीवन गुदस्त क' रहल अछि। के सी.ओ. ओकरा किसानी लेल जमीन बन्दोबस्ती देतै आ कृषक मजदूर बनबा-योग्य आब ओकर स्वास्थ्ये नहि रहलै!

दोकान -योग्य पूंजी नहि छै, तें टुकदुम-टुकदुम चलै छै। किछु नहि छै, दिशाहारा-सर्वहारो मे निम्नतम पायदान पर छै। मरैत-मरैत जीबि रहल छै। कोनो जीवने ने जीबि रहल छै। ओकर जीवने 'कबिराहा निर्गुन' बनि गेल छै!

ढ़ेपमारा गोसाई अपनो परिवार मे बनल अछि! कखनो कनियाँ (बेलावाली) दवाइ लेल गारि पढ़ै छै, त' सरहोजि गंजन करै छै! कखनो पुतोहु (कन्दाहावाली) पाइ अछैत परिवार कें भूखल-दु:खल राखि, 'गुलो' कँ

हैसियति बुझा दै छै, कखनो बेटी रिनियां 'झुट्ठा' कहि दै छै (उचित सख-सेहेन्ता पूरा नहि भ' पओला पर) तश्कखनो बेटा (छोटुआ) झझकारि दै छै! तैओ 'गार्जन' भ' क' परिवारक गाड़ी घिचनाइ छै । कहियो अनवर सँ बेटीक लेल दवाइ मंगैत अछि, कहियो डीलरक कृपा सँ गरचुन्नी माँछ आ छागरक मासुक चरी-भोंटी-अंतरी-भोंतरी सँ फगुआ आ पावनि-तिहारक सख-सेहेन्ता पूर करैत अछि। पता नहि, किए जिबैत अछि ओ? आ कखनो तमसाइए त' परिवारो मे झाड़ि दै छै-गुलो मंडल नाम छिऐ हमर! ठेंठपना नै देखा हमरा! 'ओ स्वतंत्र भारतक समाजक बिक्ख सँ विखिन्न भेल नागरिक थिक। फूसक घर आ चापाकल ठीक करेबाक लेल बेलल्ला! सदिखन भानसेक चिन्ता! एहेन ओ असगर नहि अछि देश मे, करोड़क-करोड़ छै! सैह विडम्बना छिऐ! तैओ ओ भोट नहि बेचैत अछि! ओकरा लेल सरकार, समाज, नेता, मुखिया, ग्रामसेवक, भी.एल.डब्लू, लोन देबएबला बैंक, विकास अधिकारी, क्यो नहि छै कत्तहु!

कोनो पावनि-तिहारक कोनो अर्थे नहि छै। ओकरा मुँह स' 'सम्मानजनक बोली कोना निकलतै? अपनो परिवारक लेल गारिये निकलै छै। के छै हित ओकर, जे चिन्ता करतै? जीलै त', मुइलै तश... संवेदना ककरा छै? ओकरा लेल ग्राम स्वरोजगार योजना कत' छै? ओकर बेटी (रिनियाँ) लेल कन्या विवाह योजना नहि छै, तें दू टा गाछ गुलो ओकर विवाहक नाम पर उसरगि क' राखने छै आ तकरा बेच' लेल तैयार नहि होइ छै। सरकारी सड़क पर बनेबाक लेल इन्दिरा आवास नहिए छै ओकरा लेल। अपने मोने बैंक लोन आ इन्दिरा आवास नहि पहुँचि जेतै ओकरा दोकान पर आ ओकरा रास्ता देखले नहि छै बलौक आ बैंकक! कोन जमीनक खाता-खेसरा देतै, कोनो की वासगीत पर्चा भेटल छै?

मुखिया-मनेजर लेल एहेन लोकक कोन महत्व छै? सरकारी योजना पैरवी, घूस आ राजनीति पर चलै छै! छोटुआ लेल न्यूनतम मजदूरी एक्ट (पलाइ-फेक्ट्री) के कोनो अर्थ नहि छै, पचास टाका रोज (दोसर ठाम साठि टाका रोज कहल गेल अछि) पर!

बस्स परिवारक प्राण-रक्षा होइ छै कहुना । कन्दाहावाली कृषक मजदूर छै! मुदा कृषक मजदूर वा महिला मजदूर कें कतेक मजदूरी भेटै छै! ओकर घरवाला त' रोजगारेक अभाव मे पलायन क' गेल छै आ नरेगा-मनरेगा टुकुर-टुकुर तकिते रहि जाइ छै-'जॉब कार्ड दिस! बालिका आ महिला समृद्धि योजना, बाल स्वास्थ्य योजना ने त' बेलावाली-कन्दाहावाली-रिनियाँ लेल छै आ ने सुजीत लेल! आब स्वास्थ्य बजट पास भेला स' त' चालीक दवाइ रिनियाँ के वा खोंखीक दवाइ बेलावाली -गुलो के नहिए भेटि जेतै!

एखन धरि सुप्रीम कोर्टक परतापें विरधा पेंसिन, अन्नपूर्णा अन्न योजनाक अरबा चाउर आ रिनियाँ के पोशाकवला पाइ इसकुल स') कहुना क' कहियो -काल, चाहक दोकाने जकाँ , टुकदुम-टुकदुम पहुँचि जाइ छै, से गुलोक सौभाग्य! ओकरा सी.ओ. आ कर्मचारीक कृतज्ञ रहनाइ छै, जे सड़कक अतिक्रमण लेल दोकान-घर उजाड़ि नहि रहल छै, जेंकि ओकरा पर क्यो दरखास नहि देलकै अछि। ई स्थिति पुनर्वास परहक थिक, कोसी पेटक दुःख-दर्द आर करुण-क्रन्दन-युक्त अछि। अनियोजित आ गड्ड-मड्ड विकास योजना मे सैह होइ छै! तखन ई कहब अनुचित हैत, जे कोसीये क्षेत्र मे ई परिस्थिति अछि। वस्तुतः सम्पूर्ण मैथिली समाज मे, सम्पूर्ण भौगोलिक आ सांस्कृतिक मिथिलांचल मे,अनेक जातिक निम्नवर्ग मे वा वर्गहीन मनुक्खक यैह दु:स्थिति अछि। गुलो एकटा व्यक्ति नहि, अपन वर्ग आ वृहत्तर मैथिली समाजक प्रतिनिधि थिक, जकर सृजन लेल लेखक चिरस्मरणीय रहताह!

विविध प्रकारक मैथिली राष्ट्रीयता आ जाति, जकर अस्तित्व सामाजिक,आर्थिक रूपें कमजोर छै, हुकुर-हुकुर क' दम तोड़ि रहल अछि, सरकार-समाज संरक्षण देबाक बजाय, उन्मूलन करए मे लागल अछि। वस्तुतः ई उपन्यास एकटा 'मॉडल परिवार', एकटा 'उपेक्षित मुदा अस्तित्व लेल संघर्षरत परिवार' आ समाजक करुण गाथा थिक, जकरा मे सुख-सेहन्ता, कुटुम-कुटमैता, प्राणरक्षा निमित्त कयल जाइवला छोट-छोट बइमानी, पारिवारिक प्रेम-प्रदर्शन आ जीवनक सम्पूर्ण सर्वहारा सौन्दर्य-बोधक सांगो-पांग जीवन्त आ प्राणवन्त चित्रण भेल अछि!

वस्तुतः 'बलचनमा' (यात्री बाबा) आ 'पृथ्वीपुत्र' (ललित)क उपरान्त,समाद आ समयक विकासक संग अनेक प्रस्थान-बिन्दु मैथिली उपन्यास-साहित्य मे भ' सकैत अछि। ताहि मे सं एक प्रस्थान-बिन्दु सुभाष चन्द्र यादवक 'गुलो' सेहो भ' सकैत अछि! मैथिली-समाजक अन्तस्तल मे, विकास-प्रक्रियाक विकृतिक मूल्यांकन करैत, कोन लेखक कतेक अन्दर धरि धंसि सकैत छलाह वा छथि, ताहि मे सर्वाधिक भेदक क्षमतायुक्त लेखक जे हेताह, से समाजक अन्तिम पाँतीक सर्वाधिक निरसल मनुक्खक जीवन-गाथा धरि विश्वसनीय रुपें पहुँचि सकताह। से पहुँचि सकलाह 'गुलो' धरि, डॉ. सुभाषचन्द्र यादव, जखन ओ सुपौल-पुनर्वास पर घर बनौलनि आ पुनर्वासक बगल मे, रस्ता कात मे आबिक' 'गुलो' बसि गेल। अन्यथा, प्रोफेसर कॉलोनी, सहरसा, मे, लेखक कें ई पात्र भेटब कठिन छलनि। सेहो खाली पात्र भेटि गेने थोड़बे किछु होइ छै? पात्रक अन्तस्तल मे, जीवन-धारा के आत्मसात् करए पड़ैत छै आ ओकर परिवेश मे रमय पड़ैत छै! लेखकक से रमनाइ, रमनगर भेल अछि। लेखक कें साधुवाद जे ओ उपन्यास लिखैत काल, दलितवादी वा पचपनियाँ (जाति) बनि क' नहि लिखलनि। मात्र 'गुलोश्वादी आ जनवादी भ' क' लिखलनि, तें मानवीय गरिमाक जबर्दस्त मांग करैत, मानवीय भावनाक उद्रेक पाठकक हृदय मे गुलो करैत अछि,जखनकि ओ जबर्दस्त 'पचपनियाँ मैथिलीश्क सौन्दर्य-बोध सँ आ पात्रानुकूल फोटो-स्केच-चित्र सं सजा देलनि 'गुलोश्क महागाथा कें! ओना उपन्यास-कलाक हिसाबें तिलिया-फुलिया-विहीन अइ उपन्यासक औपन्यासिकता वा दीर्घ-कथात्मकता पर, फूट सँ बहस उठाओत जा सकैत अछि। मुदा डा. सुभाषचन्द्र यादवक कथाक पाठक कें, से महत्वहीन बुझेतै। ओ तं सभदिन जीवनक 'सारभूत तत्व' कें सारिले रूप मे उपस्थापित करैत रहलाह अछि,अपन लेखनक सभ विधा मे। तें ताहि 'ीलीक प्रभाव, हुनकर उपन्यासो पर भेनाइए छलै। पैघ बात ई थिक ,जे संवेदनशील पाठकक हृदये मे नहि, हृदय आ आत्माक सभ तंत्र में, गुलोक कथा, निरंतर रक्त जकाँ उतरैत आ बहैत चलि जाइत अछि, कोनो काव्यमय लोकगाथा जकां। आ जे पाठक गरीबी भोगने अछि, तकरा त' अन्तस्तलकेर ओ आवेग, फेर बाह्याभिमुख बनि 'नयन-नीड़' भ' प्रवाहित होइ छै। आर कोन

सफलता चाही कोनो उपन्यास के? जकरा जीवन मे एकैसम सदीक दोसरो दशक मे सूर्योदय आ सूर्यास्त मे कोनो अन्तर नहि होइत हो, तकरा जीवन के प्रतिपाद्य बनौनाइ कोनो 'दुस्साहसी लेखिनीएं' सं संभव अछि। 'गुलो' सरलताक सौन्दर्य-बोध सँ आप्लावित अछि। एकर कथात्मकताक 'ट्रीटमेंट' निरंतर प्रवहमान धेमुरा-तिलयुगा सन कल-कल निनाद करैत अछि आ पाठकक मनो-मस्तिष्कक तंतु-तंतु कें झंकृत करैत अछि। पाठक के कोनो शिकाइत नहि छै, जे उपन्यास के अध्याय मे किएक ने बॉटल गेलै? गुलोक पारिवारिक जीवन सम्पूर्णताक मांग करैत अछि, खण्ड-खण्डक नहि। तें अइ उपन्यासक यैह शिल्प-चयन उचित छल। जेना डोमक जीवन पर डॉ. महावीर प्र. द्विवेदीक 'डोम' कविता प्रतिमान बनि गेल, जेना हिन्दीक 'मुसलमान' (कविता) भारतीय मूसलमानक जीवनक दर्दक प्रतिमान वनि गेल, तहिना 'गुलो' पिछड़ल-वर्गक जीवनक प्रतिनिधि आ सय प्रतिशत विश्वसनीय दस्तावेज बनि गेल अछि! कोनो कल्पनाशीलता आ 'रोमान्टिसिज्मक कशीदाकारी' नहि अछि 'गुलो' मे! यथार्थ... यथार्थ... आ... यथार्थ...! डाँड़क हाड़ सरकाब' बला विडंबना... विडंबना... विडंबना...! एहेन 'रेशनलिज्म' जे मैथिली-समाजक कमजोर राष्ट्रीयताक पशुवत् जीवनक... झीनी ...झीनी... बीनी... चदरिया...!

की कबीरक फक्कड़ जीवन, की मिर्जा गालिब केर फाटल जेबी, की गोनू झाक पेनकट्टा छिट्टाबला जीवन, की बहादुर शाह जफरक अंडमान-निकोबार-जेलक फटेहाल जीवन-शायरी, की महाप्रकाश भाइक 'अर्थ-सीदित मुसुकी', तहिना 'गुलोक' महागाथा! झीनी. झीनी... बीनी चदरिया...! चालनि मे पानि भरैत गुलो! जेना आसमाने फाटल हो आ 'गुलो' (दर्जी) भरि जिनगी टाँक लगाबैत हो! जेना मैथिली समाजक निम्नवर्ग दुनियाँ में अबिते अछि करिया कम्मल कें उज्जर करबाक दायित्व ल' कश! जेहने मे जन्म, तेहने मे जीवन, तेहने मे मृत्यु! 'हा-हा। भारत दुर्दशा न देखी जाई!' उपन्यास मैथिली-समाज आ सरकार कें चेतीनी दैत अछि, गुलोक अस्तित्व आ ओकर भाखा के सर्वतोभावेन स्वीकारल जाय, ओकरा मनुक्खक गरिमायुक्त जीवन प्रदान कयल जाय। अन्यथा, उपन्यासक 'शान्तिपूर्ण निष्कर्ष' (याचना) सार्वकालिक नहि रहि सकत आ समाज लेल खतरा बनि जायत। एखन धरि सम्पूर्ण कोसी-क्षेत्र वा सम्पूर्ण मैथिली समाजक 'माओवादीकरण' वा 'नक्सलीकरण' नहि भेल अछि, से समाज आ सरकार लेल राहतबला बात आ एकटा अवसर अछि, जे सामाजिक विषमता दूर करबाक ठोस उपाय करय! अन्यथा, आर्थिक आजादी आ सामाजिक समानताक अभाव में, पिछड़ल आ कमजोर राष्ट्रीयता सभक अस्तित्व-लोप अथवा सशस्त्र विद्रोह सॅ, अंततः घाटा मिथिला आ भारतक समाजे कें छै! आर्थिक आ सामाजिक विषमता समाजक कोनो वर्गक लेल कल्याणकारी नहि मानल जा सकैत अछि। एहेन परिस्थिति मे क्यो दु:ख-दैन्य सँ मरैत अछि, त' क्यो तद्जन्य उत्पन्न अशांति सँ । सभ्य आ स्वस्थ समाज सर्वाधिक निचलका पायदान परहक लोक लेल, सभ सँ पहिने आ सभ सँ अधिक, सोचैत अछि।

गुलो, रिनियाँ, बेलावाली वा सुजीतक याचना करबाक संस्कार वा स्वभाव (बेरोजगारी मे अथवा ओकरा धरि योजना सबहक लाभ नहि पहुंचबाक स्थिति मे) उग्र आ विस्फोटक होइतहिं 'क्रूरतम हिंसा' मे परिणत भ' सकैछ, मात्र एकटा सलाइक काठीक बदौलत! उपन्यासक से निष्कर्ष गंभीरतापूर्वक ध्यातव्य अछि। मैथिली समाज आ समकालीन 'ाासन-व्यवस्था लेल परिस्थिति, विस्फोटक प्रतिशत धरि पहुँचल अछि आ कए क्षेत्र मे विस्फोट निरंतर भ' रहल अछि, तकर 'गंभीर संज्ञान' नहि लेल जा रहल अछि! मात्र विधि-व्यवस्था संघारण सँ 'असहज शान्ति' स्थापित क' सरकार सभ अबैत अछि आ चलि जाइत अछि!

उनटे 'गुलोश्क सामाजिक आ सांस्कृतिक अस्तित्वक (पचपनियां मैथिली समेत) उपेक्षा क' क' , अवडेरल आ 'अस्तित्व-इनकार' कयल जा रहल अछि। एहेन ज्वलंत सामाजिक समस्याक जीवंत उपस्थापन, शान्तिपूर्ण ढंगें, लेखक मर्यादित शैली मे, केलनि अछि। मुदा विद्रोहक चित्रण नहि केला सँ 'आन्तरिक तनावक' संज्ञाने नहि लेल जाय, से घातक हैत आ से उचितो नहि अछि। एहेन सन परिस्थिति मे दोसर लेखक हिंसाक निष्कर्षक संग उपन्यास -समापन (याचना नहि) क' सकैत छथि आ ताहि सं सामाजिक सौहार्द्रोक अंत भ' सकैत अछि। परिस्थिति ततेक जटिल आ गंभीर अछि, जे ताहू लेल लेखक कें दोष नहि देल जा सकैछ! तें सावधान समाज आ शासन-तंत्र! जाहि 'गुलो' कें अहाँ 'पयर तरक लोक' बूझि रहल छी, से 'पयर तरक चिनगीयो' साबित भ' सकैत अछि। गुलो अपन मैथिलि समाज के 'अस्तित्वक चुनौतीक माटि' फेकि रहल अछि। ओ आजुक समाजक सभ्य आ सुसंस्कृत समाज आ सरकार द्वारा सकारात्मक रूपें अविलंब संज्ञान लेब' योग्य अछि! अन्यथा अतीते जकाँ, भविष्यो मे अइ पतनशील समाजक तथाकथित 'भगवाने मालिक'!

'गुलो'क' साहित्य-दर्पणो मे मैथिली-समाजक चेहराक प्रतिविम्ब, अत्यधिक विकृते नजरि आबि रहल अछि आ 'गुलो' द्वारा प्रस्तुत आलोचना (मैथिली समाजक विरुद्ध) तं तत्काल 'लाजवाबे' अछि! पुस्तकाकार छापल उपन्यास मे लेखक किछु पृष्ठ आर बढ़ा क' आर प्रभावशाली आ करुण-तरीका सँ उपन्यासक कथान्त केलनि अछि। ताहि मे समाजक दलाल-संवर्गक छुद्र आ ठकपनी-कमीशनखोरी शमशान-कब्रिस्तान सँ ल' क' सरकारी ऑफिस धरि भुवकंफ-मुआवजाक बहन्ने, गुलोक मृत्युपरांतक दलाली-आख्यान धरि, जाइत अछि। गुलोक लहास मे सं मासु नोचब दलाल-गिद्ध लेल पावनि थिक, चारि लाख मुआवजा मे सँ एक लाख कमीशन मांगनाइ! तें' कब्रिस्तान में गाड़ल लहास कें उखाड़ल गेल। दाह-संस्कार लेल लकड़ीक अभाव छलैक। ओहेन लोक की हिन्दू आ की मुसलमान? ओकरा लेल की शमशान आ की कब्रिस्तान? आ समाज कें कोन मतलब ओकर धर्मक? जीवन आ मृत्यक एहेन करुण आ मार्मिक चित्रण 'गुलो' के मैथिलीक उपन्यास-धाराक परंपरा सँ फराक करैत अछि आ फुटकाबैत अछि।

पचपनियां मैथिली आ गुलो

आब किछु 'गुलो'क भाखाक प्रसंग गप्प भ' चलय, जकरा सन्दर्भ मे लेखक फराक सॅ 'पचपनियाँ मैथिली' शीर्षक निबंध लिखि, (पूर्वोत्तर मैथिल) अपन भाखा-नीति बेकछाबैत छथि। ओ अभिजात मैथिलीक स्थानीयकरण आ जनवादी स्वरूप-निर्धारण, वर्त्तनी-अराजकता-उन्मूलन

आ 'सर्वसमावेशी उदार दृष्टिकोणक अपेक्षा', अपन मैथिली समाज सँ करैत छथि। हुनकर से अपेक्षा करब, कहां सं अनुचित अछि? ओ 'गुलो' मे प्रयुक्त 'पचपनियाँ मैथिलीक' अस्तित्व-संरक्षणक पक्ष मे छथि! जहिना अपन-अपन 'भासा-नीति' ल' क' विद्यापति आ मैथिली-समाजक फणीश्वरनाथ रेणु (हिन्दी मे) 'क्रान्तिदर्शी' छलाह, तहिना एक दीर्घ अन्तरालक उपरान्त सुभाषचन्द्र यादव अपन क्रान्तिकारी 'भाखा-नीति' प्रदर्शित केलनि अछि । ई 'शान्त-क्रान्ति' 'गुलो' उपन्यास मौन रहैत, करैत अछि। मुदा लेखकक निबंध तकर मुखर भ' क' ओकालति करैत अछि। वस्तुत: 'गुलो' आ ओकर 'पचपनियाँ मैथिली', दु:ख-दर्द सं कहरैत एकटा भूखण्डक आर्त्तनाद आ करुण-गाथा थिक। आदर-रहित बोली(निम्नवर्गीय मैथिली) केर उपेक्षा, अभिजन-वर्चस्ववला 'मिथिला समाज' मे अवश्यंभावी छल। से मिथिला मिहिर आ अभिजात समाज द्वारा स्थापित वर्त्तनीक भाषाशास्त्रीगण द्वारा 'प्राध्यापकीय गछाड़वला जालश(राजमोहन झाक शब्द मे) फेकैत, तत्कालीन 'विद्वत्-समाज' द्वारा कयल गेल। तकर शिकार गैर-अभिजात लेखक आ आदर-रहित बोली, (निम्नवर्गीय आ पचपनियां मैथिली) दुनू भेल। 'बहिर्भुक्ति-कूटनीति' चलि सकल आ नचिकेता थीक सपना 'अन्तर्भुक्तिक उदारता' उपेक्षितक उपेक्षिते आ अपेक्षिते रहल!

आब जखन सामाजिक आ भाषिक चेतनाक प्रसार सभ समुदाय मे भ' रहल अछि, अपन-अपन बोली आ टोन लेल उपेक्षित समुदाय त' 'प्रतिक्रिया' अभिव्यक्त करबे करत आ अपन अस्तित्व-चिन्ता कें, भाषाक स्वरूप वा भाषागत राजनीति सँ जोड़ि क' मांगक औचित्य प्रतिपादित करबे करत। से अनर्गल सेहो नहि हैत ।आ सैह भ' रहल अछि।डा. रामावतार यादवक भाषाशास्त्रीय धारा आ तकर हुनका द्वारा कयल जा रहल विश्लेषण,दुनू मिथिलाक, समेकित भौगोलिक मिथिलाक, एकटा पैघ आ बहुसंख्यक वर्गक भाषिक आकांक्षाक प्रतिनिधित्व क' रहल अछि, से यथार्थ तथ्य आइ हमसब नहि बिसरि सकैत छी। कए दशक सँ मैथिलीक लेखकगण चिचिया रहल छथि जे, 'मुख्य अभिजात मैथिलीक' 'सर्वसमावेशी एकटा वर्त्तनीक आ भाषाक मानकीकरण आ विविध बोलीक विभिन्न वर्त्तनीक विविधताक स्वीकार' हेतु भाषाशास्त्रीगण, वैयाकरण आ मैथिली-सेवी संस्था सभक समेकित बैसार हो। मानकीकरण अभियानक अंतिमीकरण हो। मुदा ताहि मे मैथिली अकादेमी, साहित्य अकादेमी, चेतना समिति, पटना, सब अक्षय साबित भेल आ सी.आइ.आइ.एल., मैसूरक आयोजनमे मैथिलीक भाषाविद् आ वैयाकरण सभ 'फेल' केलनि! प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण भेलाह मात्र डॉ. रामावतार यादव (नेपालक मैथिली-भाषाशास्त्री) आ डॉ. सुभाषचन्द्र यादव,जिनकर वर्त्तनी कँ मोजर देबा मे हमरा सभ कें घाम छूटि रहल अछि! अंतत: हम सभ, मैथिलीक मुसलमानी बोली, पचपनियाँ पिछड़लवर्गीय मैथिली आ अन्य निम्नवर्गीय मैथिली, समस्त मिथिला-क्षेत्रीय ठेंठी-बोली , महानन्दा-सुधानी क्षेत्रक देसिया-पोलिया मूल द्वारा भाषित 'सूर्यापुरी-बोली' (मूल मैथिली ठेंठी+बंगला+नेपाली+ उर्दूक टोन मिश्रित) खगड़िया-बेगूसरायक 'छिका-छिकी बोली' (ग्रियर्सन-सर्वेक्षित)वा अंगिका-बज्जिका कें, हृदय सँ, लिखित रूप मे, मिथिलाक 'अप्पन बोलीक रूप मे कहिया स्वीकारब आ स्थान देब?

के करत अभिजन-सीमा सँ ऊपर उठि क' 'वृहत्तर भाखा शास्त्रक' निर्माण? सर्वसमावेशी, वैज्ञानिकताबला स्वरूप-निर्धारण, एकटा पैघ चुनौती थिक। भाषाशास्त्री आ वैयाकरण 'फाइनल' नहि करताह, त' लेखक सूतल नहि रहत। सी. आइ. .एल. के, टी.ए.-डी.ए. ल' क' कोन-कोन उपलब्धि भ' सकल अन्तिम रूपें, तकर विवरण मैथिली-समाज कें बूझब आइयो अपेक्षिते छै। निम्नवर्गीयक आ पिछड़ा पचपनियाँक मैथिली आ मैथिलीक आन-आन बोलीक अवसान कए मैथिलीक कल्याण आ विकास सहस्राब्दी -सहस्त्राब्दी धरि संभव नहि अछि आ आदर-सूचकतावला अभिजात मैथिलीक-दीर्घजीविताक गारंटी असंभव अछि, ई दुनू तथ्य जनैत हमर समाज 'कूटनीति' -'कूटनीति' खेला रहल अछि। तें जे पचपनियाँ-लेखक 'पचपनियाँ मैथिली कें पूर्णत: छोड़ि, मुख्य अभिजात-मैथिलीक लेखक बनैत छथि, त' साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटि जाइ छनि आ सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रह (बनैत-बिगड़ैत) के पचपनियाँ मैथिलीक कारणें, 'विचारे योग्य' नहि बूझल जाइ छनि। कतेक कारुणिक यथार्थ थिक ई? तकियाकलाम लीक पर दकियानूसी सोच सं चलैत रहबाक, पैघ उदाहरण थिक ई।

'गुलो'क पाठकीयता मे पचपनियाँ-मैथिलीक कारणें, कोनो टा प्रवाह-अवरोध एकदम्मे नहि अछि। ई मैथिली कोसी-क्षेत्रे टा मे नहि, सम्पूर्ण मैथिली क्षेत्रक निम्नवर्ग आ पिछड़ा वर्ग मे जड़ि जमौने आ जनप्रिय अछि। कोसी-क्षेत्रक टोन मे आन क्षेत्र सं कनियें-कनियें विभिन्नता छै। ब्राह्मणेतर आ सवर्णेतर पचपन जातियो, केवल कोसीए-क्षेत्र मे नहि, सम्पूर्ण मैथिली-क्षेत्र मे अछि। तखन विचारणीय ईहो अछि, जे 'जाति-आधारित' एकीकृत मैथिली-राष्ट्रीयता आ समावेशी अस्मिताक निर्धारण हो अथवा 'वर्ग-आधारितश? मैथिल-महासभा कें नाजायज आ लव-कुश महासभा,चन्द्रवंशी-सूर्यवंशी-महासभा, ब्रह्मर्षि महासभा, यदुवंशी-महासभा आदि कें, जायज कोना मानल जाय? मुदा तथ्य ध्यातव्य ईहो थिक, जे 'भारतीय समाजवादी चिन्तन' मे वर्गक एक प्रारूप 'जातियो' कें मानल जाय लागल अछि, जखन कि समाजवादी सपने थिक 'जाति-वर्ग-नस्ल-विहीन' समाजक रचना! तखन जाति आ वर्गक बहन्ने 'तृणमूलीय बोली' के 'निर्मूल' करब, कतेक उचित हैत? ओना कोसिकनहो मे 'भए गेलै' चलै छै, सुभाषभाइबला 'भाए गेलै' नहि। मुदा ई अन्तर उच्चारणक ध्वन्यात्मकता मे कारणें अछि, जकर वैज्ञानिकता के 'एकाउस्टिक्स' (ध्वनि-शास्त्र) आ 'फोनेटिक्स' (उच्चारण शास्त्र) सं समन्वय क', परेखि क' , सर्वसमावेशी मानकीकरण आ मैथिली राष्ट्रीयताक स्वीकृतिकरण-प्रक्रियाक क्रम मे समायोजन आ अन्तर्लीनीकरण हेबाक चाही। 'पचपनियाँ मैथिली' अभिजात मैथिलीक स्वरुप बदलि, जनसामान्यीकरण करबाक उचित प्रक्रियाक अनुरोध थिक।

पचपनियाँ लेखकगणक आ आन जाति-वर्गक जनपक्षीय लेखकगणक 'पचपनियाँ मैथिली' आ 'निम्नवर्गीय मैथिली' मे लिखब, स्वाभाविक रूपें अपेक्षित अछि । ताहि सं पचपनियाँ मैथिली कें अनेक लेखक भेटतैक, भलें तकर कारण, हुनका सभ कें साहित्य अकादमी पुरस्कार भेट' मे देरीए किएक ने होइनि! आब जखन मैथिली मे समीक्षा-आलोचना कें 'सृजनात्मक' लेखन नहि मानल जेबाक कारण

ों, कोनो आलोचक कें साहित्य अकादमी पुरस्कार विचार-योग्य नहि मानल जायत, तखन तं मैथिली मे आलोचना-साहित्यक आलोचककेक प्रकाशन-व्यय सं 'आत्मनिर्भर विकास मात्र' संभव अछि, जखनकि एकेडमिक-ब्रान्ड-निबंध-लेखक कें पुरस्कृत करबा मे किनको कोनो दिक्कत नहि हेतनि! समस्त मिथिलाक समग्र विकास लेल सभ जाति आ वर्गक 'अन्तर्भुक्तिक राजनय' आ ओकर बोलीक अस्मिता-स्वीकार जरूरी अछि। मुदा मुख्य-मैथिली त' तेहेन जड़,जीर्ण, कृत्रिम,आ वैविध्यपूर्ण वर्त्तनीक अराजकताक फाँस मे फाँसल अछि, जे सीताराम झा आ यात्रीयो जीक 'काव्य-भाखाक परंपरा' कें हम सभ आगू नहि बढ़ा पबैत छी, त' 'पचपनियाँ आ आन बोलीक' साहित्य कें छापबाक आ स्वीकार करबाक उदारता केना आओत? जरूरति छै मनबोध,चन्दा झा, सीताराम झा, किरणजी,आ यात्रीजीक,जमीनी-भाखा आ तकर परंपराक, जखनकि स्थापित कयल जाइछ -कविशेखर बद्रीनाथ, हर्षनाथ, गोविन्द दास आ सुमनजीक 'जटिल शास्त्रीय भाषाक' परंपरा! 'भाषा' सँ 'भाखाक' दूरी मेटा नहि पबैत अछि, त' 'भासा' पर आबिक' हम सब समझौता क' लैत छी । विद्यापतिक 'बिज्जाबइ भासा' (शब्द) के त' ल' लेल हम सभ, मुदा 'बिज्जाबइ भासाश्क अर्थ-सन्देश कें लेबाक उदारता देखा नहि पाबि रहल छी । आउ, हम सभ 'अभिजात मैथिलीक एकाधिकारवादी-दृष्टि आ कृत्रिमताक अलंकरण' सँ मुक्ति पाबी! साहित्य कें अनिवार्यतः 'सुन्दरम्' (सेहो) मानएबला कें 'आदर-रहित मैथिली' (छवद-ोिवदवतपपिब) कोना पचतनि?

ओना 'गुलोक 'पचपनियाँ-मैथिली' मे सेहो, ओइ बोलीक वर्त्तनीक एकरूपताक, सय प्रतिशत निर्वाह नहि भ' सकल अछि, से पुनर्विचार आ संशोधन-योग्य अछि। कारण, साधारण भाषिक अनुशासन त' 'पचपनियाँ मैथिली' मे सेहो हेतैक। समस्त मैथिली-समाजक 'निम्नवर्गीय मैथिली' आ 'पचपनियाँ मैथिली' मे कोनो विशेष मौलिक, वैयाकरणी अन्तर नहि अछि । जेना 'गुलो' मे पात्र सब द्वारा (लेखकीय-नैरेशन मे नहि) छै, छइ, है, हइ, अनेक प्रारूप प्रयोग मे आयल अछि । वस्तुतः कोसी क्षेत्रक 'पचपनियां मैथिली' मे 'लोग'क बदला मे 'लोक' 'केलाक' बदला मे 'केरा', 'कम्मरश्क स्थान पर 'कम्मल' शब्द प्रयुक्त होइत अछि। ई सब लेखकक हिन्दी-प्रेम अथवा कोसी-क्षेत्र पर हिन्दी-प्रेमक प्रभाव अथवा अति-स्थानीयकरण प्रवृत्ति भ' सकैछ। ओना पांच कोस पर बोलीक टोन आ पानि बदलबाक कहबी, मैथिली समाजक राष्ट्रीयता आ जाति सब मे यथार्थपरक अछि। मुदा लेखक 'दै' आ 'दइ' दुनू तरहक शब्द लिखैत छथि। 'जायत' केर स्थान पर 'जैत' आ 'चलबए' के स्थान पर 'चलबय' , पचपनियाँ मैथिली मे लेखक लिखैत छथि।ओ 'लाए' आ 'लए' दुनू लिखैत छथि। हुनकर 'लाए' 'काए' 'भाए' अस्वीकार्य आ 'लए' 'कए' 'भए' कोसिकनहा मे स्वीकार्य आ प्रचलित अछि। से सहरसा-पूर्णियाक दस वर्षक प्रवास सं हमहूं जनैत छी। ओना एखन मैथिली मे अधिकतर नव-पुरान लेखक कें एना भ' रहल छनि, जे विविध रूपक अभिजात मैथिलीक कृत्रिमता आ अनेक वर्त्तनीक अराजकताक कारणें, लेखन मे 'एकरूपता' निर्वाह नहि भ' पाबि रहल छनि। मुदा कोनो एक 'बोलीक' (कपंसमबज) वर्त्तनी मे सेहो एकरुपताक निर्वाह हैब आवश्यक अछि। से तखने संभव हैत, जखन सभ 'बोलीक' फराक-फराक वर्त्तनीक एकरूपताक निर्धारण आ मानकीकरण भ' जाय। तहिना मुख्यधाराक अभिजात मैथिलीक सेहो 'सर्वसमावेशी दृष्टिकोण-आधारित' (एकाधिकारवादी दृष्टिकोण त्यागि) कृत्रिमता-मुक्ति, स्वरूप आ वर्त्तनी-निधरिण वा मानकीकरण, तकर अन्तिमीकरण (पिदंसपेंजपवद) एकहि संग हो! आ से भाषा-विज्ञानक 'उदारवादी आ वैज्ञानिक नजरिया' (पारंपरिक दृष्टिकोण कें छोड़ि) उच्चारण-शास्त्र (फोनेटिक्स) आ ध्वनि-शास्त्र (एकाउस्टिक्स)क 'समन्वित नजरिया' सं आ 'समेकित उपयोगक' जमीनी दृष्टिकोणक आधार पर हो, बिना कोनो कुटिलता आ कूटनीतिक! अनुदार दृष्टिकोणवला जीर्ण-शीर्ण मानसिकता सं, से हैब संभव नहि अछि।

अभिजात धाराक मुख्य मैथिली कें सुयश आ धन्यवाद दैत, जाहि तरहक उदारता, डॉ. सुभाष चन्द्र यादव अपन निबंध (पचपनियाँ मैथिली) मे प्रदर्शित केने छथि, तकरे आ ताही उदारताक प्रदर्शन, मुख्य मैथिलीक सभ विद्वान कें, मुख्यधाराक अभिजात-मैथिलीक वर्त्तनीक मानकीकरणक अन्तिमीकरण मे आ तकर सभ बोलीक मानकीकरणाक अंतिमीकरण मे करबाक चाहियनि। तखने अराजकता निवारण आ भाखा-बोलीक वैज्ञानिक स्वरूपक निर्धारण-संस्थापन आ संरक्षण संभव अछि।तखने वर्त्तनी-सम्बन्धी, नव लेखकक असमंजस आ दुविधा दूर हैत, जे अत्यावश्यक अछि। तें आब विमर्शक चरण सं आगू बढ़ि, मैथिली-मिथिलाक सिरमौर संस्था आ सम्बन्धित विद्वत् समाज कें तत्सम्बन्धी कार्यक्रम आयोजन आ क्रियाकलाप मे, क्रियाशील भ' जेबाक चाहियनि! अन्यथा, क्षतिपूर्ति संभवे नहि भ' सकत आ भाषाशास्त्रीगण एक-एक दशकक अन्तराल पर, ज्योतिषशास्त्रीय शैली मे,जमीन सं कटल मुख्यधाराक 'अभिजात मैथिलीक' मृत्युश्क भविष्यवाणी करैत रहताह आ अपन-अपन दायित्वक इतिश्री बुझैत रहताह, जखनकि मात्र कृत्रिमतायुक्त आ छिन्नमूल 'अभिजात मुख्य मैथिलीक' मृत्युक संभावना बनल रहत आ तृणमूलीय टोनबला बोली सभ जिबैत रहत, से भाषा -विज्ञानक जमीनी-संस्करणक सिद्धांत आ तकर इतिहासो सँ बेर-बेर प्रमाणित होइत अछि। तें सन्देहक कोनो गुंजाइश नहि, जे 'गुलो' अपन अस्तित्व-संरक्षण आ युग-निर्माण, भारतीय आ नेपालीय मैथिली-समाजक राष्ट्रीयता आ जाति-वर्ग सभक मध्य, क' चुकल अछि। हम सभ जहिया ई तथ्य स्वीकार करी! दुनू देशक समस्त मैथिली समाजक निम्न आ पिछड़ल-वर्गीय राष्ट्रीयता (छंजपवदंसपजल) सभक विकास-सम्बन्धी महत्वाकांक्षा आ भाखा-संस्कृति-बोली-संरक्षणा-सम्बन्धी महत्वाकांक्षा, सचेत आ चेतनासम्पन्न भ' गेल अछि। तकरा अबडेरनाइयो आब संभव आ उचित नहि अछि।

तेँ 'गुलो' आ 'पचपनियाँ मैथिली' (डॉ. सुभाषचन्द्र यादव द्वारा ठाढ़ कयल गेल विमर्शक) मिथिला-समाज आ मैथिली भाषाक वृहत्तर हित मे स्वागत करैत, हर्ष भ' रहल अछि।

साहित्यिक-सांस्कृतिक हलचल

मैथिलीक साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिवृद्धि लेल भरल-पूरल रहल बीतल साल 2021



रामबाबू सिंह

मशहूर टीवी एंकर रजत शर्मा कैं भेटल अटल मिथिला सम्मान

पूर्व प्रधानमंत्री स्व० अटल जीक सम्मानमे आयोजित अटल मिथिला सम्मान समारोह ,राजधानीक पांच सितारा होटल ली मेरेडियनमे 25 दिसम्बर कै मनाओल गेल। कला साहित्य सेवा संचार संस्कृति ज्ञान योग आदिमे उत्कृष्ट योगदान देनिहार समाज सेवी लोकनिकेँ ई सम्मान देल गेल। मिथिला फाउंडेसन आ हिन्द पोस्ट मीडिया द्वारा आयोजित एहि कार्यक्रमक विशिष्ट अतिथि छलाह अध्यक्ष लोकसभा ‘ ओम बिड़ला’ सङ्गे सम्मानित व्यक्तिमे पदम भूषण रजत शर्मा, पदम् भूषण उदित नारायण,पूर्व राज्यसभा सांसद प्रभात झा, सांसद दरभंगा गोपाल जी ठाकुर सङ्गे आओर कतेको गणमान्य व्यक्ति।

सम्मानित व्यक्तिक सूची मे शामिल अछि अछि दीपा नारायण, पलक मुच्छल, आचार्य पंडित धर्मेंद्र नाथ मिश्रा, उपेंद्र महतो, वर्तिका शुक्ला, पूनम मिश्र, रंजना झा, धर्मेंद्र कुमार यादव, कमलेश मिश्रा, रत्न झा, जे पी सिंह, त्याग राजन, नीलेश देबड़े, सुहास एल यतिराज, रोहित देव झा, विजय साहू, शैलेश झा, शम्स आलम, मनीष राय आ आदित्य झा। मंच संचालन किसलय कृष्ण आओर आशा झाक छलनि। एहि परिकल्पनाक मूर्त रूप देनिहार सङ्गे आयोजनक अध्यक्षता कै रहल छलाह युवा आइकॉन प्रदीप कुमार झा।



मधुबनी लिटरेचर फेस्टिवल मे आकर्षणक केंद्र रहल सीताजीक 162 स्वरुपक चित्रण आ ‘एकवस्त्रा’ रैंप शो

कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरिभंगामे 12 सँ 15 दिसंबर धरि ‘मधुबनी लिट्रेचर फेस्टिवल’ केर धूम रहल। राजनगर सौराठ सहरसा केर पश्चात दरिभंगाक आयोजनमे दृष्टि आ दृष्टिकोण दुनू सम्पन्न देखल गेल। अनुदिनक एकहक सत्र आ सत्रमे विमर्श लेल राखल गेल विषय वस्तु सार्थक रहल। समारोहक शुभारंभसँ ल’ क’ समापन धरि मूल उद्देश्य केर प्रति समर्पित देखल गेल। स्कूल कॉलेजक युवा छात्र छात्राकेँ भाषायी चेतना जागृति हेतु एहि आयोजनमे एकटा नव प्रारूप बनाओल गेल छल।ओ सभ बेसी मातृभाषासँ विमुख अछि कारण स्कूल कॉलेजमे शिक्षाक आभाव। फेस्टिवलक प्रमुख आकर्षण केर केंद्र रहल मैथिली अर्थात सीता जीक 162 (एक सैय बासठ) स्वरूपक चित्रण। ‘वैदेही भ्रमण’ फोटो गैलरीमे बनाओल गेल फोटो बेस आह्लादित कएलक।



दरभंगाक अमता घराना जनिकर विश्व पटल पर ध्रुपद गायनमे विशिष्ट पहचान अछि, हुनकर तेरहम पीढ़ीक प० रामकुमार मल्लिक

आ हुनक संगी द्वारा एतय गायन भेल। सीता ओना तँ वैश्विक स्तर पर वन्दनीय छथिन मुदा हुनकर चरित्र चित्रण सँग भारत श्रीलंका आ नेपालक तार प्रत्यक्ष रुपे जुड़ल अछि, आ तँ सीता जीकेँ समर्पित ई फेस्टिवलमे भारत नेपाल आओर श्रीलंकाक त्रिकोणीय विचार सुनल गेल। सीता जी भारत आ नेपालहिमे नहि अपितु श्रीलंकाक सेहो आराध्य छथिन। एकटा फैशन शो जाहिमे 'एकवस्त्रा' परिधान सँग मैथिल स्त्रीगणकेँ मंच पर देखाओल गेल। ओ एकटा फराक दृष्टि छल। अपन मिथिलाक कुटीर उद्योग जे वैश्विक स्तर पर ताल ठोकि सकैए मुदा ओकर प्रचार प्रसारक आभाव अपनहि क्षेत्रमे सिकुड़ि गेल अछि से पुन: जनजन मे पसरय से प्रयास कएल गेल। मातृभाषाकेँ अपन सीमानसँ ग्लोबल धरि पहुँचएबाक हेतु एहि मंचसँ हिंदी अंग्रेजी आ मैथिलीक विमर्श सेहो भेल।

एहि फेस्टिवल केर विशिष्ट अतिथिमे केरलक राज्यपाल आरिफ मोहमद खान, श्रीलंकाक राजदूत, मौलिक भारतीय विचारक राम माधव आदि छलाह। सहभागिता रहल साहित्य अकादमीसँ सम्मानित साहित्यकार लोकनिक, ख्यातिप्राप्त विदुषी, नृत्यांगना सङ्गे मंगलाचरणकर्ता पांडित्य लोकनिक। मधुबनी लिट्रेचर फेस्टिवल केर सफल समापन हेतु मुख्य आयोजक सबिता झा खान आ हुनक टीमकेँ जाएत छनि। हुनक चेतना दूरदृष्टि संघर्ष सङ्गे आत्मबलकेँ जतेक प्रसंशा करि से कमतर अछि। मिथिला केँ राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक मजगुति हेतु एहि तरहक आयोजन रामबाण सिद्ध भै सकैए।

मैथिलीक शीर्ष कवि अजित आजाद केँ भेटल हैदराबादक प्रसिद्ध 'तिरहुत साहित्य सम्मान'



मैथिलीक शीर्ष कवि अजित आजाद केँ मिथिला सांस्कृतिक परिषद, हैदराबादक प्रसिद्ध सम्मान तिरहुत साहित्य सम्मान सँ सम्मानियत कयल गेल। हैदराबाद मे आयोजित सम्मान समारोहक कार्यक्रम मे परिषदक अधिकारी द्वारा सम्मान, मेडल, प्रशस्ति पत्र आ पुरस्कारक राशि 21,000 चेक प्रदान कयल गेल। बता दी की मिथिला सांस्कृतिक परिषद, हैदराबाद सँ प्रतिवर्ष मैथिलीक लेखक केँ तिरहुत साहित्य सम्मान देल जाइत अछि। एहि साल निर्णायक मंडल द्वारा मैथिलीक चर्चित कवि अजित आजादक कविता संग्रह हम कोसिकन्हाक एकटा कवि के चयन केल गेल छल। अजित आजाद जनताक कवि छथि आ हुनक तेवर हमेशा जनताक प्रति प्रतिबद्ध कवि वला रहैत अछि। स्वभाव सँ मृदु मुदा कविता मे तेवर सँ प्रखर विरोधी अजित आजाद हमेशा अपन कविता सँ पाठक आ आलोचक वर्ग केँ चमत्कृत करैत रहैत छथि। हैदराबादमे दिसंबर मासक अंतिम हप्तामे सम्मान समारोह समारोह मनाओल गेल छल। जाहिमे मुख्य अतिथि छलाह अजित आजाद आ विशिष्ट अतिथि मुख्तार आलम।

दिल्ली एनसीआर मे आयोजित भेल 'साहित्यिक चौपाड़ि'

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली जे मैथिल लोकनिक सँख्याक कारणे मिनी मिथिला कहबैत अछि। एतय एक तिहाई सँ बेसी लोक दिल्लीक प्राय: चारुदिस वास करैत अछि। जँ गप्प मैथिल संस्थाक कएल जाए तँ कएक सए भेटि जाएत मुदा काजक आँगुर पर गनय बला! एतय बहुचर्चित कार्यक्रम अछि 'विद्यापति पर्व समारोह' जतय नाच तमाशा आ माछ भातक नाम पर हजारों हजार संख्या देखल जाएत अछि। फेर सरस्वती पूजा , दुर्गापूजा आदि इत्यादि तरहक आयोजनमे सेहो संख्या बेस झमतगर देखल जाएत अछि। मुदा जखन कोनो भाषा आ राज्य किंवा कोनो तरहक अभियानक गप्प होय तँ ओतय मरहन्ना भेटैत अछि। गनल गुथल सए गोट जँ एक सङ्गे भेट गेल तँ बुझु विराट प्रदर्शन, ताहूमे भांज पुरनिहार बेसी भेटत जे हम नहि जाएब तँ ओ हमरा मे नहि अओताह।



एहि सभसँ इतर 'साहित्यिक चौपाड़ि' जे आरंभ भेल गाछ तश्र सेंट्रलपार्क आ केंद्रीय सचिवालय पार्कमे से अविरल चलि रहल अछि। थमहल मुदा कोरोना कालमे नहि तँ ओ चलैत रहल आ ओकर परिणाम जे आई ओहि चौपाड़िसँ स्वयंकेँ मांजि बहुत रास कवि कथाकार लोकनि अपन पोथी प्रकाशित कराओलाह। 51म साहित्यिक चौपाड़ि धरि पछिला मासक तेसर रविदिन पूर भेल, जाहिमे गार्जियन स्वरूपे वरिष्ठ साहित्यकार गंगेश गुंजन, कैलाश कुमार मिश्र आदि आबि मार्गदर्शन प्रदान कएलाह। वरिष्ठ लोकनि अपन अनुभव साझा कएलाह जाहिसँ नवगान्तु रचनाकार लाभान्वित भेलाह। आशा अछि ई चौपाड़ि 'मिनी मिथिलाष्क नामक सार्थकताक बोध करा सकैए।

ऊर्जा आ सक्रियता सँ लबरेज रहल भंगिमाक नाट्योत्सव

30 आ 31 दिसम्बर 2021 कँ पटना मे भंगिमाक नाट्योत्सव आयोजित भेल। ई समारोह प्रसिद्ध रंगकर्मी कुमार गगन आ मनोज मनुज जी पर केंद्रित छल। एहि दुनू प्रसिद्ध रंगकर्मीक असमय निधन निर्दय कोरोनाक कारणे भ' गेल रहनि। अपन अभिनेता-निर्देशक कँ स्मरण करबाक लेल, श्रद्धांजलि देबाक लेल देशक विभिन्न भाग सँ साहित्य-संस्कृतिकर्मी लोकनि आयल रहथि। पटना त' बुझू उनटिक' आयल छल। उदासीक अछैत उत्साहित छलाह सभ। भंगिमाक आयोजन मे जुटान होइत रहल अछि पहिनहुँ मुदा विपरीत स्थिति मे एहेन उपस्थिति अचंभित कयलक। पूर्व मे निधन भेल अभिनेता लोकनिक नाम पर द्वार एवं हॉलक नामकरण प्रभावी लागल। महेश्वर मिश्र द्वार, कुमार शैलेन्द्र सभागार, कुमार गगन द्वार, मनोज मनुज द्वार, लक्ष्मी रमण मिश्र द्वार, संजय कुमार झा द्वार, प्रमिला झा मार्ग, राजमोहन झा कक्ष, केशव नंदन सेल्फी पॉइन्ट, आश नारायण गैलरी, मणिकान्त मिश्र पुस्तक केन्द्र, सुनील कुमार सिंह झा कॉर्नर आदि देखिक' एहि मित्र सभक स्मृति कँ सम्मुख सँ जीबाक अनुभूति भेल। अपन नायक लोकनिक प्रति सम्मान व्यक्त करबाक मामिला मे अपन समाज कटौती करैत रहल अछि मुदा भंगिमा सभ तरहँ कृतज्ञता ज्ञापित कयलक। लागल जे सभ नाट्य-पितर उपस्थित छथि।

नाट्य-पुस्तक प्रदर्शनी आ भंगिमा पत्रिकाक सभटा अंकक कवर फोटोक प्रदर्शनी आकर्षित कयलक। कुमार गगन आ मनोज मनुज पर केंद्रित वृत्तचित्र बहुत कनौलक। कुणाल जीक भाव-प्रवण काव्य एहि डाक्यूमेंट्रीक चरम-पक्ष प्रमाणित भेल। चंद्रभूषण झाक निर्देशन चकित-विस्मित कयलक। एहि युवा प्रतिभा पर गर्व करक चाही। गगन जी पर केंद्रित डाक्यूमेंट्री देखलाक तुरत बाद पैनल डिस्कसन कँ संचालित करबाक दायित्व हमरे छल। ताहि क्षण अपना कँ सम्हारब कठिन भ' गेल छल। ओहि काल सभक आँखि मे गगन-स्मृति हेलैत बुझना गेल। दोसर दिनक पैनल डिस्कसन बेसी संतुलित लागल। चुन्नू जीक तैयारीक कारणे उपयोगी वार्ता भेल।

दुनू दिन नाटक भेल। दुनू नाटक उपरा-ऊपरी छल। भंगिमाक युवा रंगकर्मी लोकनिक परिपक्व अभिनय देखबा मे आयल। अंतेश, रश्मि, बैजू, रुचि रानी, निखिल रंजन, सोनू चौधरी, कपिल मल्लिक, रंजन ठाकुर, प्रियंका, विनोद मिश्र जी, क्षमाकान्त ठाकुर, प्रतिभा मिश्रा, मोदनारायण जीक अभिनय अमिट छाप छोड़लक। किशोर केशव जी आ रविन्द्र बिहारी राजू जीक निर्देशन क्षमता सँ अवगत छी मुदा एहि बेर ई दुनू चकबिदोर लगा देलनि। राजू जी क्लिष्ट नाटक कँ सरलता सँ मंच पर उतारि देलनि। नाटकक अंत दीर्घ काल धरि मोन रहत।

बुक स्टॉल पर केवल नाटकक किताब आ नाट्योपयोगी पुस्तक सभ देखि गर्व भेल। एकटा स्टॉल पर 83 टा मैथिली नाटक! अद्‌भुत!

फोटो प्रदर्शनी मे आदर्श वैभवक दृष्टि आ श्रम, दुनू देखबा मे आयल। भंगिमाक पत्रिका पठनीय बनल अछि, संग्रहणीय त' अछिये। किशोर केशव जीक सर्वविध सक्रियता नीक लागल। एतेक खटैत बहुत दिन पर देखल हुनका। बटुक भाइ आ उमाकान्त जीक उपस्थिति प्राण-वायुक काज कयलक। प्रेमलता मिश्र दुनू दिन अपना कँ थत्मारने रहली। सभक हाल प्राय: एहने छल। नोर सँ भीजल विद्यापति भवन कँ पहिल बेर देखल। स्वर्णिम-ईशा वैदेही (गगन संतति) आ सौरभ-वर्तिका सुमन (मनुज संतति)क उपस्थिति कँ गगन जी आ मनोज मनुजक शुभकामना सदृश ग्रहण कयलहुँ हमरा लोकनि। ममता भौजी आ सीमा भौजीक दर्शन यद्यपि नहि भेल मुदा दुनू गोटे एहि आयोजन मे आबिक' भंगिमा परिवार पर स्नेह-विश्वास बरसा गेलीह। ऊर्जा सँ भरल भंगिमा आगुओ एहिना ठोस रहत आ अपन कार्य सँ, कार्य करबाक ढंग सँ चौंकबैत रहत से विश्वास बढ़ल अछि।



नाटकक मंचनक दृश्य



दर्शक दीर्घा मे बैसल दायाँ सँ विभूति आनन्द, प्रेमलता मिश्र आ किशोर केशव

शक्ति रूपेण संस्थिता : सेहत

ब्रेस्ट कैंसर : लाज नहि, इलाजक दरकार

संस्कृति मिश्र



एहि वैश्वीकरणक युगमे स्वास्थ्य विमर्श एकटा महत्त्वपूर्ण विषय अछि। भारत जेहेन विकासशील देश हुए आकि अमेरिका, लंदन, रूस, फ्रांस आ चीन-जापान सन विकसित देश, सभमे कैंसर एकटा संक्रामक रोग जकाँ तेजीसँ अपन जड़िकँ विस्तार द' रहल छैक। आइ आवश्यकता छैक जे एहि गंभीर समस्यापर तत्काल ध्यान देल जाइ आ समय रहैत एहि दिशामे गंभीर डेग उठाओल जाय। प्रतिवर्ष लगभग तेरह लाखसँ बेसी लोक एहि रोगसँ ग्रसित होइत छथि, जाहिमेसँ लगभग नौ लाख लोककँ अपन जानसँ हाथ धोए पड़ैत छनि। स्तन कैंसर महिला सभमे होमय वाला इनवेसिव कैंसर, जे आन कोशिका सभमे वा ऊतक सभमे फेलि सकैत छैक, ताहिमे सभसँ साधारण वा आम छैक। ई महिला सभमे होमय वाला कैंसर कँ 16% आ इनवेसिव कैंसरक 22.9% छैक। दुनियाभरिमे कैंसरक कारणे होइ वाला मृत्युमे 18.2% मृत्यु स्तन कैंसर सँ होइत छैक। भारतकँ अधिकाश शहर सभमे ब्रेस्ट कैंसर सभसँ बेसी आम प्रकारक कैंसर छैक आ ग्रामीण क्षेत्र सभमे ई दोसर सभसँ आम प्रकारक कैंसर छैक। एहि शहर सभमे, महिला सभमे होमय वाला कैंसरमे 25% सँ 30% केस स्तन कैंसरक होइत छैक।

कैंसरक संख्यासँ बेसी भयावह छैक कैंसरसँ पड़यवाला प्रभाव। सभसँ पहिने तँ जहिना कैंसरक जाँच शुरू होइत छैक, ओहिसँ गहींर मानसिक भावनात्मक आघात लगनाइ आरम्भ भ' जाइत छैक। कैंसरक इलाज परिवार सभ लेल एकटा वित्तीय बोझ बनिक' सोझाँ अबैत छैक। मारिते रास मरीज लेल तँ कैंसरक आरंभिक जाँचे गंभीर समस्या जकाँ सोझाँ अबैत छैक। एक-तिहाईसँ बेसी लोक भय आ अनिश्चितताक स्थितिमे चलि जाइत अछि अथवा गहींरगर अवसादमे। कैंसरक कारणे संपूर्ण परिवार गंभीर संकटसँ गुजरैक लेल विवश भ' जाइत छैक। ई परिवारक रोजमर्राक कार्यकलाप आ आर्थिक स्थिति दुनूक रीढ कँ तोड़िक' राखि दैत छैक। अनचोके आओल एहि आर्थिक दबावक कारणे पाइ केर किल्लति तँ होइते छैक, एहिसँ ऊपर दवाइ आ इलाजक खर्च सेहो बढ़ैत जाइत छैक। आइ अपना देशमे कैंसर भय आ निराशा केर पर्याय बनि गेल अछि। अधिकांश मामिला मे कैंसरक पते बहुत विलम्बसँ चलैत छैक आ जखन पता चलैत छैक तँ कतेको मरीज स्तरीय इलाज तकसँ वंचित रहि जाइत छैक। आजुक तारीखमे अपन देशमे लगभग तीन सय कैंसर केंद्र अछि, जखन कि भारतमे सात सय कैंसर केंद्रक आवश्यकता अछि। एकर अतिरिक्त दोसर चुनौती ई छैक जे रोगक तुलनामे ओकर देख-रेख आ इलाज करयवाला प्रशिक्षित लोक आ तकनीकी के भयंकर अभाव छैक। कैंसरक विशेषज्ञतावाला केंद्र जँ अछियो त' मात्र महानगरेटामे। गाम, कस्बा आ छोट शहर एखनहुँ एहिसँ अछूते अछि। ई अभाव आ कपारपर लगातार मँडराइत भयक कारणे कतेक प्रकारक भ्रांति जन्म ल' लैत छैक आ नीम-हकीमी खूब चलैत रहैत छैक। एहेन वातावरणमे समस्या सुलझेक अपेक्षा आरो उलझिए जाइत छैक। अपना सभ एकटा जे काज सरलतासँ क' सकैत छी से ई जे उचित सूचनाकँ उचित लोक धरि प्रेषित करी। एहेन स्थितिमे कला-संस्कृतिक महत्व आ ओकर जिम्मेदारी एहि दिशामे आओर महत्त्वपूर्ण भ' जाइत छैक।

डॉ. एसवीएस देव सँ जानकारी भेटल जे दिल्ली एम्समे हेड एण्ड नेक, कोलोन आ स्तन कैंसर केर तीस प्रतिशत एहेन मामिला ओझाँ आबि रहल अछि जाहिमे पीड़ितक आयु पैंतीस वर्ष सँ कम छैक। कैंसर क बढ़ैत मामिलापर साल 2018 मे लोकसभामे प्रश्नकाल केर दौरान सवाल केर जवाब दैत केंद्रीय स्वास्थ्यमंत्री डॉ. हर्षवर्धन ई जानकारी देने रहथि जे ओहि समयमे भारतमे कुल 15.86 लाख कैंसर क मामिला रहैक। एहि आँकड़ाकँ ध्यानमे रखैत अनुमान लगाओल जा सकैछ जे ई कैंसर नामक रक्तबीज कोना अपन विस्तार क' रहल अछि।





महिला सभमे कैंसर

शदि ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी' (1990-2016) केर अनुसार भारतमे महिला सभमे सभसँ बेसी स्तन कैंसर केर मामिला अबैत अछि। स्टडी केर अनुसारे महिला सभमे स्तन कैंसर क पश्चात सर्विकल कैंसर, पेटक कैंसर, कोलोन एण्ड रेक्टम आ लिप एण्ड कैविटी कैंसरक मामिला बेसी देखारमे अबैत अछि। दिल्ली स्थित राजीव गाँधी कैंसर इंस्टिट्यूट एण्ड रिसर्च सेंटरमें लंग एण्ड ब्रेस्ट रेडिएशन सर्विसेज केर प्रमुख डॉ. कुंदन सिंह चुफाल केर कहब छनि जे, 'गाम आ शहरमे जँ तुलना कएल जाए तँ गामसँ सर्विकल आ शहरसँ स्तन कैंसरक मामिला बेसी देखबामे अबैत अछि मुदा संपूर्ण भारतमे महिला सभमे स्तन कैंसर सभसँ आगाँ आ पहिल नम्बरपर छैक जेकर मुख्य कारण विलम्बसँ विवाह भेनाइ, गर्भधारणमे देरी, स्तनपान नहि कँ बराबर करेनाइ, बढ़ैत तनाव, जीवनशैली आ मोटापा छैक।' डॉक्टर राजेश दीक्षित केर कहब छनि जे भारतमे मोटापा, खासतौरपर पेटपर चर्बी जमा होइक कारणसँ गॉल ब्लैडर, स्तन कैंसर आ कोलोन कैंसर क मामिला सेहो सोझाँ आबि रहल छैक।

कैंसर एक गोट एहेन जानलेवा रोग छैक जे प्रत्येक वर्ष लाखो लोककँ अपन चपेटमे ल' लैत छैक। जामे धरि लोककँ एहि रोगक विषयमे ज्ञात होइत छैक तामे ई रोगीक देहमे अपन खूब मजबूत जड़ि बना लेत छैक। ई हमर अपन व्यक्तिगत विचार अछि जे अधिकांश लोक ई बुझिए नहि पबैत छथि जे हुनक देहमे भ' रहल निरंतर बदलावक कारण की छनि। जखन हुनका सभकँ ई भान होइत छनि जे ओ कैंसर कँ चपेटमे आबि गेल छथि तँ ओकर सामना करयसँ कतराइत छथि आ पूर्ण प्रयास करैत छथि जे आन लोककँ एहि विषयमे किछु पता नहि लागनि जे ओ कैंसरसँ पीड़ित छथि। जखन ई रोग स्त्रीगणमे होइत अछि खासक' स्तन कैंसर, तखन समस्या आओर गंभीर आ जटिल रूप ल' लैत छैक। स्तनमे होइवाला ई अप्राकृतिक बदलाव स्त्रीगणक अस्तित्वेकँ दावपर राखि दैत छैक। जखन कोनो स्त्री स्तन कैंसरसँ पीड़ित होइत अछि तँ ओ एहि रोगसँ त' लड़बे करैत अछि मुदा एहूसँ पैघ लड़ाइ लड़ैत अछि समाजक पुरुषवादी नजरियासँ। स्तन कैंसर क ई युद्ध आरंभ होइत छैक रोगसँ मुदा बादमे ई सामाजिक क्रांतिमे बदलि जाइत अछि। कैंसर होइत तँ कोनो परिवारमे एके गोटेकँ छैक मुदा कैंसरक ई युद्ध सामूहिक छैक किएक तँ ई युद्ध परिवार, मित्रगण आ डॉक्टर मिलिकँ लड़ैत छथि।

ब्रेस्ट कैंसर की होइत छैक?

स्तन कैंसर, स्तनक कोशिका सभमे बनैय वाला कैंसर छैक। अधिकांशतः ब्रेस्ट कैसरक कोनो शुरुआती लक्षण नहि होइत छैक। स्तन कैंसरक कएकटा प्रकार होइत छैक, जाहिमे सँ प्रत्येक कएक प्रकार कँ लक्षण कँ जन्म द' सकैत छैक। तखन ब्रेस्टमे गाँठ बननाई, स्तनक स्किन, साइज वा आकार इत्यादिमे परिवर्तन एकर साधारण लक्षण थिक। आइ ब्रेस्ट कैंसरक जाँच, इलाज वा एकरा प्रति जागरूकतामे खूब प्रगति भ' चुकल छैक। यैह कारण छैक जे स्तन कैंसर भ' गेला पर जीवित रहबाक दरमे वृद्धि देखबामे अबैत अछि, आ एहि बेमारी सँ जुड़ल मृत्यु दरमे लगातार गेरावट आबि रहल छैक।

दुनु स्तनमे दर्द भेनाइ अधिकतर मामलामे ब्रेस्ट कैंसर केर लक्षण नहि होइत छैक। हालांकि, जँ अपने कँ दर्द केवल एकेटा स्तन हुए आ विशेष रूप सँ एक स्तन पर एक विशिष्ट स्थानमे, तँ एकर जाँच करेबामे देरी नहि करी। 'फोकल दर्द' (मात्र एक ठाम होमय वाला दर्द) क दुनु स्तनमे दर्द केर तुलनामे कैंसर हेबाक, संकेत हेबाक संभावना अधिक होइत छैक। जँ दर्द केर संगहि स्तनमे गाँठ अथवा अहाँक त्वचा अथवा निप्पल परिवर्तन सेहो भ' रहल अछि, तखनहुँ

तुरंत अपन डॉक्टर सँ संपर्क करी। जँ तखनो अहाँ अपन ब्रेस्ट मे दर्द केर समस्या सँ चिंतित छी, तँ एकबेर डॉक्टर सँ फिजिकल एग्जामिन करवा ली। अहाँक डॉक्टर ई निर्धारित कर सकताह जे अहाँकँ ब्रेस्ट कैंसर स्क्रीनिंग केर आवश्यकता अछि अथवा नहि।

ख स्तन कैंसर कँ आरंभिक लक्षण

आम तौर पर, शुरूआती स्टेज पर स्तन कैंसर कँ कोनो लक्षण नहि पाओल जाइत छैक। ट्यूमर कँ आकार छोट भ सकैछ (जे महसूस नहि भ' पबैत छैक), हालांकि कोनो भी असामान्यता मैमोग्राम मे देखल जा सकैय छैक। ट्यूमर हेबाक पहिल संकेत ब्रेस्टमे गाँठ भेनाइए होइत छैक जे पहिने ओहि स्थान पर नहि रहैक। हालांकि प्रत्येक गाँठ कैंसर होइ ई जरूरी नहि छैक, एहि कारणे गाँठ महसूस भेला पर अपन डॉक्टर सँ संपर्क करबाक चाही।

ब्रेस्ट कैंसर कँ कोना चिन्हल जाइ?

स्तन कैंसरमे निम्न लक्षण देखला जा सकैछ :

◻ गाँठ अथवा ऊतक सभक मोट महसूस भेनाई (जे एखन हाल-फिलहाल मे बनल हुए)

◻ स्तनक त्वचा पर गुठली सभक बननाइ अथवा त्वचा केर लाल भेनाइ।

◻ पूरा स्तन अथवा स्तन केर किछु हिस्सामे सूजन

◻ निप्पल्स सँ स्तन केर दूध केर अतिरिक्त कोनो आन प्रकारक द्रव केर स्त्राव

◻ निप्पल्स सँ खून निकलनाइ

◻ निप्पल्स अथवा स्तनक त्वचा केर छिला जेनाइ

◻ स्तनक आकारमे अचानक आ अस्पष्टीकृत परिवर्तन भेनाइ

◻ स्तनक त्वचामे परिवर्तन

◻ बाँहिमे सूजन अथवा गाँठ बननाइ

◻ इनवर्टेड निप्पल्स (निप्पल्स क बाहर दिस नहि भ' क' भीतर दिस भेनाइ)

मुदा एहिमे सँ कोनो लक्षण हेबाक ई अर्थ कदापि नहि थिक जे अहाँक स्तन कैंसरे अछि। कोनो भी लक्षण पाओल गेला पर अपन डॉक्टर सँ संपर्क अवश्य करि।

स्तन कैंसर केर कारण

विशेषज्ञ सभ स्तन कैंसर केर सटीक कारणक पता एखन धरि नहि लगा सकलाह छथि। मुदा शोधकर्ता सभकँ कहब छनि जे किछु विशेष हार्मोनल, जीवन शैली आ पर्यावरणीय कारक सभक पहिचान कएल गेल अछि जे स्त्रीगणमे स्तन कैंसर केर खतराकँ बढ़ा सकैत छैक। संभवत: ब्रेस्ट कैंसर इन कारक सभक एकटा काम्प्लेक्स मिक्स सँ होइत छैक। हालांकि ई स्पष्ट नहि छैक जे किछु लोक जिनकामे कोनो जोखिम कारक नहि छनि हुनका सभकँ ब्रेस्ट कैंसर किएक होइत छनि, आ दोसर दिस जिनका सभमे एहेन कएकटा जोखिम कारक छनि, तिनका स्तन कैंसर नहि होइत छनि। निम्नलिखित कारक स्तन कैंसर केर जोखिम कँ बढ़ा सकैछ-

◻ उम्र बढ़नाइ अथवा वृद्ध भेनाइ -महिला क उम्र बढ़ला सँ स्तन कैंसर हेबाक जोखिम सेहो बढ़ैत छैक। महिला सभमे पाओल जाइ वाला स्तन कैंसर 80% सँ ज्यादा स्थितिमे 50 वर्ष सँ बेसी उम्र कँ महिला सभमे होइत छनि (मेनोपॉज केर पश्चात)।

◻ जेनेटिक्स -ज्यादातर स्तन कैंसर आनुवंशिक नहि होइत छैक। मुदा जँ महिला केर कोनो करीबी संबंधीकँ स्तन कैंसर या ओवरी कैंसर होइत छैक अथवा या भेल रहल छलैक कँ स्थिति रहैत छैक तँ ओहि स्त्रीकँ स्तन कैंसर हेबाक खतरा बेसी रहैत छैक।

◻ समय से पहिने पीरियड्स शुरू भेनाइ -जाहि महिला सभ कँ 12 बर्षक अवस्थासँ पहिनहि मासिक धर्म आरंभ भ' जाइत छैक, हुनका सभमे ब्रेस्ट कैंसर हेबाक खतरा कने बेसी बढ़ि जाइत छैक।

◻ पहिने कहियो स्तन कैंसर भेल होइन -जाहि महिला सभकँ पहिने स्तन कैंसर भ' चुकल होइन, भले ही ओ नॉन-इनवेसिव (आन कोशिका या ऊतक सभ धरि नहि पसरैय वाला), हुनको सभमे स्तन कैंसर हेबाक जोखिम आन महिला सभक तुलनामे बेसी होइत छैक।

◻ पहिनहि सँ स्तनमे गाँठक समस्या होइन -जाहि महिला सभकँ स्तन पर कैंसररहित गाँठ रहि गेल होइन, तिनका सभमे कैंसर हेबाक खतरा बेसी होइत छनि।

◻ स्तनमे सघन ऊतक -जाहि महिला सभकँ स्तन ऊतक अधिक सघन होइत छनि हुनका स्तन कैंसर हेबाक जोखिम बेसी होइत छनि।

◻ अधिक वयस धरि प्रग्नेंट नहि भेला पर -30 वर्षक अवस्थाकँ बाद पहिल गर्भधारण करबा पर अथवा गर्भधारण नहि कएला सँ सेहो स्तन कैंसर क जोखिम बढ़ि जाइत छैक।

◻ मेनोपॉज देरी सँ आरंभ भेला पर-55 वर्षक अवस्थाक पश्चात मेनोपॉज भेलासँ स्तन कैंसर केर खतरा बढ़ि जाइत छैक।

◻ शारीरिक रूप सँ सक्रिय नहि भेलापर -जे महिलाए सभ बेसी शारीरिक गतिविधि सभ नहि करैत छथि हुनकामे स्तन कैंसरक खतरा बढ़ि जाइत छनि।

◻ मोटापा -मोटापा कएकटा बीमारी कँ जोखिम कँ बढ़ा दैत छैक। जाहि महिला सभाकँ वजन बेसी होइत छनि तिनकामे स्तन कैंसर हेबाक सम्भावना बेसी होइत छनि।

◻ कॉम्बिनेशन हॉरमोन थेरेपी क प्रयोग -पाँच साल सँ बेसी समय धरि मेनोपॉज मे एस्ट्रोजन (Estrogen) और प्रोजेस्टेरोन (Progesterone) केर स्थान लेबाक लेल होर्मोनेस क दवाइ लेला सँ स्तन कैंसर हेबाक संभावना बढ़ि जाइत छैक।

◻ गर्भनिरोधक दवाइक सेवन -किछु गर्भ-निरोधक दवाइ सभ सेहो स्तन कैंसर हेबाक खतरा कँ बढ़बैत छैक।

◻ सिगरेट आ शराब पीनाइ -एहेन देखल गेल छैक जे मदिरा आ धूम्रपान केर अत्यधिक सेवन सँ स्तन कैंसर हेबाक संभावना बढ़ि जाइत छैक।

ब्रेस्ट कैंसर कोना फेलैत छैक?

कखनहुँ कँ, ब्रेस्ट कैंसर शरीरक अन्य भाग सभमे सेहो फेलि जाइत छैक। ई सदैव संभव नहि, मुदा जखन ई होइत छैक तँ एकरा 'मेटास्टेटिक ब्रेस्ट कैंसर' कहल जाइत छैक। मेटास्टेटिक ब्रेस्ट कैंसर केर इलाज नॉन-मेटास्टेटिक ब्रेस्ट कैंसर सँ भिन्न होइत छैक। परिणामस्वरूप, ऑन्कोलॉजिस्ट आमतौर पर नैदानिक / स्टेजिंग प्रक्रियाक दौरान कैंसर

केर फैलै (मेटास्टेसिस) कँ प्रमाण केर जाँच करैत छैक। ब्रेस्ट कैंसर तखन फैलैत छैक जखन कैंसर कोशिका सभ स्वस्थ ऊतक सभ पर आक्रमण करैत अछि। अधिकांश मामलामे, ब्रेस्ट कैंसर पहिने प्रभावित स्तन कँ अन्य भाग सभमे फैलैत छैक, फेर लग पासकेर लिम्फ नोड्स मे। जँ कैंसर कोशिका सभ लसीका प्रणाली धरि पहुँचि जाइत छैक, तँ ओ शरीरक दूर कँ हिस्सा सभ धरि पहुँचि सकैत छैक। ब्रेस्ट कैंसर फैलबाक सभसँ आम स्थान सभमे शामिल छैक फेफड़ा, लिवर, हड्डी आ दिमाग। भले स्तन कैंसर दूर क अंगमे फैलि जाइ, तखनो एकरा स्तन कैंसरेमे वर्गीकृत कएल जाइत छैक। उदाहरण क लेल, जँ स्तन कैंसर फेफड़ा धरि पसरि गेल होइ, ओकरा मेटास्टैटिक स्तन कैंसर मानल जाइत छैक -फेफड़ा कँ कैंसर नहि।

स्तन कैंसर सँ बचावक उपाय -लाइफ स्टाइल मे किछु बदलाव सँ महिला सभमे स्तन कैंसर हेबाक जोखिम सँ बाँचल जा सकैत अछि।

सिगरेट आ शराब नहि पीबी -जे महिला सभ नियमित रूप सँ बेसी मात्रामे मदिरा अथवा धूम्रपान क सेवन करैत छथि, हुनकामे स्तन कैंसर क जोखिम बढ़ि जाइत छनि।

व्यायाम करी -जे महिला सभ हफ्तामे पाँच दिन नियमित तौर पर व्यायाम करैत छथि, हुनकामे स्तन कैंसर हेबाक खतरा कम भ' जाइत छनि।

उचित भोजन क सेवन - विशेषज्ञ सभक का माननाइ छनि जे संतुलित आ स्वस्थ आहार क सेवन करय सँ महिला सभमे स्तन कैंसर केर जोखिम कँ टालल जा सकैत छैक।

मेनोपॉज क बाद हॉर्मोन थेरेपी - हॉर्मोन थेरेपी स्तन कैंसर देबाक खतराकँ कम करैत छैक। मरीज कँ ई करेबाक सँ पहिने एकर फायदा आ नुकसानक विषयमे चिकित्सक सँ परामर्श क' लेबाक चाही।

स्वस्थ वजन बनाक राखी- शरीर क वजन बेसी भेला सँ सेहो स्तन कैंसर हेबाक खतरा बेसी रहैत छैक। स्वस्थ शारीरिक वजन बना क' राखल गेला पर एहि बीमारी सँ बाँचल जा सकैछ।

स्तनपान कराबी - जे महिला सभ स्तनपान करबैत छथि हुनकामे अन्य महिला सभक अपेक्षा स्तन कैंसर हेबाक खतरा कम रहैत छनि।



स्तन कैंसरक जाँच -

ई निर्धारित करैक लेल जे लक्षण, स्तन कैंसर क कारणे छैक आकि स्तन क कोनो अन्य परेशानी क कारणे छैक, डॉक्टर एकटा संपूर्ण शारीरिक जाँच आ किछु आन टेस्ट सभी सेहो करत। निम्न टेस्ट सभक मददि सँ स्तन कैंसर क निदान कैल जा सकैछ:

□ ब्रेस्ट एग्जाम - डॉक्टर दुनु स्तनक असामान्य भाग सभ कँ जाँच करैक लेल एकटा संपूर्ण ब्रेस्ट एग्जाम करैत छैक। डॉक्टर शरीर क अन्य अंग सभक सेहो जाँच क सकैत अछि जाहि सँ ई पता लगाओल जा सकै जे लक्षण शरीर क कोनो अन्य समस्या क कारणे तँ नहि छैक।

□ मैमोग्राम - स्तन क सतह केर निच्चाँ देखबाक सभसँ नीक तरीका छैक मैमोग्राम नामक इमेजिंग टेस्ट। कएकटा महिला वार्षिक मैमोग्राम करबैत छथि जाहिसँ जाँच कएल जा सके जे हुनका स्तन कैंसर तँ नहि छनि। जँ डॉक्टर कँ संदेह होइत छनि जे अहाँक ट्यूमर वा कोनो अन्य संदिग्ध परेशानी अछि, तखनो डॉक्टर मैमोग्राम करबैक लेल कहि सकैत छथि। जँ मैमोग्राम मे कोनो असामान्यता दृष्टिगत होइत छैक तँ, डॉक्टर अन्य टेस्ट सभ करबैक लेल सेहो कहि सकैत छथि।

□ अल्ट्रासाउंड - स्तन अल्ट्रासाउंड सँ स्तन ऊतक सभक की एकटा फोटो बनि जाइत छैक। अल्ट्रासाउंडमे ध्वनि तरंग सभक प्रयोग कैल जाइत छैक। अल्ट्रासाउंड क मददि सँ डॉक्टर कँ ट्यूमर अथवा सिस्ट मे अंतर करयमे मददि भेटतैक।

□ बायोप्सी - जँ मैमोग्राम आ अल्ट्रासाउंड सँ कोनो परिणाम नहि भेटि पबैत छैक, तँ डॉक्टर संदिग्ध भाग क एकटा सैंपल ल' ओकर टेस्ट क' सकैत अछि। सैंपल केर मददि सँ कैंसर क पता लगाओल जा सकैछ। एकरा बायोप्सी कहल जाइत छैक।

स्तन कैंसरक इलाज

ब्रेस्ट कैंसर केर इलाज क सभसँ सामान्य तरीका छैक स्तन कैंसर क सर्जरी। सर्जरी क अतिरिक्त, कीमोथेरेपी, विकिरण चिकित्सा वा हॉर्मोन थेरेपी जेहेन उपचार क तरीक सभ सेहो अपनाओल जा सकैछ। ब्रेस्ट कैंसर क उपचार लेल कोन पद्धति क प्रयोग कएल जाइ से एहि बात पर पर निर्भर करैत छैक जे ब्रेस्ट कैंसर कोन स्टेज पर छैक, ब्रेस्ट कैंसर कटेक फैलल छैक आ ट्यूमर क आकार कतेक पैघ छैक। एहि सभक पता लगला क पश्चात अहाँ अपन डॉक्टर क संग उपचारक विकल्प सभ पर चर्चा क' सकैत छी।

ब्रेस्ट कैंसरक सर्जरी

स्तन कैंसर कँ हटेबाक लेल कएक प्रकार क सर्जरी कएल जाइत अछि :

□ लम्पेक्टॉमी - एहि प्रक्रिया द्वारा संदिग्ध अथवा कैंसरग्रस्त भाग क निकालि देल जाइत छैक आ लग पासक ऊतक सभकँ ओकर स्थान पर रहय देल जाइत छैक।

□ मास्टेक्टॉमी - एहि प्रक्रिया द्वारा सर्जन पूरा स्तन निकालि दैत छैक। डबल मास्टेक्टॉमी में दुनु स्तन निकालि देल जाइत छैक।

विकिरण चिकित्सा -

कैंसर कोशिका सभकँ नष्ट करैक लेल एक्स-रे क उच्च स्तरीय किरण सभक प्रयोग कएल जा सकैछ। अधिकांशत: विकिरण चिकित्सा

मे शरीर क बाहर एकटा बड़का मशीन क प्रयोग कएल जाइत छैक। कैंसर क उपचार क तरी का सभमे प्रगति क कारणे शरीर क अंदर कैंसर क विकीर्ण कएल जा सकैछ। एहि प्रक्रिया कँ ब्रैकीथेरेपी कहल जाइत छैक। एहि प्रक्रिया कँ करैक लेल सर्जन रेडियो-एक्टिव सीड्स अथवा पेलेट्स कँ शरीर क भीतर ट्यूमर लग रखैत अछि।



कीमोथेरेपी

कीमोथेरेपी एकटा दवाइ छैक जे कैंसर कोशिका सभकँ नष्ट क' सकैत छैक। किछु मरीज मात्र कीमोथेरेपी टा करबैत छथि मुदा एहि प्रक्रिया क प्रयोग अक्सर उपचार क अन्य विकल्प सभ, खास क' सर्जरी, क संगमे कएल जाइत छैक। किछु स्थिति सभमे, सेक्टर सर्जरी सँ पहिने कीमोथेरेपी करनाइ उचित बूझल जाइत छैक। एकर उद्देश्य ई होइत छैक जे ट्यूमर कँ सिकोड़ल जा सकै आ सर्जरी बेसी चीर- फाड़ि कँ नहि करय पड़ै। कीमोथेरेपी क कएकटा दुष्प्रभाव सेहो होइत छैक जाहि कँ विषयमे मरीज कँ उपचार आरंभ होइ सँ पूर्वहि ज्ञात हेबाक चाही।

हार्मोन थेरेपी

जँ स्तन कैंसर पर अहाँक हॉर्मोन्स क असर पड़ैत हुए, तँ डॉक्टर हार्मोन्स कँ अवरुद्ध करैक लेल हार्मोन थेरेपी आरंभ क' सकैत छैक जाहि सँ कैंसर कँ विकास कँ रोकइ कँ प्रयास कएल जा सकैछ। एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरोन महिला सभमे पाओल जाइ वाला दू गोट एहेन हॉर्मोन्स छैक जे स्तन कैंसर कँ ट्यूमर कँ विकास मेँ बढ़बैत छैक। एहि हॉर्मोन्स क उत्पादन कँ कम करैक अथवा रोकैक लेल दवाइ ल' कँ कैंसर केर विकास कँ कम कएल जा सकैछ।

स्तन कैंसरक चरण -

स्तन कैंसरक गंभीरता क मुताबिक ओकरा पाँच स्टेज मे बाँटल जा सकैछ। स्तन कैंसर क स्टेज क पता लगबैक लेल डॉक्टर कँ निम्न जानकारी हेबाक चाही -

□ कैंसर इनवेसिव छैक वा या नॉन-इनवेसिव - यानी कैंसर कोशिका सभ लग पास क कोशिका वा ऊतक सभ धरि फैलल छैक अथवा नहि।

□ ट्यूमर कतेक पैघ छैक?

□ लिम्फ नोड्स शामिल छैक वा नहि।

□ कैंसर अन्य कोनो अंग धरि फैलल छैक अथवा नहि।

स्तन कैंसरक पाँच मुख्य स्टेज होइत छैक:

□ स्टेज 0 - स्तन कैंसर डक्टल कार्सिनोमा इन सीटू (Ductal Carcinoma In Situ] DCIS) छैक। ई एक प्रकार क कैंसर सँ पूर्व होइ वाला उत्पत्ति छैक। क्ब्ै मे कैंसर कोशिका सभ स्तन के डक्ट्स मे रहैत छैक आ लग पास कँ ऊतक सभ धरि नहि पहुँचैत छैक।

□ स्टेज 1 - स्टेज 1 ट्यूमर सभक आकार 2 सेंटीमीटर (cm) सँ पैघ नहि होइत छैक। एहि स्टेज कँ कैंसर मे लिम्फ नोड्स प्रभावित नहि होइत छैक।

□ स्टेज 2 - एहि स्टेज क स्तन कैंसर दू प्रकारक होइत छैक। पहिल प्रकार मे, ट्यूमर क आकार 2 बउ से पैघ नहि होइत छैक मुदा कैंसर लिम्फ नोड्स धारि फैलि जाइत छैक। दोसर प्रकार मे, ट्यूमर क आकार 2 सँ 5 बउ क बीच होइत छैक मुदा कैंसर लिम्फ नोड्स अथवा आसपास क ऊतक धरि नहि फैलल होइत छैक।

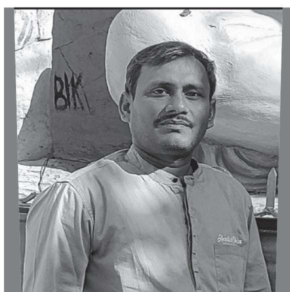
□ स्टेज 3 - एहि स्टेज मे कएक प्रकार कँ कैंसर भ' सकैछ। पहिल मे ट्यूमर क आकार 5 बउ से पैघ नहि होइछ मुदा ई कैंसर आसपास क ऊतक सभ अथवा लिम्फ नोड्स धरि फैलि चुकल होइत छैक। ईहो भ' सकैछ जे कैंसर छाती वा त्वचा धरि फैलि गेल होइ मुदा लिम्फ नोड्स धरि नहि। अन्य प्रकार मे ट्यूमर कोनो भी आकर क भ' सकैछ आ लिम्फ नोड्स धरि फैलि सकैछ (भले ही ओ दूर होइ)।

□ स्टेज 4 - एहि स्टेज मे ट्यूमर कोनो भी आकार क भ' सकैछ आ ट्यूमर लगक आ दूर दुनु तरह क लिम्फ नोड्स धरि फैलि चुकल रहैत छैक।

ज्ञान-विज्ञान (बाल संसार)

मनुक्ख : 'एक तरहक मशीन'

नारायण झा



शिक्षक, ''शुभ भोर धियापुता सभ।'

धियापुता सभ, ''शुभ भोर सर जी''

शिक्षक हाथक इशारा दए कहैत, ''बैसि जाउ...। एहिसँ पहिने जे सर जी सभक क्लास छल, पढ़ाइ भेल हएत।''

''जी सर जी, पढ़ाइ भेलैए।''

''लगैए एहि घण्टीमे पढ़बाक मोन नै करैत हएत!''

धियापुता सभ, ''(दबल स्वर मे) जी सर... (मुँह बन्न कए हँसैत)''

''हम तँ अहाँक सर जी छी ने, हम सभ तँ धियापुताक हृदयक बात बुझैत छियै। ठीक कहलहुँ ने...?''

''जी... सर, सर ठीके कहैत छियै।''

शिक्षक, ''जखन पढ़बाक मोन नै होइए तँ पढ़ैक कोन काज, अहाँ सभसँ गप करब आ गीत-नाद सुनब।'

''जी सर... र... र...।''

''अच्छा कहू तँ के सभ गीत सुनाएब?''

''सरजी हमहुँ सुनाएब आ इहो सुनाएत, ओकरा तँ अभियान गीत मैथिलीमे अबै छै।''

''रौ जीतू गबही तँ ...रौ गबही ने...।''

''अच्छा हम जखन कहब तखन सुनाएब अहाँ सभ।''

''सुनू सभ गोटे-- अपना सभ, सभ कियो मनुक्ख छी। अपना सभकँ दूटा हाथ, दूटा पएर, दूटा आँखि, दूटा कान, एकटा नाक, एकटा मुँह आ आओर बहुतो आन्तरिक अंग सभ सेहो अछि।''

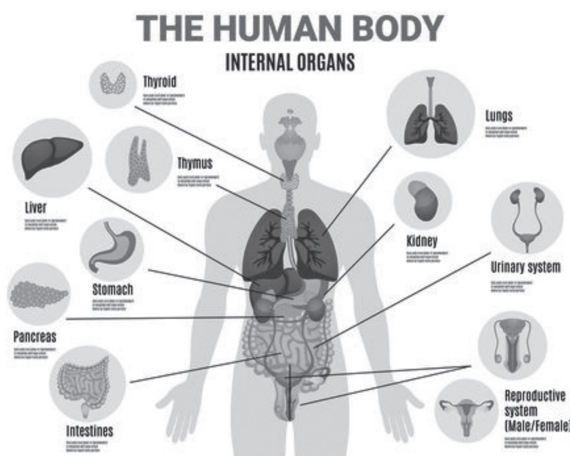
''जी सर ...।''

''सभ अंग समय-समयपर अपन काज करैत रहैत छैक। एखन हमर मुँह बाजि रहल अछि तँ अहाँक कान सूनि रहल अछि आ आँखि देखि रहल अछि। ई तँ नहि बुझल हएत जे ई सभ काज के कराबै छै?"

''नै सर जी, कहू... ने सर जी के करबै छै...?''

''कहैत छी ... कहैत छी।''





''अच्छा ई कहू तँ... कहियो अहाँ सभकेँ बिनु चट्टी (चप्पल) पहिरने चलैत काल काँट गड़ल अछि?''

''हँ ... सर हमरा गड़ल अछि।''

''हँ सर हमरो... , हँ सर यौ हमरो...।''

''अच्छा, तँ अहाँ सभ चलैत काल, तरबा निंघारैत तँ नै चलै छियै?''

''नै सर... चलैत काल तँ आगु ताकि चलबाक चाही ने सरजी, अहीँ कहने छियै...!''

''हँ हँ... से हमहीँ कहने छी, हम कहाँ कहैत छी जे हम नहि कहने छी''

''हमरो सएह बुझेबाक छल जे लोक चलैत काल आगु मुँहे चलैत छैक। जखने तरबामे संयोगे काँट गड़ि जाइत छैक, तुरत लोक रुकि ओहि काँटकेँ घीचि फेकि दैत छै। ई सूचना पहुँचएबाक काज मष्तिष्क धरि तंत्रिका-तंत्र करैत छैक। मष्तिष्क आदेश दैत छैक जे काँट गड़ि गेलौ, ओकरा निकालि फेक झटसँ। एहि काजमे समय नहि लगैत छैक बेसी, जेना बिजलीक बटम टिपैतै बॉल बरि जाइत छैक।''

धियापुता सभ ''ओ... हँ यौ सर ... जी ...। ओ... हो...।''

''एकटा गीत के सुनाएब, आउ एहि ठाम।''

''सरजी हम गीत नै सुनाएब, एकटा कविता सुनाएब।''

''सुनाउ...तँ..।''

''आउ मनाबी देशक पाबनि
गाबी सभ मीलि गीत
आजादीक खुशी अछि मनमे
आउ नाची-गाबी मीत।''

''वाह ... वाह बड्ड नीक कविता... बैसू...।''

''ई बात बुझल अछि? जे अपना सभक शरीरमे हवा जाइत अछि आ फेर आपस घुरि अबैत अछि?''

एकटा विद्यार्थी, ''हवा कोना जाइ छै अपन सभक देहमे ...?''

दोसर विद्याथी, ''सरजी कोना निकलियो जाइत छै ...?''

''सभ गोटा साँस लैत छियै ने...?''

''हँ...हँ... सरजी।''

''वएह ने भेलै, सभ जीव साँस लैत छैक तहिना मनुक्ख सेहो साँस लैत छैक, साँस छोड़ैत छैक। जँ साँस लेनाइ-छोड़नाइ बन्न भए जाइ तँ ओ नहि बचि सकैए। ई काज हमरा शरीरमे पूरा करै छै श्वसन तंत्र।

''ओ सरजी... आब बुझि गेलहुँ...।'' धियापुता सभ कहलक।

''अहाँ सभसँ एकटा बात पुछै छी, अहाँ सभ जेनरेटर देखने छी?''

''हँ सर...। हमर दाइक वियाहमे दूटा जेनरेटर आयल छलै।'' एकटा विद्यार्थी बाजल।

शिक्षक, ''जेनरेटर चलैत काल बेसी गरम ने भए जाइ, ठण्डा रहै लेल, जेनरेटरमे पानिक काज सेहो होइत छैक। पानि ड्राममे भरिकए राखल जाइत छैक। पानि जेनरेटरक भीतर जाइत छैक आ फेर भीतर ठण्डा करैत ओही ड्राममे खसैत रहैत छैक।''

''सर जी... सर जी हमरा ओतए जे उपनएन छलै, जेनरेटर लग कोनो ड्राम कहाँ छलै..?''

''हँ हँ... आब जे नव-नव जेनरेटर आबि गेलैए ताहिमे अलगसँ ड्राम पानिक लेल नहि राखए पड़ैछ। जेनरेटरमे रेडीवाटर लागल रहैत छैक, जे पानिकेँ ठण्डा करबाक काज करैत छैक।''

''हँ सर... ओ पानि जे ड्राममे खसै छै, से तँ गरम रहै छै।''

''हँ हँ बौआ ठीके कहै छी, ओ पानि गरम रहैत छै'।'

शिक्षक, ''सुनू ... हल्ला नै करू... हम बुझबै छी ने...। तहिना अपनो सभक शरीर छै। अपना सभकेँ सेहो पियास लगैए। ओ पानि लगही (पेशाब) रूपमे बाहर निकलैए। ई काज शरीर मे उत्सर्जन तंत्र करैत छैक।

धियापुता सभ, ''ओ...।''

''भोजन जे खाइत छियै अपने सभ, ओ पाचन तंत्रक माध्यमे पचैत छैक।''

''से कोना ... सर जी?''

''देखियौ...पाचन क्रिया तँ मुँहे सँ शुरू होइत छैक, किएक बिनु चिबेने खेनाइ घोंटल हएत?''

''नै सर...। चिबा लैत छियै, तखन गीड़ि जाइत छियै।''

''तकरा बाद ओ आहार नालसँ होइत छोटकी आँतमे आ छोटकी आंत सँ बड़की आँत मे जाकए, पाचन क्रिया सम्पन्न होइत अछि। फेर दोसर दिन।

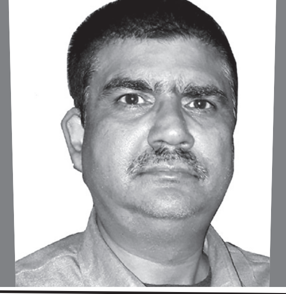
''मोनी एकटा फकरा सुनाउ तँ!''

मोनी फकरा सुनौलक आ टन-टन, टन-टन, घंटी लागि गेलै। धियापुता सभ उधम मचबए लगैत अछि।

धर्म-अध्यात्म

सिमरिया घाट- मिथिलाक दक्षिणी सीमा : समस्या ओ समाधान

भवनाथ झा



सिमरियाक गंगातट मिथिलाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि। मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर आ बेगूसराय एहि चारि जिलाक लोक अनेक प्रकारक धार्मिक कृत्यक लेल एही तट पर जाइत छथि। कोसीसँ पूर्व भागक लोक अपन नजदीकक गंगातट आ पश्चिम भागक लोक हाजीपुरक कोनहारा घाटक उपयोग करैत छथि। पूर्वमे मिथिलाक एहि क्षेत्रक लोकक लेल चौमथ घाट छल। रुद्रयामलक एक प्राप्त अंशक अनुसार विदेहक कोनो राजा एतए रुकि तीर्थाटन करबाक लेल निकलल छलाह। ओएह एतए चारि टा मंदिर बनौलनि आ तें एक नाम चौमथ (चतुर्मठ) भेल। अही अंशक अनुसार ओहि स्थानक नाम सेमल ग्राम छल, जकर नामकरण शाल्मली अर्थात् सिमरक अधिक गाछ होएबाक कारणें भेल छल। आबादी बेसी नै रहबाक कारणें गंगाकातक सिमरक पूरा जंगल वला भागे सिमरिया कहबैत छल। एही प्राचीन घाटक लेल महाकवि विद्यापति सेहो विदा भेल छलाह, जनिक देहावसान गंगातट पर भेल। वर्तमानमे विद्यापति नगर ओकरे स्मारक थीक।

जतेक दिन धरि लोक पयरें गंगातट धरि पहुँचैत छलाह, ओतेक दिन चौमथ घाट एहि क्षेत्रक तीर्थ बनल रहल। 1874ई.मे जखनि दरभंगासँ रेलवे सुविधा भेलैक, तखन चौमथ घाट सिमरिया गाममे आबि गेल, जतए बरौनीसँ फेरी सर्विस माने घटही गाड़ी चलैत छलैक। ई रूपनगर गाम कहबैत रहैक। यातायातक सुविधा भेलाक कारणें घाट एतए बसल। बादमे जखन राजेन्द्रपुल चालू भेल आ जहाज घाट उजड़ि गेल तँ ओ तीर्थ घुसकि कए वर्तमान स्थान पर आबि गेल। पुरनके पंडा एतहुए यजमानकँ सभ धार्मिक कृत्य कराबए लगलाह।

हमर पिता पं. अमरनाथ झा सिमरियाक श्रीहरिगंगा तंत्रलता संस्कृत उच्च विद्यालयक स्थापना कालहिसँ रहि ओकर प्रथम प्रधानाध्यापक सेहो भेलाह तँ सिमरियाक एहि घाटसँ हमरा बच्चे सँ लगाब रहल। हमर बचपन एही रूप नगरमे ठाकुरबाड़ीक कातमे बीतल अछि, जाहि परिसरमे विद्यालयक स्थापना केनिहारि सरिसब गामक तंत्रलता ओझाइन माने दाइजी रहैत रहथि। संगहि 1995सँ 98 धरि हम मोकामामे शिक्षक रहलहुँ तँ मासमे दू दिन अवश्य एहि घाट पर जाइत रही आ अनेक पूर्व परिचित पंडा सभक संग दिन बिताबी। पं. शिवजी झा, कार्तिकेय झा आदि रहथि। हुनकालोकनिक समयमे बहुत सीमा धरि घाटक मर्यादा बनल रहल। ओलोकनि पंडित छलाह तँ उच्चारणो शुद्ध रहनि। आब ओ बुढ़ालोकनिक पीढ़ी नहि अछि।

वर्तमानमे गंगाक ई घाट अनेक प्रकारें महत्त्वपूर्ण अछि। उपर्युक्त क्षेत्रक मैथिल अपन घरमे व्यवहार करबाक लेल गंगाजल एतहिसँ अनैत छथि। किनको मृत्यु भेलापर एही घाट पर अस्थि-प्रवाह कएल जाइत अछि आ एतहिसँ जल, बालु आ गंगौट अबैत अछि, तखनि श्राद्धकर्म होइत अछि। ई एकटा महत्त्वपूर्ण विधान थीक, जकर प्रयोजन हिन्दूक सभ जातिकँ होइत छनि। अपरपात भेला पर माने कम अवस्थामे लोकक मृत्यु भेला पर अथवा आर्थिक स्थिति नीक नै रहला पर एही घाट पर श्राद्धकर्म सेहो होइत अछि। एतए गंगापुत्रे उद्धार करैत छथिन। पतिक मृत्यु भेलापर विधवाकँ एतए स्नान कए अपन सोहागक वस्तु गंगामे परित्याग करबाक सेहो परंपरा रहलैक अछि। बहुतो गोटे दाह-संस्कारक लेल सेहो एतए जाइत छथि। एहि प्रकारें एहि तार्थक प्रयोजन सभकँ नीक-बेजाय सभ परिस्थितिमे अछि।

एतएसँ जल बोझि कए विभिन्न शिवमन्दिरमे गंगाजल चढ़एबाक सेहो परिपाटी रहलैए। विशेष रूपसँ शिवरातिक अवसर पर ई देखल जा सकैत अछि। हुनकालोकनिकँ घाट पर जल बोझबा कालक धार्मिक कृत्य करबामे सेहो असुविधा होइत छनि जकर सूचना एही ठामक पंडा दैत छथि।

एतए कार्तिक मासक कल्पवास महत्त्वपूर्ण अछि। पहिने एकर व्यवस्था पंडालोकनि कए दैत रहथि। कुटी बनएबासँ लए हुनकालोकनिक

भोजनादिक व्यवस्थामे सेहो आर्थिक स्थितिक सहयोग करैत रहथिन्ह। आब हिनकालोकनिक व्यवहार एकदम बदलि रहल अछि। एक शब्दमे कहल जाए तँ एहिठाम आब धार्मिक वातावरण लुप्त भए गेल अछि, केवल आर्थिक दोहन कएल जाइत छैक। पंडालोकनि मेसँ अधिक आब हिन्दिए छँटैत भेटताह। ई नीक भविष्यक संकेत नहि थीक। एहन वातावरणकेँ सुधारब मैथिलक लेल आवश्यक अछि, नहिं तँ अपन सामाजिक आ धार्मिक दायित्वक निर्वाह करबामे बहुतो गोटेकेँ बाधा होएतनि। जिनका लग धन छनि ओ काशी, प्रयाग, हरिद्वार जाए गंगाकातक कृत्य कए लेताह, मुदा जे गरीब छथि, हुनका लेल समस्या विकराल भेल जा रहल अछि। एखनहुँ राजेन्द्र पुल पर भिनसुरका ट्रेनसँ उतरनिहार महिला आ पुरुष तीर्थयात्रीक भीड़ देखल जा सकैत छैक। ओ लोकनि निम्न आर्थिक स्तरक लोक भेटताह। हुनका लेल सिमरियाक सर्वाधिक महत्त्व अछि।

पंडासभ यजमानकेँ अनेक प्रकारें ठकबाक काज करैत छथि जे हमही अहाँक पंडा छी। अधिकांश यजमानकेँ ई बुझलो नै रहैत छनि जे हमर पंडा के छथि? राजेन्द्र पुल स्टेशनेसँ पंडा स्वयं वा हुनका द्वारा नियुक्त दलाल यजमानकेँ अपना दिस घिचबाक प्रयासमे लागल रहैत छथि। सीढ़ीसँ उतरैत देरी किछु बाहुबली पंडा तँ अशोभनीय व्यवहार करए लगैत छथिन जे असहज भए जाइत अछि। जे पंडा नीक लोक छथि, धार्मिक छथि अथवा बूढ़ भए गेल छथि ओ बैसले रहि जाइत छथि आ बाहुबली हुनक यजमान पुजाए हुनकासँ दक्षिणा लए लैत छथि। ई दूनू स्थिति घाटक गरिमाकेँ घटबैत अछि।

एतए पंडालोकनिक जे समस्या सभ छनि ओहू पर जिला प्रशासनकेँ आ मैथिल यजमानकेँ ध्यान देबाक चाहियनि, जकरा लेल आपसी वार्ता कएल जा सकैत छैक। मुदा कोनो स्थितिमे तीर्थक जे गरिमा छैक, ओहिमे कोनो हानि नै होएबाक चाही। पंडालोकनिकेँ एहिठामक पुरान परम्पराकेँ संरक्षित करबाक चाहियनि जाहिसँ ई एकटा तपोभूमि बनल रहए, कोनो पिकनिक स्थल नहि बनि जाए। संगहि प्रत्येक स्थलक जे आर्थिक स्तर होइत छैक ओ एतए बढाओल जाएत तँ मिथिलाक अधिकांश जनता एहि तीर्थसँ वंचित रहि जाएत। माने आवश्यक अछि जे एहि तीर्थस्थलकेँ अधिक खर्चीला नै बनाओल जाए।

एतए आवश्यक अछि जे पंडा कर्मकाण्डमे योग्य होथि। शुद्ध-शुद्ध संकल्प कराबथि। एहि तीर्थ पर मिथिलाक धार्मिक परम्पराक रक्षा सेहो हुनके दायित्व बनैत छनि। गंगाकातक जाहि कृत्यसभक संकल्प-वाक्य लिखबाक आवश्यकता महाकवि विद्यापति सेहो अनुभव कएने रहथि आ तें महारानी विश्वास देवीक 'गंगावाक्यावली' सनक ग्रन्थक संशोधन ओ अपना हाथें कएने छलाह, ओहि संकल्प-वाक्यकेँ बिसरब मिथिलाक लोकक लेल शोभनीय नहि अछि। पंडालोकनि जेना-तेना किछु पढ़ाए संकल्प कराए देताह से उचित नहि थीक। तँ एखनि आवश्यकता अछि जे 'गंगावाक्यावली'सँ संकल्प-वाक्य संकलित कए एकटा छोट-छिन पुस्तिका छपाओल जाए आ ओकर उपयोग पंडालोकनि दृढतापूर्वक करथि। हमरा कहल जाएत तँ गंगावाक्यावलीसँ उपयोगी मंत्रक संकलन कए हम डिजिटल कापी बनाए सकैत छी। एहिमे सभ अवसरक लेल अलग-अलग संकल्प लिखल रहत। पढ़ल-लिखल यजमानक हाथमे सेहो जँ ओ पोथी रहत तँ पंडाजी अशुद्ध संकल्प नै करौताह। एहिसँ धार्मिक कृत्यक मर्यादा बनल रहत। आब यजमान सेहो शिक्षित छथि, जकर उपयोग एतहु भए सकत।

एतए आवश्यक अछि जे मिथिलाक कोनो मजबूत संस्था प्रशासनक सहयोगसँ एकटा सभा कए पंडा आ हुनक जजमनिका वला गामक घोषणापत्र जमा कराबए आ ओकरा एकटा बेवसाइट बनाए



सिमरिया घाटक विहंगम दृश्य



पंडाक नाम आ फोटोक संग प्रकाशित करए। जनिका जेबाक होएतनि से अपन गामक आधार पर पंडाक नाम देखि लेताह आ उचित व्यक्ति धरि पहुँचि जेताह।

एहिठाम ई बुझबाक थीक जे सिमरियामे सेहो तीर्थयात्रीक पंजी रखबाक परम्परा छनि। एतए पुरना बही पर अहाँ अपन पंडा लग अपन पूर्वजक नाम आ हुनक हस्ताक्षर देखि सकैत छी। हम स्वयं पं. शिवजी झाक ओतए हुनक बही पर अपन चारि पीढ़ी पूर्वजक हस्ताक्षर देखने छी। ओ चौमथ घाट पर आएल रहथि। आब ओ बही अछि कि नै, से नहि कहि। हुनक देहान्त भए गेल आ सुनैत छी जे ओ अपन बही कोनो दोसर व्यक्तिक हाथेँ बेचि देने रहथि। सिमरियाक पंडासभक लग मैथिलक तीर्थयात्राक पंजी हमरालोकनिक लेल महत्त्वपूर्ण अछि। ई इतिहासक एकटा स्रोत थीक। ई पुरान पंजी सभ कोन स्थितिमे अछि, तकर कोनो ठेकान नहि। एहेन पुरान पंजी सभक अन्वेषण कए ओकर संरक्षणक उपाय कएल जाए। एहन सभटा पंजी हुनका सँ संकलित कए कोनो संग्रहालयमे राखल जा सकैत छैक अथवा ओकर डिजिटल कापीक संग्रह कए अपन पूर्वजक इतिहास सुरक्षित कएल जा सकतै छैक।

आइसँ तीस वर्ष पहिने धरि देखल अछि जे एहि ठामक अपन पंडासँ भेंट भेला पर तीर्थयात्री सभ प्रकारें निश्चिन्त भए जाइत छलाह। ओ सभ प्रकारेँ सहायक होइत रहथि। एतेक धरि जे विदा होएबाक काल यथासाध्य दक्षिणा लेलाक बाद पंडा औपचारिक रूपसँ पुछैत रहथिन जे अहाँकेँ जँ तत्काल मासुल सभक लेल रुपया कम रहए तँ ई राखि लियऽ, गाम पर जाए हमर दक्षिणा पठाए देब। एहिसँ पंडा आ यजमानक बीच एकटा आस्थापूर्ण नैतिक संबन्ध बनैत रहए आ यजमान सेहो हुनका अपन लोक बुझैत रहथि। आब ई परम्परा अछि वा नै तकर सूचना हमरा नै अछि।

सिमरिया घाटक एकटा आर परम्परा छल। अपन पंडा अगहनमे जजमनिका घुमैत रहथि। एक गाममे कोनो सुभ्यस्त यजमानक ओतए डेरा देथि आ भरि दिन ओकर चारूकातक गाममे घुमथि। सिमरियाक प्रसादक रूपमे एकटा छोट सीसीमे गंगाजल सभक लेल लए जाथि। यजमानसभ हिनक स्वागत-सत्कार करथि आ दक्षिणा सेहो देथि। अपन जजमनिकासँ नीक आमदनी होइत छलनि। हमरहु घरपर आइसँ 40 साल पहिने धरि सब साल नियमित रूपसँ पंडाजी अबैत छलाह आ एक दिन रहैत छलाह। सभ यजमान चाहथि जे पंडीजी हमरे घर पर रहथि। ई लोक सभक मोनमे सिमरिया घाटक प्रति गंगाक प्रति आस्था बढ़बैत छल। आब ई परम्परा समाप्त भए गेल अछि।

अंतमे, हम ई मानैत छी जे एतए सुधारक कोनो काज कठिन अछि, मुदा आशावादी छी तँ असम्भव नहि कहबाक चाही। जिला प्रशासनक सहयोगसँ पंडालोकनिकेँ बुझाकए, किछु भय देखा कए, अपेक्षित सुधार आनल जा सकैत छै। तीर्थयात्री यजमान जँ जागरूक हेताह तँ पंडाकेँ सेहो सुधरए पड़तनि, एतबे टा आशा अछि। एहिठामक अव्यवस्थाक कारणेँ जँ मैथिललोकनि एहि घाट पर जाएब छोड़ि देताह तँ ओ अपूरणीय क्षति कहाओत। तँ आइ आवश्यकता अछि जे मैथिललोकनि एहि दिस ध्यान देथि।

जय गंगे।।

संपर्क : संप्रति सम्पादक 'धर्मायण', महावीर मन्दिर, पटना

खुशखबरी **खुशखबरी** **खुशखबरी**

फेर सँ छपि रहल अछि
अहांक, हमर आ हमरा सभक
अपन अखबार 'मिथिला आवाज'
नव अंदाज आ नव कलेवर मे
त फेर सँ चाही अहाँक प्यार आ दुलार
आउ फेर सँ बनाबी 'मिथिला आवाज'कें
मिथिलाक आन बान आ शान
आ समस्त मैथिलक अपन आवाज

अहाँक अपन आ मिथिलाक पहिल आ सर्वाधिक लोकप्रिय दैनिक **'मिथिला आवाज'** क प्रकाशन फेर सँ होमय जा रहल अछि। मुदा एहि बेर दैनिक नहि भ' क' **'मिथिला आवाज'** पाक्षिक अखबार रहत। जेना अपने सभ **'मिथिला आवाज'** दैनिक अखबार केँ अपन प्रेम आ सहयोग देने रही तहिना एहि बेर सेहो **'मिथिला आवाज'** पाक्षिक अखबार केँ अहाँ सभक प्रेम आ सहयोग चाही।

आउ सबसँ सस्ता दर पर मिथिलाक सर्वाधिक लोकप्रिय अखबार **'मिथिला आवाज'** मे अपन विज्ञापन छपाबू। विज्ञापनक रेट निम्नांकित अछि।

विज्ञापनक प्रकार दर		
कलर फुल पेज विज्ञापन (फ्रंट पेज)	:	75,000 रुपया
कलर फुल पेज विज्ञापन (बैक पेज)	:	50,000 रुपया
कलर फुल पेज जैकेट विज्ञापन	:	1,00000 रुपया
कलर हाफ पेज विज्ञापन (फ्रंट पेज)	:	25,000 रुपया
कलर क्वार्टर पेज विज्ञापन (फ्रंट पेज)	:	10,000 रुपया
ब्लैक एंड विज्ञापन फुल पेज (अंदरक पन्ना)	:	25,000 रुपया
ब्लैक एंड विज्ञापन हाफ (अंदरक पन्ना)	:	15,000 रुपया
ब्लैक एंड व्हाइट क्वार्टर पेज (अंदरक पन्ना)	:	5,000 रुपया
क्लासीफाइड विज्ञापन रेट	:	500 रुपया प्रति विज्ञापन

नोट : विज्ञापन, प्रसार (सर्कुलेशन) आ डिस्ट्रीब्यूशन लेल कृपया निम्नांकित नंबर पर संपर्क करी।

विज्ञापन आ प्रसार प्रबंधक : प्रेमशंकर झा 'पवन'
मोबाइल नंबर : 9818697716
ई-मेल : mithilamilan9@gmail.com

शक्ति रुपेण संस्थिता

विंटर स्पेशलः दुल्हनक स्पेशल केश विन्यास आ श्रृंगार

कोनो भी लड़की लेल ओकर शादीक दिन ओकर जिंदगीक सबसँ पैघ दिन होइत छै। कियैक त' ओहि दिन ओकरा सबसँ खूबसूरत दिखबाक लालसा रहैत छै। दुल्हनक शृंगार मे खूबसूरत केशक सबसँ बेसी योगदान रहैत छै। अगर अहां सेहो जाड़क एहि मौसम मे शादीक बंधन मे बंधे वला छी आ केशक समस्या सँ परेशान रहैत छी तँ अपन केश कँ ज्यादा आकर्षक, हेल्दी आ चमकदार बनाबे लेल अहां के एहि खास टिप्स आ बातक ख्याल राखे पड़त।

1. शादीक किछु समय सँ पहिने सँ भावी दुल्हन नर्वस भ' जाइत अछि। ओकरा टेंशन से होबय लगै छै। टेंशन आ स्ट्रैस लेबा सँ हेयर फॉल अर्थात केश झड़बाक समस्या शुरू होबय लागैत छै आ स्कैल्प सेहो कमजोर भ' जाइत छै। ऐना मे स्ट्रेस आ टेंशन कम करबाक उपाय करबाक चाही। मॉर्निंग वॉक पर नियमित जाय आ एक्सरसाइज सेहो करी।

2. शादीक शॉपिंग लेल भावी दुल्हन कँ अक्सर बाहर जाइ पड़ैत अछि। जाहि सँ धूल आ प्रदूषण सँ बाल कमजोर आ डैमेज होबय लागैत अछि। एहि के अलावा देर धरि धूप मे रहबा सँ सेहो बाल सँ नमी चलि जाइत अछि। एहि के संग-संग हेयर फॉल के संग-संग आन समस्या सभ सेहो होबय लगैत अछि। ताहि कारणे भावी दुल्हन कँ विवाह सँ एक महीना पहिने सँ तेज धूप मे बाहर नहि निकलबाक चाही। जँ निकलनाइ बहुत जरुरी अछि त' माथ पर स्कार्फ बांधि क' निकलबाक चाही।

3. शादीक दिन आ ओहि सँ पहिने सेहो कतेक रास विध-बाध आ रश्म सभ होइत छै। एहि दौरान दुल्हन कँ तरह-तरहक हेयर स्टाइल बनाबै पड़ैत छै। हेयर स्टाइलिंगक लेल इस्तेमाल होमय वला हेयर ड्रायर, हॉट रोलर्स, फ्लैट आयरन आ कर्लिंग टौंग्सक इस्तेमाल सँ सेहो केश डैमेज भ' जाइत अछि। बेर-बेर कलर ट्रीटमेंट सँ सेहो केश पर खराब असर पड़ैत छै। कियैक तँ एहि मे मौजूद कैमिकल्स केश कँ नुकसान पहुँचाबैत छै। लिहाजा भावी दुल्हन के चाही जे ओ हेयरस्टाइलिंग टूल्स के इस्तेमाल कम स कम करबाक चाही। अहां कोनो भी तरहक हेयरस्टाइलिंग टूल्स कँ लगाबे सँ पहिने और्गन औयल सेहो लगा सकैत छी जे एकटा नीक हेयर सीरमक काज करैत अछि। ई हीट प्रोटैक्टैंटक जकां काम करैत छै, केश कँ अनावश्यक नुकसान सँ बचाबैत अछि।

4. अपन बॉडी के हमेशा हाइड्रेट सेहो रखबाक चाही। एहि सँ बाल हेल्दी आ मजबूत रहैत अछि। बेसी मात्रा मे नियमित पानी पीयैत रहबाक चाही।



5. केश मे नमी हमेशा बनल रहय ओहि लेल डीप कंडीशनिंग ट्रीटमैंट आ हेयर फॉल सँ बचबाक लेल भावी दुल्हन कँ ऐंटीब्रोकरेज ट्रीटमैंट लैत रहबाक चाही।

6. केशक सेहतक सीधा संबंध हमर खान पान सँ होइत अछि। मजबूत आ स्वस्थ बालक लेल विटामिन बी12, ओमेगा 3 फैटी एसिड्स आ जिंकक भरपूर मात्रा अहांक डाइट मे होबाक चाही। जिंक सँ असमय केश मे सफेदी नहि आबैत अछि, आ केशक झड़ब सेहो रुकैत अछि। शरीर मे टॉक्सिन के बाहर निकालबाक लेल ज्यादा स' ज्यादा पानीक सेवन जरूरी अछि। ई केश आ स्कैल्प कँ हाइड्रेटेड राखय मे मदति करैत अछि। अधिक मात्रा मे फल खाइत रहबाक चाही कियैत त' एहि सँ केश कँ विटामिन आ अन्य आवश्यक पोषक तत्व सँ भरपूर रहैत छै।

7. केश के सुखाबै के लेल ड्रायरक इस्तेमाल कम से कम करबाक चाही। ओकरा नेचुरल रुप सँ सूखायब ठीक होइत छै। तौलियाक मदद सँ या धूप मे बैठ क' कनी देर सेहो बाल सुखायबाक आसान आ सबसँ नीक तरीका होइत अछि। हेयर ड्रायरक इस्तेमाल सँ केश कँ सुखायब तँ ओहि सँ पहिने केश पर सीरम जरूर लगेबाक चाही।

❑ **मिथिला मिलन डेस्क**

सतरंग

मिथिलाक गामक लड़कीक संघर्ष गाथा थिक फिल्म 'बबितिया'



रजनीश कुमार झा

मैथिली फिल्म बबितिया दोसर सप्ताह मे प्रवेश क' गेल अछि। कोनो फिल्मक सफलताक आकलन एहि सँ आंकल जाइत अछि जे फिल्म कतेक दिन, कतेक हफ्ता चलल। एहि हिसाब सँ देखी त' बबितिया फिल्म अपन सफलताक झंडा गाड़ि देने अछि।

फिल्म बबितियाक कहानी दादीक (प्रेमलता मिश्र 'प्रेम') कहानी थिक। जिनहक एकमात्र चिंता अछि जे बिन मां-बापक हुनक पोती बबितिया (जे मैट्रिक पास क चुकल छथि) के बियाह केना हैते। एहि लेल दादी कतेक लोकक दुआरि पर जा गुहार लगा चुकल छथिन। ओहिठाम बबितिया अपन सीमित संसाधन मे हमेशा खुश रहय वला लड़की अछि। ओ पढय चाहैत छै आ जीवन मे कुछ बनय लेल चाहैत छै। बबितियाक एहि सपना आ इच्छा के पूरा करबा मे मददगार बनैत अछि निशांत. निशांत (अनिल मिश्र) फिल्म मे कविक भूमिका मे छथि आ ओ घर सँ सुखी संपन्न छथि। निशांतक मन हमेशा कविता लिखबा मे मगन रहैत छै। बबितिया के ख्वाब के पंख तखनि लगैत छै जखन ओकर चचा ओकरा एंड्रॉयड स्मार्ट फोन गिफ्ट करैत छै। आ ठीक ओहि समय एकटा जुबक बलान (फिल्म के नायक) जे पटना मे टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियरक काज करैत छै आ निशांतक संबंधी सेहो छथि, ओकरा सँ बबितियाक मुलाकात होइत छै। ओ जुबक बलान बबितिया कँ मोबाइलक पढ़ाई लेल प्रेरित करैत छै आ संगहि बबितिया के विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा मे फॉर्म भरय स' ल' क' परीक्षा देबा धरि मदति करैत छै।

अपन सीमित संसाधन मे केना गामक लोक सभक ताना सुनै के बादो केना अपन संघर्ष पथ पर आगु बढ़ैत छथिन तकरे कथा थिक फिल्म 'बबितिया'। सुनील कुमार झाक निर्देशन बहुत नीक आ संतुलित छनि। फिल्म कतो स' खीचैत, सीरियस वा दर्शक पर बोझ बनैत नहि नजर आबैत छै। फिल्मक शुरुआत हास्यक बीच बहुत रुमानी आ साहित्यिक अंदाज मे होइत छै। फिल्मक निर्देशक खुद साहित्यकार छथि ताहि कारणे फिल्मक ट्रीटमेंट पर साहित्य के प्रभाव देखाई पड़ैत छै। फिल्म मे हर पंद्रह-बीस मिनट मे कोनो न कोनो हंसी ठहाका वला सीन दर्शक कँ जरुर भेटि जाइत छै। फिल्मक संवाद मे कोनो



खास मानक के ध्यान नहि राखल गेल अछि। फिल्मक संवाद कँ सर्वहारा वर्गक बोली सेहो कहि सकैत छी। हांलांकि फिल्म मे एहेन कोनो संवाद नहि अछि जे दर्शक याद राखि सकैत अछि। एक्टिंग मे अपन हिसाब सँ सभ पात्र अच्छा अभिनय कयने छथि। ओना सच कहल जाइ त' फिल्मक पूरा दारोमदार प्रेमलता मिश्र प्रेमक कंधा पर छै आ ओ अपन अभिनय सँ किनको निराश नहि कयने छथिन। अपन इंप्रोवाईजेसन सँ ओ फिल्म पर खास छाप छोड़ने छथिन आ संगहि डायलॉग्स डेलिवरी सेहो शानदार अछि। फिल्म मे साक्षी गामक अल्हड़ कन्याक रुप मे अच्छा लगैत छथिन। हुनक संवाद अदायगी सेहो अलग आ सुंदर छनि। नायक आ सहनायकक संग हुनक केमिस्ट्री बिल्कुल नेचुरल लगैत अछि। साक्षीक छोट-छोट मोंटाज यादगार बनि गेल अछि। स्टोरी ओकरे जरिये आगु बढ़ैत जाइत छै।

नायक के ई पहिल फिल्म अछि। नायक एकटा इंजीनियर आ मासूम प्रेमीक रूप मे अद्‌भुत काम कयने छथिन। आ दुनूक बीच गजब के बैलेंस सेहो बनल अछि। एकटा एक्टरक रूप मे बहुत रास संभावना अछि नायक मे। फिल्मक अंत धरि अपन प्रभाव छोडबा मे कामयाब भेल अछि नायक। अनिल मिश्र अपन काम आ एक्टिंग के बखूबी अंजाम देने छथिन। आ सब कलाकार अपन-अपन जगह बखूबी मेहनत सेहो कयने छथिन। फिल्मक संगीत कर्णप्रिय अछि। पं उदय शंकर मिश्र जी बतौर संगीतकार धुन अच्छा बनाबैत छथिन। कोनो घरानाक संगीतकारक ई खासियत रहैत छै फिल्मक संगीत आ धुन एकटा खास लय मे बजैत छथि। फिल्मक गीत क बोल सेहो नीक अछि। अजीत आजादक मेहनत सेहो फिल्म मे दिखैत छै। कुल मिला क' 'बबितिया' एकटा एहन फिल्म अछि जे मैथिलक धिया आ बेटीक सच कँ सामने लाबैत अछि।

कुल ढाई घंटाक ई फिल्म जरुर देखबाक चाही। एहि तरहक फिल्म जरूर बनबाक चाह जकरा पूरा परिवारक लोग संग मे बैठ क' देखि सकैत अछि। 'बबितिया' जेहन फिल्म एकटा उदाहरण मात्र थिक जे केना एकटा अकेला लड़की गाम मे रहितो अपन लक्ष्य कँ प्राप्त करैत छनि आ जकर फायदा आबय वला पीढ़ी धरि उठाबैत छथि। पढबाक आ सीखबाक कोनो उम्र नहि होइत अछि आ समाज मे ताना कसबाक सेहो कोनो सीमा नहि होइत छै। मैथिल समाज के एहि दुनू के बीच कँ अंतर कँ समझबाक जरूरति अछि। 'बबितिया' करैक्टर हमरा सभ कँ सिखाबैत छथि जे गाम मे रहि क' पढाई करय मे दिक्कत जरूर छै मुदा अपन बुद्धि-विवेक के दम पर कतो स अपन लक्ष्य के भेदल जा सकैत छै।





कियैक मैथिली मे बढ़ि रहल अछि रचनात्मक असहयोग?

आ अंत मे

सतीश वर्मा

> “ मैथिली मे कहियो रचनात्मक असहयोगक कोनो चर्चा हम नहि सुनने छी। मुदा ई जरूर सुनने छी जे मैथिली मे वरिष्ठ वा कही त' सीनियर लेखक अपन रचना पठेबा मे आ कोनो विषय पर लेख लिखबा मे बहुत खुशामद कयलाक बाद रचना भेजैत अछि। ”

बड्ड मशक्कतक बाद 'मिथिला मिलन' पत्रिकाक प्रवेशांक बहरा रहल अछि। कहल जाइत छै न जे बड्ड बेलना बेलय पड़ल त' बुझियो जे हमरो खूब बेलना बेलय पड़लै तखन जा क' पत्रिकाक पहिल अंकक प्रकाशन संभव भेल। एहि स पूर्व हमर धारणा छल जे हमरा त' अनेरो रचना आ लेख सभक ढेर भ' जतै। मैथिली मे छपासक रोग बड्ड संक्रामक छै। मुदा से हम गलत छलियै। 'मिथिला मिलन' पत्रिकाक प्रकाशनक दौरान पत्रिका लेल रचना आ लेख सभक जोगाड़ करय मे जे हमरा अनुभव भेल ओकर आधार पर हम बिना कोनो संकोच के ई कहि सकैत छी जे मैथिली लेखक समाज आ समस्त मैथिल समाज मे अपन भाषा, अपन साहित्य के संवर्धन आ उन्नयनकक प्रति जे अभियानी उत्साह देखाई पड़ैत छै ओ दरअसल उपरी-झापड़ी देखाबा मात्र छै। सत्य त' ई अछि जे अधिकांश मैथिली लेखक आ मैथिल समाज अखनिहुँ भाषा आ साहित्यक संवर्धन, प्रचार-प्रसारक प्रति असहयोगेक भावना देखाबै छथिन। ई अनुभव हमरो 'मिथिला मिलन' पत्रिकाक प्रकाशन दौरान भेल। जाहि स्तर पर हम मैथिली लेखक आ मैथिल समाज सँ सहयोग कँ उम्मीद राखने छलहुँ तकर चारियो आना हमरा नहि भेटल।

'मिथिला मिलन' पत्रिकाक लेल बहुत गोटे कँ विभिन्न स्तंभ आ विषय लेल लेख लिखबाक लेल आग्रह कयने छलहुँ, मुदा अधिकांश गोटे नहि पठेलाह। हँ, किछु गोटे अपने मने बहुत पहिने अपन कविता, कथा आ लेख सेहो पठेलाह। हुनका प्रति हम अपन आभार प्रकट करैत छियै। मुदा हम जे अपन संपादकीय मानदंडक अनुरुप आ विभिन्न स्तंभक लेल जे लेख चाहैत रही से हमरा पत्रिका प्रकाशन भेलाक बाद धरि नहि भेटल। एहि लेल हम गहन निराशा मे छी। संभवत: हमरा लगैत अछि जे बहुत गोटेक मन मे ई आशंका हैत जे पत्रिका निकलतै की नहि? हुनक आशंका वाजिब सेहो छै। कियैक त' मैथिली मे पत्रिका भविष्य क' ल' क' एहेन अनिश्चितताक परंपराक नींव पहने पड़ि गेल अछि। कतेक पत्रिकाक घोषणा भेल मुदा ओकर प्रकाशन संभव नहि भ' सकल। कतेक पत्रिकाक प्रकाशन एक-दू अंकक बाद बंद भ'गेल। ताहि कारणे मैथिल सभक आशंका वाजिब। मुदा एकर मतलब ई कदापि नहि होबाक चाही जे नव पत्रिका कँ प्रोत्साहित करबाक बदला हतोत्साहित कयल जाय। मैथिली मे कहियो रचनात्मक असहयोगक कोनो चर्चा हम नहि सुनने छी। मुदा ई जरूर सुनने छी जे मैथिली मे वरिष्ठ वा कही त' सीनियर लेखक कनी अपन रचना पठेबा मे आ कोनो विषय पर कोनो लेख लिखेबाक लेल बहुत खुशामद कयलाक बादे रचना भेटैत अछि। जखन की आन भाषा मे एहेन आलस्य अथवा असहयोगक बात नहि छै।

खैर... हमरा बड्ड अफसोस अछि जे अपन पूर्व घोषणाक मोताबिक पत्रिकाक प्रवेशांक मे किछु स्थायी स्तंभ नहि जा रहल अछि। जेना की 'नेपाल डायरी' के बारे मे हम घोषणा कयने रही जे पत्रिकाक ई स्थायी स्तंभ रहत। मुदा नेपाल सँ कियो मैथिल लेखक हमरा 'नेपाल डायरी'नहि पठौलनि। ओनाहिते पत्रिकाक स्थायी स्तंभ'लोकवेद' लेल हम दू तीन टा मैथिली लेखक सँ लेख भेजबा लेल गुहार लगौने छलिये मुदा अंत धरि कियो नहि पठौलनि। अंत मे हमरा बड्ड प्रसन्नता भेल जे किशन कारीगर अपन एकटा लेख जे नटुआ नाच पर आधारित छै से पठौलेनि से एहि अंक मे जा रहल अछि। ओना हम लोकवेद स्तंभ लेल अपन संपादकीय मापदंड आ जरुरति अहां सभ गोटे कँ सोझां स्पष्ट करय चाहैत छी जे हमरा एहि स्तंभ लेल 'राजा सलहेस', 'लोरिक मनियार', 'दीनाभद्री', 'ब्रहमक थान', 'भगैत' अथवा मिथिलाक आन-आन लोक देवता, ग्राम देवता पर शोधपरक रिपोर्टक जरुरति अछि। एकटा आउर जरूरी स्थायी स्तंभक हम घोषणा कयने रहीं'गाम घर'। एहि मे पत्रिका कँ मिथिलाक चर्चित ऐतिहासिक गाम जेना सौराठ, सरिसबपाही, महिषी समेत आनो बहुत रास गाम अछि जिनकर ऐतिहासिक-सांस्कृतिक आ साहित्यिक महत्व छै तकरा पर शोधपरक आलेख के जरूरति छल। जाहिर छै जे सभक मन मे ई आशंका हैत जे पत्रिका छपते आ की नहि छपते? अथवा ई सेहो हुनका सभ कँ मन मे भ' सकैत अछि जे ऐना केना कोनो नव पत्रिका कँ लेख पठा दी जकर कोनो भविष्ये नहि। पहिने पत्रिका छपि जाइत तखन देखल जाइत। त'हुनका सभ कँ हम कहै लेल चाहैत छी जे देखियो पत्रिका छपि गैले। की आगां अहां सभक सहयोग रहतै अथवा ओहिना असहयोग बनल रहतै!

हमरा ई घोषणा करैत बहुत प्रसन्नता भ' रहल अछि जें'मिथिला आवाज' दैनिक समाचार पत्र जे पहिने दरभंगा सँ प्रकाशित होयत छल ओकर पुन: प्रकाशन फेर सँ फरवरी मास सँ भ' रहल अछि। मुदा एहि बेर 'मिथिला आवाज' दैनिक समाचार पत्र नहि भ' क' पाक्षिक समाचार पत्र के रुप मे महीना मे दू बेर बहरायत। आशा अछि जे जेना 'मिथिला आवाज' दैनिक कँ पाठक आ बाजारक पूरा प्रेम आ सहयोग भेटल छलै तहिना पाक्षिक समाचार पत्र के सेहो भेटत। 'मिथिला आवाज'पाक्षिक अखबार ओना त' पूर्णरुपेण समाचार आधारित रहत मुदा एहि मे किछु स्थायी स्तंभ आ साहित्य लेल सेहो पृष्ठ देल जायत। एकर प्रारुप के बारे मे शीघ्रहि सोशल मीडियाक माध्यमे सूचित कयल जायत।'मिथिला आवाज' पाक्षिक अखबारक वेबसाइट संस्करण सेहो निकालबाक योजना अछि। हम फेर सँ मैथिलीक तमाम लेखक समाज सँ अपील आ गुजारिश करय चाहैत छी 'मिथिला आवाज' पाक्षिक अखबार लेल हमरा अहांक भरपूर रचनात्मक सहयोग चाही। हमरा कम से कम दस गोटे एहेन लेखक (पैनल लेखक) परमानेंट रूप सँ अपन पैनल मे चाही जे 'मिथिला आवाज' अखबार आ 'मिथिला मिलन' पत्रिकाक स्थायी स्तंभ आ कवर स्टोरी लिख पत्रिका कँ अपन रचनात्मक सहयोग द सकी।

अहां सभ गोटे सँ ई करबद्ध प्रार्थना अछि जे 'मिथिला मिलन' पत्रिकाक प्रवेशांक मे जे त्रुटि भेल अछि से हमरा पठाओल जाई आ कंटेंटक स्तर पर आर की सभ बेहतर भ' सकैत छल सेहो हमरा मेल करल जाई। संगहि 'मिथिला आवाज' पाक्षिक अखबारक प्रारुप केहेन होबाक चाही सेहो लेल अहां सभक सुझाव आमंत्रित अछि। हमर मेल आईडी थिक- mithilamilan9@gmail.com आ satish.verma02@gmail.com

आ अंत मे बस एतबेक कहबाक अछि जे पत्रिका लेल नहि त' कम से कम मैथिली भाषाक अभिवृद्धि आ विस्तार लेल, प्रसार लेल लेखक लोकनि 'मिथिला आवाज' पाक्षिक अखबार आ 'मिथिला मिलन' पत्रिका कँ अपन रचनात्मक सहयोग सहर्ष दी। हम एहि लेल अहांक आभारी रहब।